www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 17 ■ 1-15 जुलाई, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❑ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❑ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❑ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

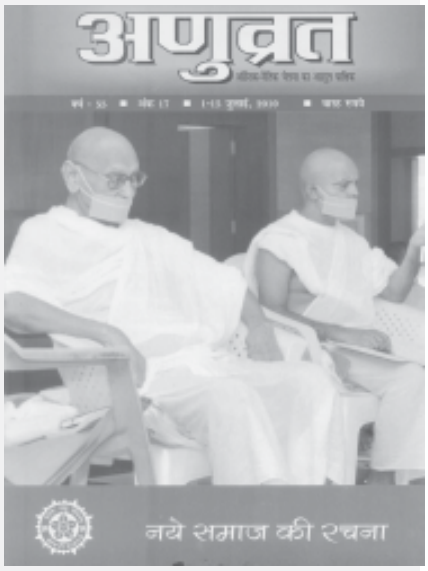

◆ नये समाज की रचना	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ महान् यशस्वी का महाप्रयाण	*भंवरलाल सालेचा*	5
◆ मुझको जगा के दोस्तों, वो खुद ही सो गया	*डॉ. सरोज कुमार वर्मा*	7
◆ जन-मन की आस्था के केन्द्र : महाप्रज्ञ	*साध्वी डॉ. परमयशा*	9
◆ तुमको ना भूल पाएंगे	*सत्यनारायण 'सत्य'*	10
◆ अहिंसा के जीते जागते प्रतीक	*मुनि विनयकुमार 'आलोक'*	12
◆ राष्ट्र चेतना के युग पुरुष	*भजनलाल महोबिया*	13
◆ अध्यात्म-जगत की महान् क्षति	*देवेन्द्र कुमार हिरण*	14
◆ गुरु का आशीर्वाद	*जिनेन्द्र जैन*	16
◆ तब होता है महाप्रज्ञ का जन्म	*साध्वी कनकश्री*	18
◆ स्मृति गीत	*आचार्य महाश्रमण*	20
◆ जय-जय ज्योति चरण	*साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा*	21
◆ निस्पृह व्यक्तित्व : आचार्य महाश्रमण	*विजयराज सुराणा*	22
◆ आचार्य महाश्रमण	*प्रो. हरिशंकर पाण्डेय*	24
◆ ऊर्जा एवं कर्मजा शक्ति के पुंज	*मुनि हर्षलाल*	26
◆ निस्पृह साधक : आचार्य महाश्रमण	*मुनि राकेशकुमार*	27
◆ सरस साहित्य के सृजनकार	*मुनि दीपकुमार*	28

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	6
◆ श्रद्धा सुमन / श्रद्धांजलि	8, 14, 15
◆ कविता	15, 17, 25, 27
◆ पाठकों के स्वर	29
◆ अणुव्रत आंदोलन	31–39
◆ अध्यक्ष की कलम से	40

www.terapanthinfo.com

स्थितप्रज्ञ आत्मा आचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ हमारे मध्य से विदा हो गए। स्थितप्रज्ञता का जीवन जी आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने भीतर देखते हुए जो अनुभव किया उसे अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन में बाँटा। जीवन का मर्म समझाते हुए उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा ''हर व्यक्ति को सच्चाई को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। सच्चाई को समझने के अनेक कोण हैं, अनेक पहलू हैं। उनमें एक पहलू यह है कि संसार को भी समझना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है। सच्चाई शाश्वत भी है और सामयिक भी होती है।'' आचार्य महाप्रज्ञ जीवन भर इस सच्चाई को समझने में लगे रहे। जीवन की यर्थाथता को स्वर देते हुए स्थितप्रज्ञ महाप्रज्ञ ने कहा ''धरती में कोई अंतर नहीं है पर धरती को बाँटने वालों में अंतर अवश्य है। धरती को सीमाओं में बांध दिया है, जातियों और सम्प्रदायों में मनुष्य को बाँट दिया है। इससे मानवीय एकता खंडित हो रही है और हिंसा का यही एक बड़ा कारण है।''

सीमा में बंधती धरती और स्व-स्वार्थ ने न सिर्फ पृथ्वी के लिये खतरा पैदा कर दिया है वरन् 'विश्व एक है' के स्वप्न को भी धराशाही कर दिया है। जातीयता-सम्प्रदायिक भेदभाव एवं गरीबी बंधनों का प्रश्रय रूपी दैत्य आज चारों दिशाओं में पहुँच चुका है और मनुष्य के अस्तित्व को चुनौती देता हुआ विश्व बंधुत्व को नकार रहा है। विश्व बंधुत्व के सिद्धांत को आधार देते हुए करुणामयी आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं ''हम मनुष्य की आकृति, रंग, जाति, सम्प्रदाय, प्रादेशिकता, राष्ट्रीयता, भाषा आदि को देखते समय यह नहीं भूलें कि इन सब आवरणों के पीछे छिपा हुआ एक सत्य है और वह है आत्मा। जैसी आत्मा मुझमें है, वैसी ही आत्मा इस मनुष्य में है, जिसे मैं देख रहा हूं।''

आचार्य महाप्रज्ञ ने हर मनुष्य में आत्मा को देखा और उसका सम्मान किया। गरीब-अमीर, राजनेता-समाजनेता, कार्यकर्त्ता-अधिकारी, हिंसक-अहिंसक, धार्मिक-अधार्मिक, दाता-याचक सभी के मन को समझते हुए उन्होंने न सिर्फ समाज और धर्म को नई परिभाषा दी वरन् चिन्तन की नई दिशाएँ उद्घाटित की। अहिंसा, करुणा, नैतिकता एवं मानवीयता की दिशा में प्रतिबद्ध रहते हुए उन्होंने इन मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठित करने के भगीरथ प्रयास किये ताकि नये समाज और नए मनुष्य का जन्म हो सके। नव समाज निर्माण के अभिक्रम में उन्होंने प्रचलित व्यवस्थाओं को बदलने की बात की तो करुणापुरुष को बहुत कुछ सुनना और सहना भी पड़ा। आलोचनाओं के स्वरों को भी मौन भाव से सुनते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने व्यवस्था परिवर्तन के सिद्धांत को आगे बढ़ाया और कहा ''स्वस्थ व्यक्ति और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है कि वर्षों से चली आ रही अस्वस्थ सामाजिक व्यवस्थाएँ बदलें।''

मानवीय संवेदनाओं के करुणापुंज आचार्य महाप्रज्ञ का 91वां जन्म दिवस और उनकी सदेह अनुपस्थिति हमें इस बात के लिए प्रेरित करे कि अणुव्रत दर्शन के अनुरूप स्वस्थ समाज निर्माण के लिए जिन खोखली सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलना आवश्यक है, उन्हें बदलने में हम सक्षम बनें। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी स्थितप्रज्ञ आत्मा आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

नए समाज की रचना

आचार्य महाप्रज्ञ

इतिहास के आदि काल से मनुष्य विकास की कल्पना करता रहा है। उसमें आगे बढ़ने की मनोवृत्ति रही है। वह जैसा है, उसमें संतोष नहीं है किन्तु कुछ बदलने और नया करने की भावना है। एक मौलिक मनोवृत्ति है 'अकड' करिस्सामि' जो किसी ने नहीं किया, वह मैं करूँगा। इसी मनोवृत्ति ने व्यक्ति को समाज के स्तर पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है और समाज का नव निर्माण चाहता है। वह स्वस्थ समाज की रचना करना चाहता है, शोषण मुक्त या अहिंसक समाज की रचना करना चाहता है।

रुग्ण समाज : स्वस्थ समाज

समाज की दो स्थितियाँ हैं रुग्ण और स्वस्थ समाज। जिस समाज में सामाजिकता और परस्परता नहीं होती, संवेदनशीलता और आश्वासन नहीं होता, वह रुग्ण समाज होता है। जिस समाज में आश्वासन, परस्परता, सामाजिकता और संवेदनशीलता होती है, वह होता है स्वस्थ समाज। कल्पना की गई स्वस्थ समाज का निर्माण करें। इसके निर्माण के लिए ध्यान गया अर्थ-व्यवस्था पर। अगर अर्थ-व्यवस्था समीचीन नहीं है तो समाज स्वस्थ नहीं बनेगा। अर्थ-व्यवस्था के दो पक्ष हैं एक है राज्य नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था। दूसरी है खुली अर्थ-व्यवस्था राज्य के नियंत्रण से मुक्त अर्थ-व्यवस्था। दोनों प्रकार के प्रयोग किए। लोकतंत्र में खुली अर्थ-व्यवस्था रही और साम्यवादी प्रणाली में अर्थ-व्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण किया गया। नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था का कारण था अमीर लोग गरीबों का शोषण न कर सकें।

स्वस्थ समाज रचना के प्रयत्न

वास्तविकता यह है दोनों ही प्रणालियों ने स्वस्थ समाज की रचना कर पाने में सफलता प्राप्त नहीं की। जहाँ राज्य का नियंत्रण है वहाँ व्यक्ति में एक अकर्मण्यता का भाव आया। आगे बढ़ने की जो मनोवृत्ति थी, उस पर प्रभाव पड़ा। जहाँ खुली अर्थ-व्यवस्था थी वहाँ दूसरी स्थिति बनी। इस सचाई को अस्वीकार न करें। दुनिया में जितनी संपदा है, उसके पचास प्रतिशत भाग पर थोड़े से लोगों का आधिपत्य है। यह खुली अर्थ-व्यवस्था का प्रयोग भी स्वस्थ समाज की रचना में सहयोगी नहीं बना और राज्य नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था भी सहयोगी नहीं बनी।

समाजवादी प्रणाली : नई समस्या

समाजवादी प्रणाली में सबसे ज्यादा इस बात पर ध्यान दिया गया गरीबों का शोषण न हो। अमीर और गरीब ये दोनों वर्ग मिटे। यह कल्पना चली तब शासक और शासित ये दो नए वर्ग बन गए। शासक के लिए बहुत सी सुविधाएं और प्रजा के लिए कोई सुविधा नहीं। नई समस्या पैदा हो गई। समाजवादी राष्ट्रों के शासकों का जो चरित्र सामने आया, उससे लगता है सत्ता केन्द्रित होते ही मनुष्य की सुविधावादी मनोवृत्ति प्रबल और निरंकुश हो जाती है। वह सिद्धान्त को समाप्त कर देती है। साम्यवाद की जो कल्पना की गई है, वह कहीं रह गई और शासक स्वयं शोषक बन गया। खुली अर्थ-व्यवस्था की प्रणाली में शोषण चलता ही रहा। कुछेक व्यक्तियों के पास धन केन्द्रित होता गया। शेष व्यक्ति अभावग्रस्त होते चले गए। उस अभाव ने समाज को स्वस्थ और शोषणमुक्त नहीं बनने दिया। हमारे सामने विकल्प क्या है? जिस अर्थ-व्यवस्था पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया, उसने भी प्रवंचना कर दी।

कारण क्या हैं?

हमारा जीवन दो धाराओं में प्रवाहित है वस्तु-जगत और भाव-जगत। मुझे लगता है परिवर्तन के जितने प्रयोग हुए हैं सब वस्तु-जगत को बदलने के लिए हुए हैं। भाव-जगत पर ध्यान ही नहीं दिया गया। केवल यही मान लिया गया, अर्थ-व्यवस्था सुधरी, राजनैतिक प्रणाली बदली और समाज व्यवस्था बदल जाएगी। इस सच्चाई के समझने में हमसे बहुत बड़ी भूल हुई है। सबसे पहले हम निदान करें, समाज बीमारी और शोषण से घिरा हुआ क्यों हैं? कारण क्या है? सही निदान तब होगा जब हम वस्तु-जगत में प्रवेश करेंगे।

अहं की समस्या

निदान का पहला निष्कर्ष होगा अहं की समस्या ने समाज को रुग्ण बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। जितना भी प्रदर्शन चलता है वह अहं के लिए चलता है। व्यक्ति अपने बड़प्पन को दिखाने के लिए प्रदर्शन करता है। जिस मकान में 100 आदमी रह सकें, उतना बड़ा भव्य मकान बनाएंगे पर उसमें रहने वाले होंगे दो-चार आदमी। उस विशाल मकान के पीछे अहं प्रदर्शन की भावना काम कर रही है। एक व्यक्ति ने आठ करोड़ की पोशाक पहनी। वह पोशाक अहं का प्रतिबिम्ब है। समाचार पत्र में पढ़ा एक सन्यास लेने वाले व्यक्ति की पोशाक छियासठ लाख की थी। ये सब किसलिए? सारा कार्य अहं प्रेरित हो रहा है। यह एक ऐसी दौड़ है, जिसने आवश्यकता के पक्ष को गौण कर दिया, अनुपयोगिता एवं प्रदर्शन के पक्ष को उभार दिया। जीवन की सामान्य आवश्यकता कम आय वाला व्यक्ति भी पूरी कर लेता है, एक लखपति भी पूरी कर लेता है, एक करोड़पति भी कर लेता है। प्रत्येक आदमी रोटी खाता है, सोना-चांदी नहीं खाता। इतनी आवश्यकता की पूर्ति प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। किन्तु अहं की चेतना से प्रभावित व्यक्ति सोचता है दुनिया में धनपतियों में प्रथम नाम मेरा ही आए। यह स्पर्धा है। इस अहं की समस्या ने जगत की समस्या पर पर्दा डाल दिया और उसे ज्यादा उलझा दिया।

www.terapanthinfo.com

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

दूसरी समस्या है व्यक्तिवादी दृष्टिकोण। व्यक्ति केवल अपने और अपनों के लिए सोचता है। एक सीमा बन गई मेरे लिए तथा मेरे अपनों के लिए सारी सुविधा प्राप्त करनी है। यह गलत दृष्टिकोण बन गया। दुकानदार-मिलावट करके काल बेचता है पर अपने लिए शुद्ध माल लाएगा। कारण क्या है? अपने लिए और अपनों के लिए सुविधा जुटाने का दृष्टिकोण काम करता है। दो प्रकार के दृष्टिकोण हैं अपने लिए अलग और दूसरों के लिए अलग। इस विभक्त दृष्टिकोण ने समाज को बहुत रुग्ण बनाया है, समस्याग्रस्त बनाया है।

भोगवादी दृष्टिकोण

तीसरी समस्या है भोगवादी दृष्टिकोण। आदमी प्रत्येक पदार्थ का भोग चाहता है। वर्तमान की आर्थिक व्यवस्था और अवधारणा ने व्यक्ति को भोगवादी बनाया है। खूब कमाओ और खूब भोगो। उत्पादन अधिक, अर्जन अधिक और भोग अधिक ये जीवन के तीन सूत्र मान लिए गए। इस दृष्टिकोण ने कुछ लोगों को भोगी बना दिया, कुछ लोगों को अभावग्रस्त और दीन-हीन बना दिया। भोगवादी दृष्टिकोण सचमुच एक समस्या बन गया।

अधिकार की मनोवृत्ति

चौथी समस्या है अधिकार की मनोवृत्ति। छोटे से छोटे प्राणी में, पेड़-पौधे में भी अधिकार की मनोवृत्ति होती है। यह मौलिक मनोवृत्ति है। सारी समस्याओं का मूल है अधिकार की मनोवृत्ति। इसमें सबका समावेश हो जाता है। इसे संग्रह या परिग्रह की मनोवृत्ति भी कहा जा सकता है। व्यक्ति सबको अपने अधिकार में रखना चाहता है। व्यक्ति की इस मनोवृत्ति से अनेक समस्याएँ उलझती हैं।

अहिंसा के प्रशिक्षण का अर्थ

हम केवल अर्थ-व्यवस्था को बदलने पर ध्यान केन्द्रित करें, नई प्रणालियों को विकसित करने की बात सोचें और भावजगत् की बिल्कुल उपेक्षा कर दें तो समस्या का समाधान कभी नहीं होगा। समाधान के लिए दोनों पर ध्यान देना होगा। वस्तु-जगत् भी एक सच्चाई है और भाव-जगत् भी एक सच्चाई है। हम एक सत्य को मान कर चलें और दूसरे को नकार दें तो ऐकान्तिक आग्रह बन जाएगा और समस्या का समाधान नहीं होगा। समाधान तब होगा जब दोनों सच्चाई को साथ ले कर चले। अहिंसा के प्रशिक्षण का अर्थ भी इन दोनों सच्चाइयों से जुड़ा हुआ है। वस्तु-जगत् में परिवर्तन नहीं होगा तो हिंसा बढ़ेगी। भाव-जगत् में परिवर्तन नहीं होता है तो हिंसा को अधिक पनपने का मौका मिलेगा।

मूल्यवान है भाव-जगत्

हम अनेकान्त का प्रयोग करें, दोनों सचाइयों को एक साथ समझें, सही निर्णय लें, बीमारी का सही निदान होगा। केवल वस्तु जगत् ही सब कुछ नहीं हैं, उसके साथ भाव-जगत का भी बहुत मूल्य है। यदि हमारा भाव-जगत सुलझा हुआ है तो वस्तु-जगत भी सुलझा हुआ, साफ सुथरा नजर आएगा।

वस्तु-जगत से भी ज्यादा मूल्यवान है भाव-जगत्। अगर भाव-जगत स्वस्थ है तो वस्तुजगत का भी परिष्कार करने में काफी सुविधा हो जाएगी। जटिलता हो रही है भाव जगत में और उसका प्रतिबिम्ब पड़ रहा है वस्तुजगत पर। अहिंसा का प्रशिक्षण भाव-जगत का प्रशिक्षण है। इसका संबंध समाज-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था और राज्य व्यवस्था के साथ है पर सबसे घनिष्ठ संबंध है भाव-जगत के साथ।

अहं का परिष्कार

अहिंसा के प्रशिक्षण का सबसे पहला बिन्दु होगा अहं का विर्सजन, अहं के परिष्कार का प्रशिक्षण। इसका फलित होगा, समानता की वृत्ति का जागरण। विषमता कौन पैदा करता है? विषमता का कारण है अहंकार। आधुनिक विज्ञान की खोजों का निष्कर्ष है उत्तेजना, जल्दबाजी, शीघ्रता, आगे बढ़ने की चेष्टाएं ये हृदय रोग को जन्म देती हैं। अहंकार के विलय का प्रशिक्षण दें तथा उसके अनुरूप ही अर्थ-व्यवस्था की बात सोचें, समानता की दृष्टि जागती चली जाएगी। जब समानता की दृष्टि बढ़ेगी तो विषमता की बात कम होती चली जाएगी। अहिंसक समाज रचना की दिशा में एक नया विकल्प हमारे सामने आएगा।

परस्परता का दृष्टिकोण

दूसरी समस्या है व्यक्तिवादी दृष्टिकोण। उसके परिष्कार का सूत्र है परस्परोपग्रह, परस्परता का दृष्टिकोण जागृत करना। एक आदमी दूसरे के बिनाजी नहीं सका, एक व्यक्ति दूसरे का आलम्बन लिए बिनाजी नहीं सकता, इस सच्चाई को अस्वीकार करने के कारण ही समाज बीमार बना है। एक पैर चले, दूसरे को आगे न बढ़ाएं तो क्या होगा? गति अवरुद्ध हो जाएगी। सापेक्षता और परस्परता का होना जरूरी है। आचार्य उमास्वाति का यह कथन 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' इसी सच्चाई का निर्देश सूत्र है।

त्याग की चेतना का प्रशिक्षण

तीसरा तत्त्व है त्याग का चेतना का प्रशिक्षण। आज भोगवादी दृष्टिकोण को प्रबल होने का बहुत मौका मिलता है। यह धारण बन गई जीवन का सार है पदार्थ। इस मिथ्या धारणा को तोड़ना होगा। भोग जीवन की अनिवार्यता है तो त्याग उसका अलंकरण है। पोजिटिव और निगेटिव दोनों का योग होता है तो बिजली जलती है। भोग के साथ-साथ त्याग का होना भी है।

विसर्जन

चौथा तत्त्व है विसर्जन। अभ्यास के द्वारा इस वृत्ति को जगाया जाए। धन का अर्जन हो तो उसके कुछ अंश का विसर्जन भी करो। अगर एक रुपया कमाया है तो एक पैसे का जरूर विसर्जन करो। खाते चले जाएं और उत्सर्ग न करें तो क्या होगा? अर्जन और विसर्जन दोनों आवश्यक हैं।

अहिंसापरक चेतना की अवधारणा

स्वस्थ समाज की रचना के लिए इन चारों बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा-

1. अहं विलय की चेतना का जागरण।
2. परस्परता की चेतना का जागरण।
3. त्याग की चेतना का जागरण।
4. अर्जन के साथ विसर्जन की चेतना का जागरण।

यह एक नई अवधारणा है, अहिंसापरक चेतना की अवधारणा है।

www.terapanthinfo.com

महान् यशस्वी का महाप्रयाण

भंवरलाल सालेचा

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार।।

मृत्यु एक शाश्वत सत्य हैं जो संसार में आया है, उसे एक दिन अवश्य जाना है। व्यक्ति कितने वर्ष जीया यह महत्त्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि कैसे जीया यह अधिक महत्त्वपूर्ण है। आचार्य महाप्रज्ञ जी का आदर्श जीवन एक ऐतिहासिक अवतरण हैं, एक ऐसी खुली पुस्तक है जिसके सभी पृष्ठ सुनहले अक्षरों से सुशोभित हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन सदैव मानव जाति के कल्याण में समर्पित रहा, सबके प्रति सद्भाव एवं समभाव रखते हुए अपने जीवन में उन्होंने राग द्वेष को कभी छूने नहीं दिया। वे मानवता के मसीहा, नैतिक क्रांति के पुरोधा, जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म के दसवें आचार्य और अणुव्रत अनुशास्ता, प्रेक्षा प्रणेता जीवन विज्ञान के जन्मदाता श्री महाप्रज्ञजी अब हमारे बीच नहीं रहे। दिनांक 9 मई 2010 को दोपहर 2.55 बजे अचानक हृदय गति रुकने से सरदार शहर में उनका महाप्रयाण हो गया। उनके चले जाने से ऐसा लगा जैसे सम्पूर्ण तेरापंथ संघ प्राणविहीन हो गया। उनके ब्रह्मलीन का संदेश सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित कर दिया गया जिसे सुनकर लोग स्तब्ध रह गये क्योंकि वे एक ऐसे महापुरुष थे जिनकी उपस्थिति मात्र से स्वयं पाण्डाल अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता था। जिनकी एक दृष्टि पाने के लिये लाखों लोग तरसते थे। वे एक ऐसे दुर्लभ आचार्य थे जिन्हें भिक्षा देने के लिए सैकड़ों करोड़पति पंक्तिबद्ध खड़े रहते थे। वे अचानक पूर्ण स्वस्थ अवस्था में ही सबकी आँखों से ओझल हो गये। वे 90 वर्ष के थे। उनके असाम्प्रदायिक और व्यापक दृष्टिकोण ने उन्हें मानवतावादी धर्माचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने एक गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक, नारी जागरण, संस्कार निर्माण, रूढ़ि उन्मूलन, सामाजिक कुरीतियां और बुराइयों के बहिष्कार के प्रति सदैव समर्पित रहते हुए महावीर के करुणा के संदेश को घर-घर पहुँचाया। अभी भी लोग इस कल्पना में हैं कि महाप्रज्ञजी कहीं एकांत में ध्यान मग्न हैं और उन्हें यह विश्वास है कि एक न एक दिन उनके दर्शन अवश्य होंगे वास्तव में महाप्रज्ञजी का निर्वाण केवल जैन धर्म के लिये ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति के लिये अपूर्णीय क्षति है। आचार्य महाप्रज्ञजी का जन्म संवत् 1977 आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी को झुंझनू जिले के टमकोर ग्राम में एक अत्यंत साधारण परिवार में पिता तोलाराम जी एवं मातृश्री बालूजी संखलेचा परिवार में हुआ बचपन में ही पिता के देहाँत होने से उनका पालन पोषण एवं आध्यात्मिक जागृति लाने में उनके माता की ही विशेष भूमिका रही। दस वर्ष की अवस्था में अपनी मातृश्री के साथ तेरापंथ के आठवें आचार्यश्री कालूगणी के कर कमलों से दीक्षा लेकर आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में दर्शन, न्याय, व्याकरण, मनोविज्ञान, ज्योतिष का गहन अध्ययन कर वे नत्थू से नथमल, मुनि नथमल से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से आचार्य महाप्रज्ञ कैसे बनें? वास्तव में यह यात्रा एक ऐसे आदर्श व्यक्तित्व की है जिनके जीवन में स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या, विनम्रता, करुणा एवं समर्पण का सदैव निवास रहा। कार्तिक शुक्ला 13 संवत् 2035 में गंगाशहर में गुरुदेव श्री तुलसी ने ''महाप्रज्ञ'' अलंकरण से सम्मानित करते हुए कहा था कि मुनि श्री नथमल की अपूर्व सेवाओं के प्रति सम्पूर्ण तेरापंथ संघ कृतज्ञता का अनुभव करता हैं। यह अलंकरण केवल कृतज्ञता की स्मृति मात्र हैं। ''आपकी अप्रत्याशित सेवाओं के फलस्वरूप संवत् 2035 में राजलदेसर में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आपको युवाचार्य पद से एवं संवत् 2050 में मर्यादा महोत्सव के दौरान गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर आपको दसवें आचार्य पद पर सम्मानित कर एक नया इतिहास रचते हुए कहा था'' कि मेरे जीवन काल की अनेक उपलब्धियां में से सर्वाधिक उपलब्धि है कि मैंने एक योग्य से योग्यत्तर ही नहीं बल्कि योग्यतम आदर्श व्यक्तित्व को पाया है जिसकी सरस्वती रूपी वाणी से निकला हुए प्रत्येक शब्द अमूल्य साहित्य बन जाता है। उनके द्वारा लिखित साहित्य सम्पूर्ण जगत की अमूल्य धरोहर है। आपने आतंकी हमलों व साम्प्रदायिक झगड़े को दूर कर राष्ट्रीय एकता के लिए विभिन्न राज्यों में करीब एक लाख किलोमीटर की पैदल अहिंसा यात्रा कर मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में अप्रत्याशित एवं श्लाघनीय सेवाएं प्रदान कर जन-जन के बीच लोकप्रियता प्राप्त की। श्री रामधारी सिंह दिनकर ने आपको विवेकानंद के रूप में, मुसलमानों ने मोहम्मद साहब, सिक्खों ने गुरुनानक एवं ईसाइयों ने आपको ईसा-मसीह के रूप में संबोधित

www.terapanthinfo.com

किया। विश्व ने आपको शताब्दी युग पुरुष के रूप में सम्मानित एवं एक यशस्वी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया।

विश्व में अहिंसा की अलग जगाने वाले आचार्य महाप्रज्ञजी को अंतिम विदाई देने के लिए 10 मई सोमवार 2010 को सरदारशहर में देशभर से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा, उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, श्री गुलाब कोठारी, ग्रामीण विकास मंत्री सी.पी. जोशी, श्री महादेवसिंह खण्डेला आदि-आदि अनेक नेताओं, विद्वानों व जनप्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय संत को श्रद्धासुमन अर्पित किये। डाक्टर कलाम ने अपने संदेश में लिखा है, ''महाप्रज्ञ ने अणुव्रत व अहिंसा के माध्यम से इंसानियत को बढ़ावा दिया है। देश ने एक महान् संत को खो दिया है।'' कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने महाप्रज्ञ के महाप्रयाण को जैन समाज और तेरापंथ के लिये ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिये अपूर्णीय क्षति कहा है। देश में सर्वत्र अनेक शोक सभाएं हुई और अनेक स्थानों से शोक संदेश सरदारशहर पहुँचे। उनकी पार्थिव देह को एक श्वेत भव्य बैकुण्ठी में दोपहर 3.30 बजे विराजित कर करीब एक लाख श्रद्धालुओं ने अपने गुरुदेव को सजल नेत्रों से सायं ठीक 6.30 बजे रतनगढ़ रोड़ स्थित सम्पत बच्छावत के खेत में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। उन्हें मुखाग्नि जैन समाज की धार्मिक रीति-नीति के अनुसार टमकोर के परिवार के सदस्यों ने दी। सम्पूर्ण वातावरण मंगल गीतों व जयनारों से गूंज उठा, एक ही नारा गूंज रहा था ''जब तक सूरज चांद रहेगा गुरुवर आपका नाम रहेगा।'' वास्तव में अन्त्येष्टी का दृश्य इतना हृदय द्रवित करने वाला था कि प्रत्येक उपस्थित नर-नारी के आँखों में विरह के आंसू बह रहे थे। महाप्रज्ञ के पुण्य प्रताप से सम्पूर्ण भारत भूमि धन्य हो गई। वास्तव में महाप्रज्ञ के महाजीवन का इतिहास केवल जैन समाज का ही इतिहास नहीं बल्कि समस्त मानवता का पावन इतिहास है। उन्होंने अपने दिव्य ज्ञान से जन-जन को आलोकित कर स्वयं दीप शिखा बन गये। हम उस महामानव के बताये हुए सिद्धांतों को जीवन व्यवहार में लाकर, धर्म संघ की सेवा में स्वयं को समर्पित होकर अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा को सरोकार करें तो यह उस महापुरुष के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे दिल साज तू।
जब न रहे दुनियां में, तो दुनिया को याद आएं तू।।

पूर्व वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी
नृसिंह द्वारा के पास बालोतरा (राजस्थान)

राष्ट्र चिन्तन

◆ जीडीपी दर 8.5 फीसदी रहने की उम्मीद है। ऐसे में इनकम टैक्स विभाग को लक्ष्य से ज्यादा टैक्स वसूलने की कोशिश करनी चाहिए। मौजूदा वित्त वर्ष में 4,30,000 करोड़ रुपये के कर वसूली का लक्ष्य तय किया गया है। सरकार रियायतें वापस लेना जारी रखेगी और टैक्स के दायरे को और बढ़ाएगी। उम्मीद है कि इस वर्ष 4,30,000 करोड़ रुपए से ज्यादा टैक्स की वसूली की जायेगी। अर्थव्यवस्था मजबूत रिकवरी की राह पर है और टैक्स कलेक्शन भी उसी के मुताबिक होना चाहिए। इनकम टैक्स विभाग को कर का दायरा बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। आयकर विभाग को कर का आकलन और जांच ठीक से करनी चाहिए और कर चोरी रोकने के लिए खुफिया आंकड़े जुटाने चाहिएं। इसके लिए छोटे शहरों पर ध्यान देने की जरूरत है।

प्रणव मुखर्जी, वित्त मंत्री

◆ भोपाल जैसी व्यापक जनसंहारक घटनाओं के मामलों से निपटने के लिए देश में अलग कानून की आवश्यकता है। अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी यूनियन कार्बाइड के तत्कालीन अध्यक्ष वारेन एंडरसन के खिलाफ लंबित मामला अभी खत्म नहीं हुआ है। इस हादसे के घटनाक्रम और न्यायिक व्यवस्था से हमें सबक लेना होगा और सामुहिक संहारक की संभावना की घटना के मद्देनजर ऐसे हादसों की रोकथाम के एहतियाती उपायों, पीड़ितों को तत्परता से मुआवजा और ऐसी घटना में जिम्मेदारी निर्धारित करके दोषी व्यक्तियों को कठोर दंड देने के उपाय करने की आवश्यकता है।

वीरप्पा मोइली, कानून मंत्री

◆ महानगरों की सड़कों पर आए दिन होने वाले ट्रैफिक जाम से छुटकारा पाने के लिए प्राइवेट गाड़ियों पर भीड़भाड़ बढ़ाने के एवज में टैक्स लिया जा जाए। लोगों को कारें खरीदने से तो नहीं रोका जा सकता, लेकिन ऐसी नीतियां तो बनाई जा सकती हैं, जिससे उनकी कारों की दीवानगी कुछ कम हो।

एस. जयपाल रेड्डी, *शहरी विकास मंत्री*

www.terapanthinfo.com

मुझको जगा के दोस्तों, वो खुद ही सो गया

डॉ. सरोज कुमार वर्मा

एक फकीर था। वह आत्मा की अमरता का संदेश देता रहता। कहता आत्मा अमर है। कभी नहीं मरती। जो मरती है वह देह होती है। देह नश्वर है। नश्वर को तो नष्ट हो ही जाना है। उसके नष्ट हो जाने पर क्या शोक करना? क्यों शोक करना? आत्मा तो कभी नष्ट नहीं होती। वह सदा रहती है। क्योंकि मूलतः हम वही हैं। आत्मरूप हैं। आत्मा ही है। एक महान् गुरु थे उनकी एक दिन अचानक मृत्यु हो गई। उसका एक शिष्य था और वह गुरु की आत्मा की अमरता के संदेश को प्रचारित प्रसारित करता रहता था। मगर गुरू के मरते ही छाती पीट-पीट कर रोने लगा। जोर-जोर, दहाड़े, मार-मार कर रोने लगा। लोगों ने उससे पूछा तुम्हारे गुरु तो कहते थे आत्मा अमर है, कभी नहीं मरती। तुम भी यही कहते हो, तो अब क्यों रो रहे हो? गुरू की देह ही तो नष्ट हुई है? आत्मा तो उनकी भी नहीं मरी? उस शिष्य ने उत्तर दिया आत्मा के लिए कौन रोता है? वह तो मैं भी जानता हूं कि आत्मा अमर है और नहीं मरी है। मगर मैं देह के लिये रो रहा हूं। यह देह भी बेहद प्यारी थी और अब कभी देखने को नहीं मिलेगी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण की खबर सुनकर मुझे यह कथा याद आ गई और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं अपने संदर्भ में यह भी कहना चाहता हूँ कि मुझे आत्मा का कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आत्मा की अमरता के बारे में कुछ नहीं जानता। सुनता भर हूं। लेकिन जानता केवल देह को ही हूं। मेरी पहचान केवल देह से है। **मैं आचार्य महाप्रज्ञ को भी देह से ही जानता-पहचानता था। इस कारण उनके चले जाने से भौतिक स्तर पर एक शून्यता पैदा हो गई है। ऐसी शून्यता जो फिर नहीं भरेगी।** कभी नहीं भरेगी। हो सकता है आचार्यजी हमसे आत्मिक स्तर पर जुड़े रहे हों और हो सकता है क्यों, निश्चित रूप से वे हम सबसे आत्मा के स्तर पर ही जुड़े हुए थे और इसलिए अपनी तरफ से वे हम सबसे सदा जुड़े रहेंगे, लेकिन मैं तो उनसे देह के द्वारा ही जुड़ा हुआ था। अतः अब उनकी देह के नहीं रहने पर यह जुड़ाव तो पीड़ा देगी ही।

आचार्य महाप्रज्ञ से मेरी पहली मुलाकात सितम्बर 2003 में सूरत में हुये अणुव्रत लेखक सम्मेलन में हुई थी। मैं वहां राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन में बुलाया गया था। 'अणुव्रत' (पाक्षिक) में मैं पिछले कई वर्षों से लिखता रहा था, परंतु उसके लेखक सम्मेलन में जाने का सुयोग मुझे पहली बार मिला था। इसमें यहां के सतीश कुमार 'साथी' की भूमिका भी रही। सूरत के उसी अधिवेशन में मेरी मुलाकात 'अणुव्रत' (पाक्षिक) के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट से भी हुई। उनसे यह मेरी पहली मुलाकात थी, लेकिन इस पहली मुलाकात में ही ऐसा प्रगाढ़ रिश्ता बन गया कि शायद अब यह कभी न टूटे। उनके आत्मीय व्यवहार ने स्नेह के ऐसी जंजीर में जकड़ लिया है मुझे कि अब उससे मैं कभी मुक्त नहीं हो पाऊंगा। सूरत अधिवेशन की उस पहली मुलाकात में कर्णावटजी अपने एक संबंधी, शायद बहिन, के यहां मुझे भोजन पर ले गये थे। वहां स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ देर तक विभिन्न विषयों पर आत्मीय चर्चा होती रही थी। उसी में उन्होंने मुझसे 'अणुव्रत' के लिए नियमित लेखन का आश्वासन लिया था, जिसे मैं आज भी हर संभव तरीके से, सभी व्यवस्तताओं के बावजूद पूरा करने का प्रयास करता रहता हूं।

सूरत-अधिवेशन में मैंने पहली बार आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किये। डॉ. कर्णावट ही मुझे उनके पास ले गये थे। उनके कमरे में पहुंचते ही मुझे एक गहन शांति और परम भव्यता का अनुभव हुआ। वहां कुछ और लोग बैठे थे। मैंने उनके आगे झुक कर प्रणाम करने के लिये अपने हाथ जोड़े तो डॉ. साहब ने उन्हें मेरा परिचय दिया। महाप्रज्ञजी ने मेरी ओर देखते हुए आशीर्वाद के लिए अपने हाथ ऊपर किये। जाने उनकी दृष्टि में क्या था, जाने उनके हाथ में क्या था, जाने उनके सान्निध्य में क्या था, कुल मिलाकर जाने उनके आशीर्वाद में क्या था कि एक परम शांति, अजस्त्र ऊर्जा, असीम उत्साह और अनंत विराटता का अनुभव मुझे हुआ। मैं लंबे समय तक इस अनुभव में रहना चाहता था, परंतु वह संभव नहीं हो सका और थोड़ी देर बाद मुझे कमरे से बाहर आ जाना पड़ा। मगर बाहर आने के बाद भी उस अनुभव की ताजगी मिटी नहीं। यद्यपि बाहर आने के बाद एक रिक्तता का अहसास मुझे हुआ, लेकिन उस रिक्तता में भी एक पूर्णता का बोध बना रहा। उसी बोध से भरा हुआ मैं अणुव्रत अधिवेशन में शरीक हुआ, अणुव्रत लेखक सम्मेलन में अपने विचार रखे और लौटते वक्त यह अभीप्सा बनी रही कि अणुव्रत के हर लेखक सम्मेलन में आने का सुअवसर मुझे मिलता रहे ताकि बार-बार अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य का लाभ मिल सके, उनका पावन आशीर्वाद मिल सके।

लेकिन यह सुअवसर मुझे सवा चार वर्षों के अंतराल पर मिला जब जनवरी 2008 में आसीन्द (राजस्थान) मुझे राष्ट्रीय अहिंसा समवाय कार्यशाला में निमंत्रित किया गया। चूंकि इस बीच में अधिवेशनों में मुझे आने का निमंत्रण नहीं मिला था, इसलिए यह निमंत्रण पाकर मुझे बेहद खुशी हुई और मैंने दूसरे ही दिन आसीन्द जाने का अपना आरक्षण करवा लिया। इस तत्परता के पीछे आचार्य महाप्रज्ञजी से मिलने-सुनने का लोभ ज्यादा था। इस लोभ की पूर्ति वहां हुई भी।

www.terapanthinfo.com

वहां उनका सान्निध्य फिर मिला, आशीर्वाद मिला और मुझे लगा कि कड़ी धूप में चलते हुये किसी यात्री को सुस्ताने के लिए घनी छांह मिल गयी है। जीवन की आपा-धापियों के बीच जिस तरीके से हम जीते हैं, उसमें जिंदगी रेतीली पगडंडियों पर कड़ी धूप में चलने वाली यात्रा ही बन जाती है। इसमें जिंदगी का दोष कम हमारे जीने के ढंग का दोष ज्यादा होता है। सच तो यह है कि इसमें जीने के ढंग का ही दोष होता है, वरना जीवन तो अपने-आप में बिल्कुल निर्दोष होता है। आचार्य महाप्रज्ञ हमें यही निर्दोष जीवन जीने का तरीका सिखाते रहे हैं। इसीलिए तो उनके पास होना मुझे घनी छांह जैसा लगा। आसीन्द के इसी अधिवेशन में मेरी मुलाकात वरिष्ठ लेखक डॉ. प्रेम मोहन लखोटिया से हुई। यद्यपि लखोटियाजी से यह मेरी पहली मुलाकात थी, परंतु इस पहली मुलाकात में ही घनिष्ठता इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपने यहां आने का नियंत्रण दे डाला। दरअसल मैं लौटते हुए जयपुर भ्रमण के लिए एक रात जयपुर में रूकना चाहता था, सो उनके वहां के होटलों अथवा अतिथि-गृहों जैसे किसी उपयुक्त जगह के बारे में पूछा था। उन्होंने बड़े अधिकार से कहा कि जब मेरा घर जयपुर में है तो आप कहीं और क्यों रुकेंगे? सो मैं उनके यहां पहुंच गया। उनके घर में वे और उनकी श्रीमती सविता लखोटिया, दो ही जने थे। और ये दोनों ही मुझसे इस अपनत्व से मिले कि लगा ही नहीं कि मैं परदेश में हूं। यह संबंध नया-नया बना है। अजनबी मित्रों से ऐसा अपनापन मैंने पहली बार महसूस किया।

अणुव्रत लेखक मंच का अधिवेशन अक्टूबर 2009 में लाडनूं (राजस्थान) में हुआ और उसमें आने का निमंत्रण-पत्र मुझे समय से आ गया। मैं तो इसकी प्रतीक्षा में ही था। तुंरत दिल्ली का आरक्षण करवाया। कर्णावटजी ने दूरभाष पर बताया कि वहां से लाडनूं के लिए बस की सुविधा रहेगी। मगर दिल्ली अणुव्रत कार्यालय पहुंचने पर वहां से कार के द्वारा लाडनूं जाने की व्यवस्था हो गयी। मेरे साथ बी.एन.पांडेय, डॉ. धर्मपाल मैनी तथा रजनीकांत शुक्ल थे। लाडनूं में फिर डॉ. कर्णावट मुझे आचार्य महाप्रज्ञजी के पास ले गये और उनका आशीर्वाद पाकर मुझे लगा कि किसी सर्द कोहरे वाली रात में उष्मा देता हुआ सूरज निकल आया हो।

बस! आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन मुझे यही कुल तीन बार हुये। मगर तीनों बार उनके दर्शन कर मैं किसी दूसरे लोक में पहुंच गया। यह उनके आशीर्वाद का करिश्मा था। जले दीये को छूकर बुझा दिया तो भी जल ही जाता है। यह अलग बात है यदि उस दीये में तेल न हो, तेल से भीगी बाती न हो तो वह दीया फिर बुझ जाता है। हम लोग वैसे ही दीये है हममें तेल नहीं पानी भरा है। बाती भी उस पानी से ही गीली हुई है। आचार्य महाप्रज्ञ का सान्निध्य उस पानी को उलीच कर तेल भर देता था, बाती को सुखाकर तेल से भींगो देता था? और हम उनके पास आकर जल उठते थे। यह पानी भौतिकता का है। आचार्य का तेल आध्यात्मिकता का था। यह आध्यात्मिकता हमारे भीतर उजास भर देता था। अनंत यात्रा पर निकलने का आह्वान करता था।

अब स्थूल रूप से यह उजास भरने वाला शख्स, यह आह्वान करने वाला शख्स चला गया है, परंतु सूक्ष्म रूप से वह मौजूद है। आत्मतत्व के रूप में। उसके बोध, उसके विचार, उसके उपदेश शब्द रूप में हमारे पास मौजूद हैं। अब हमें भी थोड़ा सूक्ष्म होना पड़ेगा। खुद रास्ता तय करने का सामर्थ्य जुटाना पड़ेगा और यह तभी हो सकता है जब साथ चलकर रास्ता दिखाने वाला रहबर साथ छोड़ दें। महाप्रज्ञ ने भी यह साथ छोड़ दिया है। मगर उन्होंने हममें चलने का हौंसला पैदा कर दिया है। हमें अपने पैरों की क्षमता का अहसास करा दिया है। उन्होंने रास्तों का एक खाका भी हमें समझा दिया है, यद्यपि कि वे जहां हमें ले जाना चाहते थे वहां ये खाके नहीं जाते। इन खाकों को एक दूरी के बाद छोड़ना ही पड़ता है। हमें अज्ञात में छलांग लगानी ही पड़ती है। मगर यह छलांग लगाने की हिम्मत तब तक नहीं आती जब तक कोई ऋषि पुरुष हमें आश्वस्त न कर दे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने यह आश्वस्ति प्रदान कर दी है। इसलिए उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तो यही होगी कि हम उनकी आश्वस्ति पर यकीन करके छलांग लगाये। हम जरूर पहुंच जायेंगे उस अंतिम मंजिल पर जिसके आगे और कोई मंजिल नहीं होती। इसीलिए मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि रफीक जाफर को इन पंक्तियों में अर्पित करता हूं-

कुछ दूर मेरे साथ चला,और सो गया,
मेरा नसीब फूल नहीं, आग बो गया।
कैसा अजीब शख्त था, जो दरमियाने जंग,
मुझे को जगा के दोस्तों, वो खुद ही सो गया

06, व्याख्याता आवास, खबड़ा रोड़,
विश्वविद्यालय परिसर,
मुजफ्फरपुर-842001 (बिहार)

मानवता के मसीहा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने मानवीय मूल्यों के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन के दार्शनिक स्वरूप को परिभाषित किया। नैतिक मूल्यों के निर्माण एवं जीवन शैली में परिवर्तन ही उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व रहा। पवित्र बनो- निर्मल रहो, गतिशील बनो, उपयोगी बनो के सूत्र आपके आदर्श जीवन के प्राण तत्व रहे।

भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के वे ऋषि पुरुष थे। जीवन की यथार्थता का जो वास्तविक स्वरूप आपने दिया वह इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया है।

आप द्वारा प्रदत्त विशिष्ठ सूत्र- अप्रमत एवं योग्य बनो, रहो भीतर-जीयो बाहर, जागरुकता का एवं संयमित जीवन-जीओ के तथ्यों की प्राप्ति हेतु संकल्पित होने का निष्ठा पूर्वक प्रयत्न करें, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। करुणा पुंज को शत शत नमन्!

जी.एल.नाहर
अणुव्रत प्रवक्ता , उपाध्यक्ष अणुव्रत महासमिति

www.terapanthinfo.com

जन-मन की आस्था के केन्द्र : महाप्रज्ञ

साध्वी डॉ. परमयशा

बाग को देखकर बागवां की पहचान हो जाती है,

हस्ताक्षर को देखकर विद्वान की पहचान हो जाती है।

यों तो किस-किस मनीषी का नाम लेकर पुकारें,

भक्त को देखकर भगवान की पहचान हो जाती है।।

आचार्य महाप्रज्ञ इस दुनिया में भक्त बनकर आए। भगवान बनकर जीए। भगवत् गुणों को उजागर कर विश्व क्षितिज को अलविदा कह गए। उनके महाप्रयाण में भक्तों की उमड़ती श्रद्धा का सैलाब देख स्वतः ही पहचान हो जाती है कि वे जन-मन की आस्था के प्रभावी केन्द्र थे। एक चिन्मय चैतन्य पुरुष थे। जिन्होंने जीवन भर जैन धर्म तेरापंथ, देश, समाज, राष्ट्र और समूची मानव जाति को आलोक बांटा, उपलब्धियां बांटी और नये उन्मेष दिए। अध्यात्म संदेश दिए। साधना सूत्र दिए। ऊर्ध्वा- रोहण के सोपान दिए। राष्ट्र का कोई पहलू जिनकी दिव्यता-भव्यता से अछूता नहीं रहा।

प्रबंधन क्षमता

हमारे देश की आबादी एक अरब से ऊपर है। मेन पावर राष्ट्र के पास है। मनी पावर की कमी भी नहीं है। प्रबंधन क्षमता बिना विकास का सपना समग्र नहीं बन सकता। सम्यक् नियोजन के अभाव में विश्व की बहुत सारी सभ्यता संस्कृतियां विलुप्त हो गयी। आचार्य महाप्रज्ञ ने मेन पावर, मनी पावर की कभी उपेक्षा नहीं की। उन्होंने प्रबंधन क्षमता के महत्त्वपूर्ण अर्थ-शास्त्रीय फॉर्मूले दिए। टाइम मेनेजमेंट, स्ट्रेस मेनेजमेंट, लाइफ मेनेजमेंट, सेल्फ मेनेजमेन्ट का जीता जागता आदर्श उपक्रम वे हर वक्त अपनी दिनचर्या में जीते और देश परिवेश को प्रबंधन का सघन नेटवर्क देते रहे। कार्यशाला लगाते रहे। कॉन्फ्रेंस आयोजित करवाते रहे। यही वजह दिन के उजाले की तरह मानवजाति को ऊर्जा देती रही।

गहरी और लम्बी श्वास का रहस्य

व्यक्ति और समाज शक्तिशाली और प्रभावशाली बने। आचार्य महाप्रज्ञ ने दीर्घश्वास प्रेक्षा का प्रयोग बताया। बड़ी-बड़ी बातों पर ध्यान केन्द्रित करने वाले बड़े लक्ष्य बनाने वाले अनेक व्यक्ति होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ बड़े लक्ष्य बोध की संप्राप्ति का माध्यम छोटी-छोटी बातों के विवेक को देते। ''जहाँ काम आए सूई'' की कहावत को चरितार्थ करने वाले पूज्यप्रवर ने कहा अगर हिन्दुस्तान की एक अरब आबादी गहरा लम्बा श्वास लेना सीख जाए तो 75 प्रतिशत समस्याएं तो स्वयं हल हो जाएंगी। गहरी एवं लम्बी श्वास में सफल स्वस्थ जीवन शैली का रहस्य छिपा है। कार्य-क्षमताओं के संवर्धन का सूत्र एवं ऊर्जा स्तर को बढ़ाने की तकनीक उपलब्ध होती है। दीर्घश्वास प्रेक्षा एक ऐसा प्रयोग है जिससे आबाल वृद्ध लाभान्वित होता है। यह जैन आगमों का स्वर्ण सूत्र मानव जाति के भाग्योदय का स्वर्णिम सूत्र है।

सुखी एवं सद्भावना पूर्ण जीवन

आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में माता का हृदय बच्चे की पाठशाला होता है। एक अच्छे परिवार में पला-बढ़ा अच्छा व्यक्ति ही राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझ सकता है। अनुशासन, सहिष्णुता, विनम्रता, सदाचार की शांतिपूर्ण समन्विति का नाम है परिवार।

ये एक महामनस्वी के मस्तक से निसृत ऐसे ब्रह्म वाक्य हैं जो कपोल कल्पना नहीं, अंतःकरण की अनुभूति का अनावरण है जो नया मानव नया विश्व का परिवेश संदेश देश-विदेश को देते हैं। बालक का निर्माण परिवार की दहलीज पर होता है। भाग्यलिपि का पहला यूनिट परिवार है। दूसरा यूनिट पाठशाला है। जहाँ शिक्षक शिक्षा को सर्वांगीण विकास देता है। शिक्षार्थी को न केवल साक्षर बल्कि समग्र व्यक्तित्व का मालिक बनाता है। शारीरिक बौद्धिक एवं मानसिक भावनात्मक विकास की खुशहाली के लिए आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन विज्ञान राष्ट्र के लिए सर्वथा नया विचार है। जिससे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। असंतुलन अनेक समस्याओं का जनक है। संतुलन वैश्विक समस्याओं का सटीक जवाब है। संतुलित विकास से रोग प्रतिरोधक तंत्र शक्तिशाली बनता है। तनाव, अशांति, हिंसा, आवेश, उत्तेजना से न केवल शरीर बल्कि मन, भाव, आचरण अध्यवसाय, व्यवहार भी प्रभावित होता है। धर्म सतही प्रयत्न नहीं है वह भावशुद्धि और आत्मशुद्धि का प्रयास है। खुशहाल जीवन हर इंसान का लक्ष्य होता है। जीवन में धन, मन, तन, पद सब हो पर व्यवहार कौशल न हो; अध्यात्म का नियंत्रण न हो तो सुरक्षा कवच से जीवन बाहर होता है। आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में सुविधा सुख और शांति तीनों तत्त्व एषणीय है। शांति के अभाव में सुख-सुविधा का संवेदन खुशी नहीं दे सकता। सुखी एवं सद्भावनापूर्ण जीवन का तकाजा है हमारा हर विचार हर अनुभूति अन्तर्दृष्टि के सांचे में ढले।

विवेकपूर्ण विश्व

बड़ी-बड़ी कम्पनियों में नियुक्ति के लिए जहाँ आई.क्यू. को देखा जाता है वहाँ ई.क्यू. को उससे ज्यादा प्रधानता

—शेष पृष्ठ 11 पर....

www.terapanthinfo.com

तुमको ना भूल पाएंगे

सत्यनारायण 'सत्य'

जन-जन के चहेते, देश भर में अहिंसा की अलख जगाने वाले, करोड़ों लोगों के हृदय सम्राट और युग प्रवर्तक आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण की खबर सर्वप्रथम ईटीवी राजस्थान के माध्यम से मिली तो स्तब्ध रह गया। एक महामनीषी का इस तरह छोड़ चले जाना कितना कष्टकारक हैं, यह शब्दों में वर्णनीय नहीं है। उनके जाने से लगता है कि एक युग का अंत हुआ है, अहिंसा आंदोलन के साथ-साथ पूरे राष्ट्र में जो क्षति व रिक्तता हुई है, सदैव अपूरणीय ही रहेगी।

पिछले दस वर्षों से भी ज्यादा समय हो चुका है, इधर-उधर प्रकाशनों की शृंखला में कुछ रचनाएं 'अणुव्रत' में भी प्रकाशनार्थ भिजवाई थी। चूंकि नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत लेखन का मैं सदैव पक्षधर रहा हूँ, अतः 'अणुव्रत' में खूब छपा और इसके सम्पर्क का मेरे जीवन पर सर्वाधिक लाभ और सौभाग्य यह मिला कि मुझे एक युग मनीषी अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री के चरणों में कुछ पल-घड़ियां बिताने का अलौकिक परमानन्द प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ में आयोजित अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आमंत्रण प्राप्त कर मैं धन्य हुआ, क्योंकि यह आमंत्रण मेरे जीवन में आध्यात्मिक ऊँचाइयों के द्वार खोलने वाला था। इस द्विदिवसीय समारोह में मुझे आचार्यश्री का जो प्रथम सान्निध्य प्राप्त हुआ, वह मुझे अब तक भी ऊर्जावान बनाए हुए है। उनकी निकटता से मुझे अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, जीवन में व्याप्त विषमताएं, अमीरी-गरीबी का भेद और भूख व हिंसा के अन्तर्सम्बन्ध पर गंभीर चिंतन-मनन और दर्शन का लाभ हुआ। चित्तौड़गढ़ के इस लेखक सम्मेलन के बाद पुनः मेरा सौभाग्य जागा और सिरियारी में आयोजित आचार्यश्री के चातुर्मास में भी वहाँ जाकर उनके दर्शनों का साक्षी बना। इसके बाद अहिंसा यात्रा के दौरान ही एक और आचार्यश्री का रायपुर धरा पर भी पदार्पण हुआ, यहीं के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्यालय के एक कक्ष में आचार्यश्री से व्यक्तिगत दर्शनों का सौभाग्य मिला। तब भी आचार्यश्री ने अपना पावन आशीर्वाद प्रदान कर कृतार्थ किया उनका यह आशीर्वाद ''सत्य! जो भी लिखो सत्य ही लिखना, दुनिया में जितने भी असत्य हैं, उनके लिए भी सत्य लिखना और सदैव अपनी कलम को अहिंसा व मानवीय मूल्यों के लिए प्रयुक्त करना''। उनकी यह प्रेरणाएं आज भी मुझे उत्साहित, प्रेरित और मार्गदर्शित कर रही हैं। अभी पिछले वर्ष भी लाडनूं में आयोजित 'अणुव्रत लेखक सम्मेलन' में आचार्यश्री का पावन सान्निध्य फिर से प्राप्त हुआ, पर तब किसी भी दृष्टि से आचार्यश्री का वो मिलन, मुझे यह आभास नहीं करा पाया कि यह अंतिम मिलन होगा। प्रत्येक रचनाकार से व्यक्तिगत रूप से मिलना उनको नाम से पुकारना और पुचकारना उनकी सुंदर विशेषता थी। ऐसे महाव्रती-अणुव्रती का यूं छोड़ चले जाना सच में कष्टकारी है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई अन्य सम्मान एवं पुरस्कारों से भी उन्हें नवाजा गया था। आचार्यश्री को अपनी अंतिम घड़ियों का पूर्वाभास शायद उन्हें पहले ही हो गया था, तभी तो उनके अंतिम प्रवचन के शब्दों पर ध्यान दीजिये। 9 मई 2010 को सरदारशहर में प्रातः 9 से 10.30 बजे तक दिए गए प्रवचन के अंश

''हर व्यक्ति जीने की चाह रखता है, पर मृत्यु आ जाती है, अनन्त सुखानुभूति करनी हो तो भीतर देखना सीखो, भीतर अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त आनंद छिपा है। आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है। न किसी के द्वारा सुख दिया जाता है, न दुःख दिया जाता है।''

14 जून 1920 को जन्मे आचार्यश्री महाप्रज्ञ, बचपन में नथमल चोरड़िया के नाम से जाने जाते थे। टमकोर (झुंझुनू) के एक छोटे से गांव में जन्म लेकर 29 जनवरी 1931 को सरदारशहर में ही आचार्य श्री कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की और मुनित्व धारण किया। यह वही सरदारशहर है, जहाँ तेरापंथ के 11वें आचार्य श्री महाश्रमण का जन्म हुआ है। गंगाशहर में उन्हें 12 नवम्बर 1978 को 'महाप्रज्ञ' का अद्भुत अलंकरण

www.terapanthinfo.com

प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने आजीवन बड़े श्रद्धा व विश्वास से धारण किया। आचार्यश्री ने अपने कई उद्बोधनों में इस बात को विशेष इंगित किया कि कौन कितना जीया, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि उसने जीवन कैसे जीया। प्रेक्षाध्यान के आविष्कारक और जीवन विज्ञान का अनूठा प्रयोग करने वाले यह महामानव कभी भी जैन धर्म के संकीर्ण दायरे में नहीं बंधकर समूची मानव जाति के श्रद्धेय बने रहे। आचार्यश्री ने 2001 से शुरु हुई अपनी अहिंसा यात्रा में पूरे भारत वर्ष के लगभग एक लाख किलोमीटर की यात्रा कर पूरे देश में अहिंसा की अलख जगाई। जैन-अजैन, हिन्दू, मुस्लिम, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, छोटे-छोटे स्कूल, गांव-ढाणियां और न जाने कहाँ-कहाँ उनकी अहिंसा यात्रा गुजरी और पीछे छोड़ गई सुनहरी यादें, महान व्यक्तित्व की अमिट छाप। वर्षों पूर्व आचार्यश्री के लिए राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने आधुनिक विवेकानंद की संज्ञा दी थी। समस्या से भरे इस देश में जब साधु संत, पाखण्ड, ढोंग और विवादों से घिरे रहकर अपनी मोह-माया बढ़ाने में जुटे थे, अपने-अपने आश्रमों में मस्त थे, तब आचार्य श्री धूप-प्यास, गर्मी व सर्दी की बिना परवाह किए देश की गली-गली नाप रहे थे। इतिहास उठाकर देखें, धर्म और राजनीति के नाम पर तो सैकड़ों यात्राएं निकल गई होंगी, पर एक भी ऐसा व्यक्तित्व नहीं मिलेगा जो अध्यात्म व अहिंसा के लिए इतना पैदल घूमा हो।

आचार्य महाप्रज्ञ हिन्दी, राजस्थानी, प्राकृत, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने 22 वर्ष की उम्र से ही लेखन शुरू कर दिया था और 200 से ज्यादा पुस्तकें उन्होंने लिखी। जिनमें मन के जीते-जीत, किसने कहा मन चंचल है, जैन योग, चेतना का ऊर्ध्वारोहण, अर्हम्, नया मानव नया विश्व, घट-घट दीप जले, समस्या को देखना सीखें, एकला चलो रे, मनन और मूल्यांकन प्रमुख हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई अन्य सम्मान एवं पुरस्कारों से भी उन्हें नवाजा गया था। आचार्यश्री को अपनी अंतिम घड़ियों का पूर्वाभास शायद उन्हें पहले ही हो गया था, तभी तो उनके अंतिम प्रवचन के शब्दों पर ध्यान दीजिये। 9 मई 2010 को सरदारशहर में प्रातः 9 से 10.30 बजे तक दिए गए प्रवचन के अंश

''हर व्यक्ति जीने की चाह रखता है, पर मृत्यु आ जाती है, अनन्त सुखानुभूति करनी हो तो भीतर देखना सीखो, भीतर अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त आनंद छिपा है। आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है। न किसी के द्वारा सुख दिया जाता है, न दुःख दिया जाता है।''

कौन जानता था कि जीवन-मृत्यु के इस अंतिम प्रवचन के ठीक तीन घंटे बाद आचार्यश्री अनन्त यात्रा पर निकल जाएंगे। पर यह बात वह स्वयं जानते थे।

निस्संदेह उनका यूं चले जाना कष्टकारी है, पर उनकी असीम मंगल कामनाएं, उनकी प्रेरणाएं, उनके आदर्श सदैव हम सबके साथ बने रहेंगे। वे भौतिक रूप से भले ही हमारे साथ ना हों, उनकी अदृश्य शक्ति पूरे समाज को, अणुव्रत आंदोलन को और अहिंसा के क्षेत्र में किए जा रहे हम सबके प्रयासों को मिलती रहेगी। आचार्य श्री महाश्रमण में हमें उनका ही रूप प्रतिबिम्बित दिखेगा और अब आचार्य श्री तुलसी व महाप्रज्ञ के अधूरे सपनों को महाश्रमणजी पूरा करने का प्रयास करेंगे।

ऐसे अद्भुत, अलौकिक और युगप्रणेता महामानव को हम सबकी ओर से कोटिशः प्रणाम।

समता भवन के पास, रायपुर
भीलवाड़ा (राजस्थान) 311803

जन-मन की आस्था के केन्द्र : महाप्रज्ञ

.....पृष्ठ 9 का शेष

दी जाती है। आचार्य महाप्रज्ञ विश्वस्तरीय ख्याति प्राप्त विद्वान बने क्योंकि देश-विदेशों को व्यापक कार्यक्रम दिया। उन्होंने आई.क्यू., ई.क्यू., पी.क्यू. से बेहतर एस.क्यू. को दर्जा दिया। एस.क्यू. का विकास करने वाला स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की सोच लिए जीता है। आत्म कल्याण और मानव कल्याण को प्राथमिकता देता है।

बीसवीं इक्कीसवीं सदी के महानायक ने देश को अनेक बहुआयामी दृष्टि दी। साहित्य संधान के उपक्रम दिए। वैचारिक विश्वास के वातायन दिए। यहीं उनकी खोज का कारवां रुका नहीं, थमा नहीं। उन्होंने विश्व प्रज्ञा का नया प्रकल्प दिया। जो देश की हर कौम को मानवोचित करुणा, संवेदना, दया, अहिंसा, क्षमा का महाप्रसाद देता रहेगा। जो अंगों की तरह अच्छी आदतों का प्रत्यारोपण करता रहेगा। नये समाज की कल्पना का सपना साकार करेगा। विश्व प्रज्ञा अखिल विश्व को देगा नैसर्गिक ज्ञान, आत्मा का ध्यान और अपने प्रभु के साथ रहने का अहसास। युग प्रधान आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी हम स्वयं को जानें, स्वयं को देखें। अर्हता सम्पन्न बनें। असीम शक्तियों को पहचानें।

नमन महामानव को जिसने दिया सदी को उजारा।
नमन युगप्रधान को जिन्होंने राष्ट्र की छवि को निखारा।

www.terapanthinfo.com

अहिंसा के जीते जागते प्रतीक

मुनि विनयकुमार 'आलोक'

भारतीय संस्कृति विभिन्नता का द्योतक मानी जाती है। यहाँ पर विभिन्न धर्म, संस्कृति, सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। इस संस्कृति के मूल्यों की रक्षा के लिए यहाँ अनेक महापुरुष, संत हुए हैं; जिन्होंने संस्कृति, धर्म और नैतिक मूल्यों, अध्यात्म का संरक्षण ही नहीं किया लोगों को मार्गदर्शित कर इस पंथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। इन्हीं महापुरुषों ने व्यक्ति के विचारों को नये आयाम देकर परिवर्तन की राह दिखाई।

आध्यात्मिक क्षेत्र में प्राचीन काल से विभिन्न महापुरुषों भगवान महावीर, बुद्ध, ईसा-मसीह हुए; जिन्होंने अपने उपदेशों के द्वारा अपने अनुयायियों का मार्ग प्रशस्त किया, अहिंसा का मार्ग दिखाया। वर्तमान जगत जहाँ एक और विज्ञान और तकनीक के विकास से सुसज्ज हैं, वहीं हिंसा लोभ और घृणा से उद्वेलित भी हैं। अतः अनिवार्य हो जाता है कि आज शैक्षणिक योजनाओं में अहिंसा सैद्धांतिक और व्यावहारिक शिक्षण को प्रमुखता दी जाय।

व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विलय के उपरांत ही कोई साधक महात्मा की स्थिति प्राप्त करता है। आधुनिक युग में ऐसे ही संत हुए जिन्होंने अपने अनुयायियों को भाईचारा, अहिंसा और अणुव्रत के माध्यम के एक सुव्यवस्थित जीवन जीने की कला सिखाई वे संत थे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के नाम से जाने जाते हैं। उन्होंने अपने ही जीवन काल में युवाचार्य से आचार्य पद पर आरूढ़ किया; जो तेरापंथ संप्रदाय के दसवें आचार्य के पद पर शोभित हुए। तेरापंथ में हुए पूर्व आचार्यों में ऐसा कोई आचार्य नहीं है जिनके जीवन काल में ही पद छोड़कर किसी को आचार्य पद पर आसीन किया है। तेरापंथ धर्मसंघ में केवल एक ही आचार्य तुलसी ऐसे हुए जिन्होंने अपने जीवन काल में ही आचार्य पद से मुक्त हुए। युवाचार्य को आचार्य पद पर आसीन किया। यह सच में इस संघ की ऐतिहासिक घटना ही है। आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक थे। वे चलते-फिरते विश्वविद्यालय थे। धर्म, विज्ञान, भारतीय साहित्य सभी में आपश्री की विशेषता थी। आचार्य महाप्रज्ञ अलोकिक प्रतिभा के धनी थे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने धर्म को सहजता से जोड़ा। सहजता से अपनाए जाने पर जोर दिया। उनका मानना था कि खिड़कियों को बंद करना जानता है, वही व्यक्ति अपने जीवन में खुश रह सकता है। साधना के क्षेत्र में उन्होंने सशक्त सूत्र दिया 'रहें भीतर जीएं बाहर'। उनका मानना था कि पूजा-पाठ करने से, वह धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करने से कुछ नहीं होता है। इससे तो अच्छा है कि व्यक्ति स्वयं अपने आप में आचरण लाये।

जैन धर्म में कहा गया है कि मनसा-वाचा-कर्मणा किसी को कष्ट न पहुँचाये। यह तथ्य महाप्रज्ञ के जीवन में चरितार्थ होता है। उन्होंने अपने संघ को हमेशा एक सूत्र में बांधकर रखा, वह कभी-भी किसी को कठोर वचन न कहे। उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाया।

समय के साथ परिवर्तन होते रहते हैं और परिवर्तन वर्तमान की आवश्यकता भी बन चुका है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस परिवर्तन की नित्यता को समझा और स्वीकारा तथा उसे वैज्ञानिक अनिवार्यता के सामंजस्य को बनाकर, उचित मार्ग प्रशस्त किया।

वर्तमान में भारत में आतंकवाद, साम्प्रदायिकता आदि को देखकर, उसे दूर करने के लिए 5 दिसंबर 2001 को राजस्थान के सुजानगढ़ से अहिंसा यात्रा शुरू की थी। जो अहिंसा की महत्ता स्थापित करने के लिए शुरू की गयी थी। यह यात्रा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, दमन, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ होते हुए 4 जनवरी 2009 को पुनः सुजानगढ़ आकर समाप्त हुई।

जब अहिंसा यात्रा प्रारम्भ हुई तो यह भारत के विभिन्न प्रांतों से होकर गुजरी। उस समय महाप्रज्ञ को यह अनुभव हुआ कि भारत में गरीबी, भूख अभी तक विद्यमान है। क्योंकि उन्होंने बहुत करीब से इस समस्या का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। उनका अनुभव था कि वर्तमान अर्थ-व्यवस्था के परिणाम स्वरूप गरीबों के साथ अन्याय हो रहा है और अमीर लोग और अमीर होते जा रहे हैं। उनके अनुसार हमारे देश की अर्थव्यवस्था इस प्रकार की हो जिससे सभी का कल्याण हो। गरीबी की समस्या में उनका मत यह था कि इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था जिम्मेदार है।

उन्होंने अहिंसा यात्रा के दौरान अनेक प्रयोग भी किये। अहिंसा के पद पर आरूढ़ होकर अहिंसा के अभेद प्रभाव से जन-जन को प्रेरित प्रभावी करने का प्रयत्न किया। उन्होंने युग की नब्ज को पहचानकर संसार की वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए, नूतन संदेश जन-जन तक पहुँचाया। उनकी राष्ट्र के प्रति भावना भी उच्च कोटि की थी। आचार्य महाप्रज्ञ ने विभिन्न आयामों को उद्घाटित करते हुए ज्ञान का आलोक प्रदान किया। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी हर जगह, हर व्यक्ति तक पहुँचती है, उसी प्रकार उन्होंने अपने संदेशों से हर व्यक्ति का जीवन प्रकाशित किया। संवेदनशीलता, सहृदयता, श्रमशीलता, सरलता उनके सहज-सरल गुण थे, जिसकी वजह से हर व्यक्ति उनसे प्रभावित था।

उन्होंने जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा वर्तमान समस्याओं का समाधान किया जो अपने आप में बहुत बड़ी देन है। वे अहिंसा के जीते-जागते प्रतीक थे। उन्होंने आध्यात्मिकता के आदर्शों को अपने जीवन में साकार करने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया।

www.terapanthinfo.com

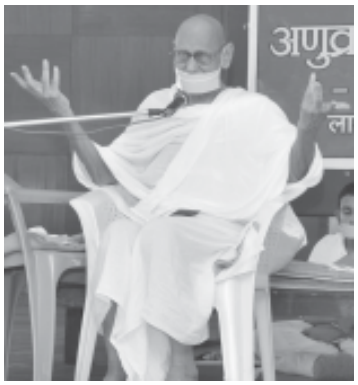

राष्ट्र चेतना के युग पुरुष

भजनलाल महोबिया

श्री रामचरित मानस में 'भरत' मिलाप प्रसंग पर भगवान श्रीराम की युक्ति 'करम-वचन मानस विमल, तुम समान तुम तात' आचार्य महाप्रज्ञजी के संबंध में भी कही जा सकती है। विश्व मानवतावाद की हिलोरें जिस मस्तिष्क में स्पंदित होती दिखाई देती थीं, अब वह इस भौतिक जगत से नाता तोड़ चुका है। 'बहुत चलई सो नीर न होई।' एक व्यक्ति हजारों-हजार ग्रन्थ रूपाइत कर दे, पर मूल्य उनका तभी है, जब उसकी वे समस्त कृतियां युग के पर्दे को चीरने में समर्थ हों, सार्थक अभिव्यक्ति उनमें देखी जा सके, युग-परिवर्तन बोध के साथ शाश्वत प्रेरणा उनसे मिलती रहे, हर युग और हर समय में वे विश्व को दिशा बोध कराती रहें। कहने का तात्पर्य है उनका सार्वकालिक महत्त्व हो। 'कृति' में जो दिग्दर्शित होता है, वह कृतिकार के महत्त्व, उसके व्यक्तित्व की प्रौढ़ता और विशालता को इंगित करता है। उसके व्यक्तित्व की व्यापकता का कोई मापदण्ड नहीं होता है। साथ ही वह किसी एक दायरे में घिरा हुआ नहीं होता। वह सबका और सब उसके होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे ही महापुरुष, महाज्ञानी, महान विचारक और महान चिंतक थे। मुझे नहीं लगता कि उन्नीसवीं या बीसवीं सदी में उन जैसा आत्मज्ञानी, शिक्षाविद्, विचारक और विविध विषयों का इतना अधिक अध्येता कोई अन्य रहा हो। उनका सम्पूर्ण जीवन और 200 से अधिक कृतियां तथा स्फुट लेख आज हमारी विरासत हैं जिन पर हमें गर्व है। अपेक्षा है कि उनके प्रति हम कृतज्ञ बनें। यह सोचे और विचारे बिना कि जैन धर्म की एक शाखा तेरापंथ श्वेतांबर सम्प्रदाय के वे सर्वोच्च आदर्श थे।

आचार्य महाप्रज्ञ का प्रथम दर्शन-लाभ मुझे 1991 में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के द्वितीय अधिवेशन के अवसर पर लाडनूं में मिला। गणाधिपति आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, मुनि सुखलाल के सान्निध्य में आने का वह मेरा पहला अवसर था। प्रेरणा श्रोत थे राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हीरालाल श्रीमाली एवं डॉ. एस.एन. प्रसाद। अणुव्रत महासमिति दिल्ली की राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जिसका लक्ष्य नैतिक जागरण और मानव-चरित्र निर्माण से है।

उक्त अधिवेशन में गणाधिपति के आह्वान पर आजीवन समयदानी और अणुव्रती बनने का मैंने संकल्प लिया। तब से आज तक मेरी पर्यन्त सक्रियता बनी हुई है। अविभाज्य म.प्र. से लगातार प्रादेशिक संयोजक के रूप में मेरा जीवन समर्पित होता आ रहा है। आचार्य तुलसी के अवसान के बाद महाप्रज्ञजी के और भी निकट आने और जीवन सार्थक करने का सौभाग्य मुझे मिलता रहा। आचार्यश्री के व्यक्तित्व की यह खूबी रही है कि एक बार जिसने उनके दर्शन कर लिए हमेशा के लिए वह उनका हो गया। विलक्षण प्रतिभा महाप्रज्ञ में थी, दैवीय चमत्कार ही जिसे कहा जा सकता है। त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में जो डूंगरगढ़ (बीकानेर) में 12 से 14 मार्च 2010 को आयोजित की गई, अंतिम बार आचार्यजी के दर्शन लाभ और आशीर्वाद मेरे जीवन की एक विशेष घटना बन गयी है। आचार्य महाप्रज्ञजी की प्रेरणा और आशीर्वाद स्वरूप दिल्ली में अणुव्रत महासमिति द्वारा 'अणुव्रत सेवी अलंकरण' से मुझे सम्मानित किया गया और जहाँ उनका सरदारशहर में महाप्रयाण हुआ, राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के अधिवेशन में व्यसन-मुक्ति के संबंध से किये गये परिणाममूलक प्रयास के फलस्वरूप आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। अपने जीवन को जिससे मैंने धन्य माना। गणाधिपति आचार्य तुलसी और उनके बाद आचार्य महाप्रज्ञ की वाणी में गजब का जादू था। एक-एक शब्द एक-एक वाक्य जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला होता। सौभाग्य है उनका जिन्हें अच्छे गुरू का सान्निध्य मिले, वैसे ही अच्छा शिष्य मिले गुरू का भी सौभाग्य होता है। योग्य गुरु से भी अधिक योग्य शिष्य महाप्रज्ञ जी इसके आदर्श हैं। राष्ट्र निर्माण तो उनका लक्ष्य था ही, उससे पहले मानव निर्माण पर ध्यान अधिक केन्द्रित था। इसके लिये वे मनुष्य के मस्तिष्क परिवर्तन के हिमायती थे। 'ध्यान' को इसके लिये उन्होंने मंत्र के रूप में प्रस्तुत किया। ध्यान को परिभाषित करते हुए उनका कहना था कि भीतर की चेतना जग जाए, वह सक्रिय हो जाये। उनका कहना था कि मानव की चेतना सोई-सोई सी रहती है। जाग्रत नहीं होती। बाहर से जागरण सा लगता है, सक्रियता लगती है। पर भीतर में इतनी गहरी मूर्च्छा और मोह है कि सच्चाई का पता ही नहीं लगता। इसलिये कहा गया

'जानामि धर्म न चमे प्रवृत्ति जानाम्यधर्म न च मे निवृत्ति' मैं धर्म को जानता हूँ पर उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं है। मैं अधर्म को जानता हूँ पर उसमें मेरी निवृत्ति नहीं है। इसका तात्पर्य है कि आदमी धर्म को जानते हुए भी उसका आचरण नहीं कर पा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ की इस संबंध में धारणा थी कि आदमी अपने में परिवर्तन करना नहीं चाहता, पर दूसरे में परिवर्तन देखना चाहता है। आज तक दुनिया में ऐसा नहीं हुआ कि आदमी स्वयं तो बदले नहीं और दूसरों को बदल डाले। यदि दूसरे को बदलना है, तो पहले स्वयं को बदलना होगा।

आल्हा कुंज रांझी बस्ती (मेन रोड)
रांझी, जबलपुर – 482005 (म.प्र.)

www.terapanthinfo.com

अध्यात्म-जगत की महान् क्षति

देवेन्द्र कुमार हिरण

भारत गणराज्य का एक चिर-परिचित व्यक्तित्व आचार्य महाप्रज्ञ। काल के भाल पर कुमकुम उकेरने वाले सिंह पुरुष का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान के सजग प्रहरी, विश्व शांति और अहिंसा के प्रखर प्रवक्ता, युगीन समस्याओं के समाधानकर्ता, 21वीं सदी के युग प्रधान आचार्य महाप्रज्ञ। प्रज्ञा और पुरुषार्थ की समन्विति, विनय और विवेक की अभिव्यक्ति एवं श्रद्धा तथा समर्पण की संस्कृति थे आचार्य महाप्रज्ञ। पवित्र संतता के प्रतीक, अणुव्रत अनुशास्ता, अहिंसा यात्रा के पुरोधा एवं स्वस्थ जीवन शैली के प्रयोक्ता व प्रवक्ता थे आचार्य महाप्रज्ञ। यशस्वी गुरु के यशस्वी शिष्य एवं महावीर वाणी के भाष्यकार में ज्ञान की गंगा, साधना की सरस्वती और लोक कल्याण की कालिन्दी का संगम स्थली थे। प्राचीनता एवं नवीनता के सेतु व प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रेरणा स्रोत थे। ऐसे आचार्य महाप्रज्ञ के संबंध में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ को मैं एक ऐसे मनीषी के रूप में देखता हूँ, जो आठ दशकों से तपस्या में लीन है और जिनकी उपस्थिति देश में शांति के प्रसार के साथ-साथ आध्यात्मिक समृद्धि को बढ़ाती है।

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म राजस्थान के टमकोर ग्राम में सन् 1920 में हुआ। 11 वर्ष की अवस्था में आचार्य कालूगणी द्वारा सन् 1931 में भागवती दीक्षा ग्रहण की। आचार्य तुलसी की पाठशाला के विद्यार्थी रहे। सन् 1944 अग्रगण्य पद पर नियुक्ति। निकाय सचिव पद पर प्रतिष्ठापना हिसार में सन् 1966। महाप्रज्ञ विशेष अलंकरण आचार्य तुलसी द्वारा गंगाशहर में वर्ष 1978। युवाचार्य पद का मनोनयन राजलदेसर में सन् 1979। जैन योग पुनरुद्धारक सम्मान लाडनूं में सन् 1986। आचार्य पद की घोषणा सुजानगढ़ में वर्ष 1994। आचार्य पद अभिषेक समारोह नई दिल्ली वर्ष 1995। धर्मसंघ द्वारा युगप्रधान अलंकरण टोहाना में वर्ष 1998। युगप्रधान अलंकरण अभिषेक समारोह नई दिल्ली में वर्ष 1999। अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मेन ऑफ द इयर इंग्लैण्ड व अमेरिका द्वारा वर्ष 1999। अहिंसा यात्रा का शुभारंभ सुजानगढ़ से वर्ष 2001। धर्मसंघ में सर्वाधिक वय प्राप्त आचार्य वर्धापन समारोह मुम्बई वर्ष 2003। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार सम्मान नई दिल्ली वर्ष 2003। लोक महर्षि सम्मान नवी मुम्बई वर्ष 2003। ब्रह्मऋषि सम्मान जलगांव वर्ष 2004। धर्मचक्रवर्ती सम्मान बैंगलोर वर्ष 2004। महात्मा अलंकरण सम्मान रतलाम वर्ष 2004। साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मान वर्ष 2005।

21वीं सदी का महान् व्यक्तित्व युग प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ अचानक ही इस नश्वर संसार से महाप्रयाण कर गये। आप सरदारशहर प्रवास पर थे। अकल्पनातीत घटना घटित हो गई। पूरे देश में शोक की लहर छा गयी। महाप्रयाण के चार घंटे पूर्व ही सरदारशहर के श्रीसमवसरण के मध्य हजारों भाई-बहिनों की उपस्थिति में प्रवचन करते हुए आपने कहा हर व्यक्ति जीने की चाह रखता है, पर मृत्यु आ जाती है। आचार्य महाप्रज्ञजी का यह अंतिम प्रवचन था। क्या पता था कि चार घंटे पश्चात ही राष्ट्र का यह युगपुरुष इस नश्वर संसार से विदा ले लेगा।

आचार्य महाप्रज्ञजी के अचानक महाप्रयाण से राष्ट्र के धार्मिक जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई है। विश्व व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ जी भारत के इतिहास में एक आध्यात्मिक युग पुरुष के रूप में सदैव अमर रहेंगे।

उस युग पुरुष के श्रीचरणों में सादर श्रद्धांजलि समर्पित।

'देवरमण', गंगापुर (राजस्थान)

विलक्षण एवं मनीषी संत

आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत के पाठकों के दिल-दिमाग में पूरी तरह छाये हुए थे। अणुव्रत, युवादृष्टि, राजस्थान पत्रिका का 'तत्त्व बोध' स्तम्भ तथा टी.वी. प्रसारण ये सब हमारे मन-मस्तिष्क का पोषक, शान्तिदायक एवं आध्यात्मिक आधार बन चुके थे। उनके जाते ही एक बारगी तो अजीब सूनापन छा गया था। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ ही वहाँ महाप्राण महापुरुष चला गया है जो अब तक एक प्रकाश-स्तंभ की भांति जन-जन को सही जीवन जीने का दिशाबोध देता रहा है।

पारिवारिक जीवन, स्वास्थ्य, चिंता-तनाव, सफलता-असफलता, मानव धर्म, योग, प्राणायाम, सभी क्षेत्रों में मार्गदर्शन मिलता रहता था।

वे मानवता के मसीहा, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा व शांति यात्रा शान्ति के देवदूत और ज्ञान-विज्ञान व अध्यात्म की दृष्टि से एक विश्व शब्द-कोश (एनसाइक्लोपीडिया) से कम नहीं थे।

यद्यपि उनका विशाल कृतित्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है फिर भी ऐसा लगता है कि बाग तो यहीं है, पर बागवान बाग लगा कर चला गया। उस कालजयी, युगचेता, राग-द्वेष मानापमान से पूरे एक विराट व्यक्तित्व एवं सच्चे संत के रूप में वे सदैव स्मरणीय रहेंगे, और उनकी स्मृति हमें अभिप्रेरित करती रहेगी।

आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक का हम हृदय से स्वागत अभिवंदन करते हैं और आशा करते हैं कि वे उस विराट ज्ञान को जो उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ से प्राप्त किया है, उसे प्रदान कर हमें उनकी रिक्तता का अनुभव नहीं होने देंगे।

■ **रूप नारायण काबरा,** वैशालीनगर-जयपुर

दिव्य ज्योति - महाप्रज्ञ

इकराम राजस्थानी

टमक टमककर ताकता,
खड़ा गांव-टमकोर!
महाप्रज्ञ वो आ रहे;
देवलोक में शोर!!

जीवन भर करते रहे,
मानव का कल्याण!
'महाप्रज्ञ' ने अब किया;
जग से महाप्रयाण!!

सदियों धरती तप करे,
बरसों करे पुकार!
तब आते हैं जगत में;
'महाप्रज्ञ' इक बार!!

जिनकी पावन धूलि से,
सुरभित धरती धाम!
देवलोक तक गूंजता;
'महाप्रज्ञ' का नाम!!

देवलोक से आ गए,
लेकर पुष्प विमान!
'महाप्रज्ञ' को ले गए;
'महावीर' भगवान!!

सदी सिसकती रह गई,
नयनों, झलके नीर!
'महाप्रज्ञ' को ले गए;
आकर खुद महावीर!!

महाश्रमण ने पा लिया,
उनसे सारा ज्ञान!
आगे तेरापंथ की,
उनके हाथ कमान!!

पंचतत्व में मिल गया,
जब जीवन का तत्व!
महाप्रज्ञ ने पा लिया;
जीवन में अमरत्व!!

1ख, 10, हाऊसिंग बोर्ड,
शास्त्रीनगर, जयपुर – 302016

महायोगी कहाँ से लाएं...

साध्वी जिनबाला

महायोगी कहाँ से लाएं ?
दसमें अधिशास्ता श्री महाप्रज्ञ का ध्यान लगाएं।।

महाप्राण का महाप्रयाण यह क्षति विश्व की भारी।
कहाँ मिलेगा वैसा चिंतन-मंथन विस्मयकारी।
उद्घाटित वह नयन तीसरा अमृत रस बरसाएं।।

शासन की पुण्याई मिल गए महाप्रज्ञ शुभयोगी।
सदियों सहस्राब्दियों बाद जन्मता ऐसा योगी।
दिग्दिगन्त में फैली अनुपम गण की कीर्तिध्वजाएं।।

सूक्ष्म अहिंसा की व्याख्या सुन मानवता मुसकाई।
तेरे साथ जुड़े थे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।
है आभारी मानव जाति पाई नई दिशाएं।।

नहीं भूलेंगे तेरी कोमल वह अनुशासन शैली।
समता, क्षमता, ममता की धारा बहती अलबेली।
करुणा सागर सन्निधि खोकर मानस ये मुरझाए।।
हम सभी के मन में स्मृतियां पल-पल आए।।

करुणा के महासागर

साध्वी कोमलप्रभा

करुणा के महासागर थे फिर कैसे यह निष्ठुरता आई।
बिना सूचना कैसे कर ली? लाखों दिल से प्रभो! जुदाई।।

युवाचार्य को सौंपा सबकुछ सारा वो प्रोग्राम बनाते।
अपने दिल की छोटी-मोटी सारी बातें उन्हें बताते।
बिना बताये कैसे ले ली? सदा-सदा के लिए विदाई।।

प्रभो! आपके धर्मसंघ को अनमोल संदेश दिराते।
मंत्र शक्ति के ज्ञाता हो तुम सबको मंत्र अरे बकसाते।
खुले दिल के दाता थे फिर क्यों उदारता नहीं दिखाई।।

मेरे मन की इस उलझन को एक बार आकर सुलझाओ।
इन उदास चेहरों में नूतन पुलकन भरने तुम आ जाओ।
धर्मसंघ की श्रद्धाभक्ति कैसे तुमको नहीं लुभाई।
कहाँ गये इतना बतला दो कोमल कलियां ये कुम्हालई।।

आचार्य महाप्रज्ञजी के देहावसान से महान स्तंभ ढह गया है। वे महान् विद्वान एवं तपस्वी संत थे। आचार्य तुलसी ने उन्हें कढ़ा था। अपने आध्यात्मिक जीवन में वे ऐसे विचार छोड़ गए हैं कि सम्पूर्ण विश्व उनके व्यक्तित्व को प्रणाम करता रहेगा।

मुझे तो 'सुधर्मा सभागार' लाडनूं में उन्हें सुनने का अनेक बार अवसर मिला है। साथ संग हमें आजीवन प्रेरणा-पथ प्रदान करता रहेगा। पुण्यात्मा महाप्रज्ञजी के चरणों में विनम्र प्रणाम।

■ **डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी,** प्रधान संपादक : जयतु हिन्दू विश्व पत्रिका कानपुर

गुरु का आशीर्वाद

जिनेन्द्र जैन

परम वन्दनीय आचार्य महाप्रज्ञजी वर्तमान युग के महान प्रभावक धर्मगुरु और विलक्षण प्रतिभा के धनी सदी के महात्मा थे। धर्म संस्कृति के इतिहास में कुछेक महापुरुषों के नाम के संगत महात्मा संबोधन लगा है। महाभारत काल में महात्मा विदुर हुए, जो प्रखर विद्वान और न्याय शास्त्र ज्ञाता थे, महात्मा बुद्ध और महात्मा महावीर का अवतरण हुआ। जिन्होंने अपनी करुणा, सौम्यता, आध्यात्मिकता और ज्ञान-दर्शन-चरित्र के गुणों से सकल जगत का मार्गदर्शन किया। महात्मा फूले भी इसी युग के महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने समाज के अति दुर्बल, गरीब एवं दलित वर्ग को वाणी दी। महात्मा गांधी और महात्मा तुलसी तो समकालीन ही थे। यद्यपि ये दोनों महात्मा कभी एक-दूसरे से मिल नहीं पाये, लेकिन दोनों ही युगान्तकारी और अध्यात्म क्रांति दृष्टा थे। दोनों के विचारों और कार्यक्रमों में विशेष भेद नहीं था। विचारों की समानता के कारण दोनों स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के पूरक माने गये सिद्धांतों के आधार पर लोगों ने माना।

महात्मा गांधी ने अहिंसा को क्रांति के रूप में अनुभव किया। उन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने के लिए चल रहे आंदोलन में अहिंसा और सत्य को प्रमुखता दी। फलतः विश्व के जिन देशों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन चल रहे थे उसमें हिंसा और मारकाट के स्थान पर अहिंसा और सत्याग्रह महत्त्वपूर्ण हो गये। महात्मा गांधीजी की अहिंसक क्रांति की ढाल से शानदार हो पाया। कामयाबी मिली तब देश में स्वराज्य स्थापित हो गया।

लेकिन इस स्वराज्य प्राप्ति की हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। देश का विभाजन हो गया। यही नहीं जिन लोगों ने सत्ता संभाली उनमें ऐसे लोगों की संख्या बढ़ने लगी जो देशभक्ति और जन सेवा की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थों और निजी आकांक्षाओं को ज्यादा महत्त्व देने लगे थे। आजादी पाने के बाद भी देशवासी स्वयं को ठगे गये जैसा महसूस करने लगे थे। ऐसे में देश को बनाने स्वराज को सुराज में बदलने का बीड़ा उठाया महात्मा तुलसी ने। उन्होंने अणुव्रत क्रांति का श्रीगणेश किया। महात्मा तुलसी की अणुव्रत क्रांति की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इनमें सरकार की सहायता नहीं ली। उन्होंने अपने विराट एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व के बल पर आम जनता को इस महाभियान में सम्मिलित किया। इस प्रकार से भी एक अनूठा प्रयोग था।

यह वह समय था जब महात्मा गांधी निराश होकर कहने लगे थे कि मैं सवा सौ साल जीवित रहना चाहता था, लेकिन देश की वर्तमान दयनीय हालत मुझसे देखी नहीं जाती। अपने ही लोग अपने ही लोगों के साथ बेशर्म व्यवहार कर रहे हैं। अतः मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मैं अब जीवित नहीं रहना चाहता.....। इस मायने में महात्मा महाप्रज्ञ महात्मा गांधी से अधिक दृढ़ संकल्प प्रतीत होते हैं। वे महात्मा गांधी जी की तरह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की स्थितियों से निराश प्रतीत नहीं होते। अपने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से वे स्वराज को सुराज में बदलने हेतु गतिशील और सक्रिय हो गये। देश के अग्रणी महानुभावों ने अणुव्रत आंदोलन की सार्थकता अनुभव की और धीमी रफ्तार से ही सही, लेकिन समग्र देशवासियों का ध्यान उन्होंने इस दिशा में आकृष्ट किया। महानायक महात्मा महाप्रज्ञ परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के सर्वोत्तम उत्तराधिकारी थे। मेरी दृष्टि से महात्मा महाप्रज्ञ विश्व धर्म इतिहास में वर्णित समस्त महात्माओं के खास-खास गुणों को स्वयं में संजोये हुए थे। ये प्रज्ञा और ध्यान योग से सम्पन्न थे। महान दर्शनिक थे, कवि, साहित्यकार और मनीषी थे। गंभीर से गंभीर विषय को सहज ढंग से समझाने की अपूर्व क्षमता के द्योतक थे। महात्मा महाप्रज्ञ भारतीय संस्कृति जैन आगम के ज्ञाता थे। आगम सूत्रों व्याख्या भी वैज्ञानिक और आधुनिक संदर्भ में करते थे। यही कारण है कि ज्ञान पिपासु व्यक्ति, भले ही वह झोंपड़े में रहने वाले हों अथवा ऊँची अट्टालिकाओं में निवास करते हों उनकी अमृतवाणी का स्वाद चख रहा था। इनके प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत और अहिंसा दर्शन के नित नये प्रयोगों से मानव समाज के जीवन में आशा और विश्वास का संचार हुआ है। तेरापंथ धर्मसंघ को जन-जन तक पहुँचाने का आपने अथक प्रयास किया। बहुचर्चित अहिंसा यात्रा से समाज में समन्वय, भाईचारा और मैत्री भावना का विस्तार हुआ है। परम पूज्य गुरुदेव श्रीजी का जीवन तप एवं संयम का जीवन था। वे अहिंसावादी सिद्धांतों के सिर्फ दृष्टा ही नहीं प्रयोगकर्ता भी थे। इनका मानना है कि दुनिया से भागें नहीं, उसे और अधिक सुंदर बनाने का सतत् प्रयास करें। सचमुच महात्मा महाप्रज्ञ इस युग के आलोक स्तंभ थे। अपने आराध्य गुरुदेव महात्मा तुलसी के साथ आपने कोलकाता से कन्याकुमारी तक की धरा पर पदचिह्न अंकित किये। आपके सुयोग्य नेतृत्व में आपके उत्तराधिकारी युवाचार्य महाश्रमणजी भी विद्वानों, नेताओं, श्रमिकों, किसानों, विद्यार्थियों के सच्चे मानव धर्म मुख्य पथ प्रदर्शक के रूप में उभरे हैं। जैन श्रावक का अपने पूज्य गुरुदेव को अभ्यर्थना करना, उनकी सेवा करना, उन्हें प्रसन्न रखना पुनीत कर्त्तव्य माना जाता है। शास्त्रों में उल्लेख है कि जिस श्रावक पर गुरु का आशीर्वाद रहता है वह सदा-सदा आनन्दित प्रफुल्लित मन रहता है। गुरु के श्रीचरणों में नमन।

साभार : 'अमृत इंडिया' राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक, 10 मई, 2010

स्वर्ग बना धरती को चल दिये

महेन्द्र जैन

आज क्यों दिन में अंधेरा हो गया,
जो जगाता था हमें, क्यों सो गया।
कल तलक था जो हमारा पासबां,
आज न जाने कहां पर खो गया।।

नींद से जग को जगा कर चल दिया,
राह मंजिल की दिखाकर चल दिया।
जिसने इस जग को हंसाया रात-दिन,
फिर भला क्यों यूं रुला कर चल दिया।।

जिंदगी जीना सिखा कर चल दिया,
फूल मरुस्थल में खिला कर चल दिया।
वही नहीं इन्सां, कोई भगवान था,
स्वर्ग धरती को बना कर चल दिया।।

वह अहिंसा प्रेम की तस्वीर था,
हर समस्या के प्रति गंभीर था।
वह नहीं था सिर्फ भारतवर्ष का,
विश्व समुदाय की वह तकदीर था।।

त्याग-तप से भक्ति रस उसने पिया,
लोक हित में नौ दशक तक वह जिया।
वाणी में था युग पुरुष की वो असर,
युग की धारा को बदल कर रख दिया।।

पंथ को ऊंचा उठाना है हमें,
संयमित जीवन बिताना है हमें।
स्वप्न जो उसके अधूरे रह गए,
उनको पूरा कर दिखाना है हमें।।

जैन सदन, 871, सेक्टर–13
हिसार (हरियाणा)

आचार्य महाप्रज्ञ को नमन:

मदनमोहन परिहार

''प्रज्ञ'' उतरियौ धरती माथै,
अंधियारे रो नास कियौ।
भटक्या मिनखां राह दिखाई,
जीणैं रो विस्वास दियौ।

हर मानड़ै रो भरम मिटायौ,
हर कांटें ने फूल बणायौ।
धरम-करम री अलख जगाई,
प्रेम-प्रीत रो पाठ सुणायौ।

कलपविरक्ष हो गुरु रो मनड़ौ,
सबरी इच्छा पूरी करता।
ग्यान-ध्यान री बरखा करने,
आसीसां सूं झोली भरता।

धरम त्याग ही व्रत होवै है,
संयम सूं मन बंधतौ जावै।
साच-अहिंसा, दया-भावना,
हर मनड़ै ने पवित्र बणावै।

सच मुकती रो सांचौ रसतौ,
ध्यान-तपस्या सूं पावौ सुख।
मोक्स मार्ग है अब अणुव्रत ही,
मिट जावै जनम-जनम रौ दुख।

खुद नै परखौ साफ करो मन,
अंकुस राखौ चित रै माथै।
किलयाण मिलख रो हो जावै,
पाल लगावौ मनड़ै माथै।

महाप्रज्ञ था चांद पंथ रा
तारां चैला-चैली सारा।
माला में बिंधिपौड़ौ सासन,
संत-सामणियां जग सूं न्यारा।

जैन धरम ने दिसा दिखाई
महावीर री सीख बताई।
भरम जाल में फंसयोड़ा री,
महाप्रज्ञ ने बांह छुड़ाई।

तेरा पंथ दिखावै मंजल,
जुड़तौ जावै भक्ती सूं जन।
संतौ जग नै जगा रयौ है,
महाप्रज्ञ रो ग्यान वचन।

याद करैला जुग-जुग थानैं,
तीर्थंकर बण ने आया जग में।
कदैही न छूटैला नातौ
बसग्या पेड़ा अब रग-रग में।

सेठ श्री रघुनाथदार परिहार धर्मशाला, जोधपुर 342001 (राज.)

तब होता है महाप्रज्ञ का जन्म

साध्वी कनकश्री

विश्व पटल पर घटित होने वाले बदलावों की तटस्थ समीक्षा करने वाले मूर्धन्य विचारकों की घोषणा है कि ईसा की 19वीं सदी यूरोप के वर्चस्व की सदी रही है और 21वीं सदी एशिया के वर्चस्व की सदी रहेगी। इस सदी में भारत और चीन शक्ति-संपन्न बन कर उभरेंगे। पूरे विश्व में उनका वर्चस्व उभरेगा। उसमें भी भारत तथा भारत में जन्मा कोई विशिष्ट संत पूरी दुनिया का आध्यात्मिक नेतृत्व करेगा।

इसी तथ्य से मिलती-जुलती बात कहते हैं अमेरिकन लेखक मार्कट्वीन। वे लिखते हैं–''इण्डिया इज ए कल्चर मिलीनियर'' अर्थात् भारत सांस्कृतिक दृष्टि से धन कुबेर देश है। वास्तव में पश्चिम की यह प्राचीन परंपरा रही है कि वह पूरब से प्रेरणाएं व संदेश लेता रहा है, खास कर भारत से। हीगल का विश्वास है यूरोपियन्स के मानस में भारत सहस्राब्दियों से वास करता है। इसी तरह की सोच फ्रेडरिक, श्लेजल, शेलिंग, हार्डर और शोपेन हावर भी रखते थे। इन्हीं लोगों ने सबसे पहले यह बात कही थी कि भारत चरम बुद्धि का स्रोत है। यह चिंतन सत्य के बहुत निकट प्रतीत होता है। क्योंकि भारत भूमि संतों, ज्ञानियों और योगियों की पवित्र भूमि है। यह देश संतों की साधना से संपत्तिवान है। यह देश संतों की साधना और तपस्या से निर्मल तथा तेजस्वी है। इसी देश ने विश्व को वेद, आगम, त्रिपिटक गीता रामायण जैसे अमर ग्रंथ दिये हैं, जिनके आलोक में विश्व-मानव अपने लक्ष्य-पथ पर निरंतर गतिमान रहता हुआ श्रेष्ठताओं, उत्कृष्टताओं का स्पर्श करता है।

कहते हैं जो राष्ट्र अपने अस्तित्व, अस्मिता, संस्कृति और परंपरा के प्रति सजग, सावचेत रहता है, जो चरित्र शक्ति से सम्पन्न है, जो सत्यनिष्ठ है जो युगधर्म से परिचित है, वह राष्ट्र ऐसे लाखों संतों, महापुरुषों को जन्म देता है, जो अपनी आत्म-ज्योति से विश्व को प्रकाशित करते हैं।

महान विभूति

आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे ही आत्मद्रष्टा महर्षि थे, जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा, प्रज्ञा और परम पुरुषार्थ के अगणित दीप उजलाए और जन-जन के अंत:करण में नैतिक, चारित्रिक, मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों के माणिक्य-स्तंभ रोपे। मात्र दस वर्ष की उम्र में जैन मुनि दीक्षा स्वीकार करने वाले महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व एक ऐसी मीनार थे, जिसे हम कहीं भी खड़े होकर देखें, वह प्रत्येक कोण से आसमान को छूती हुई दिखाई देती है। उनके विकास का पहला पायदान तुलसी विद्यालय के एक सहज, समर्पित, विनम्र, तर्कप्रवण, जिज्ञासु और प्रखर मेधावी छात्र के रूप में शुरू हुआ तथा एक मौलिक चिंतक व दार्शनिक युवासंत के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। विकास यात्रा में एक-एक पायदान पर आरोहण करते हुए उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त महान अध्यात्म गुरुओं में एक विशिष्ट पहचान बनाई। उनकी उपलब्धियों का लेखाजोखा करने से ज्ञात होता है, सफलता का हर एक पायदान स्वयं इनके पावों को न्यौता देता रहा और जिस किसी पायदान पर वे खड़े हुए, पूरी तरह सफल और कद्दावर नजर आए।

कर्तृत्व का सफरनामा

आचार्य महाप्रज्ञ के कर्तृत्व का सफरनामा जिन-जिन ऊँचाइयों का स्पर्श करता हुआ आगे बढ़ा, विश्व-क्षितिज पर सुनहरा मेघ धनुष बनकर छा गया। वे श्रेष्ठताओं के संग्रहालय थे। विचारों के विश्वविद्यालय थे। अभिव्यक्ति के विद्यापीठ थे। बौद्ध साहित्य में चार प्रकार के सर्वोत्तम बल बताए गए हैं। वे हैं–प्रज्ञाबल, वीर्यबल, अनवद्यबल और संग्रह बल। जिसे ये चारों बल प्राप्त होते हैं वह अलौकिक पुरुष होता है। आचार्यप्रवर का व्यक्तित्व उक्त चारों बलों का समवाय था।

प्रज्ञाबल

कहते हैं प्रतिभा साधना की पीठ पर सवार होकर ही दिग्विजय प्राप्त करती है। ध्यान-योग की उत्कृष्ट साधना द्वारा उनकी प्रज्ञा–अतीन्द्रिय चेतना जागृत हो गई। वे प्रज्ञा के अक्षय स्रोत बन गये। सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त विषयों के कार्य-कारण-समीक्षण पूर्वक जो ज्ञान होता है, वह प्रज्ञान कहलाता है। उस प्रकृष्ट ज्ञान भाव का उदय करने वाली चेतना का नाम प्रज्ञा है। प्रज्ञा प्राप्ति के लिए तप और सतत श्रम करना होता है। श्रुति के वचन हैं–''स तपोऽ तप्यत, सोऽ श्राम्यत स स्वेदोऽभवतु।'' श्रुत का गंभीर अध्ययन, ध्यान का गहरा अभ्यास, जप और योग के विविध प्रयोग इन्द्रिय-विजय, कषाय-विजय आदि की उत्कृष्ट साधना द्वारा उनकी अतीन्द्रिय-चेतना का जागरण हुआ। उसके द्वारा उन्होंने जीवन और जगत के सूक्ष्म रहस्यों को जाना और युग-युग की गंभीर समस्याओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा यात्रा, प्रचुर साहित्य सृजन–ये उनकी प्रज्ञा के ही प्रसून रहे हैं।

वीर्यबल

प्रत्येक व्यक्ति में जमीन से उठकर शिखर तक पहुँचने की सामर्थ्य है और शिखर तक पहुँचने से पहले उसे अनेक पहाड़ी घाटियों व विषम रास्तों को पार करना होता है। दृढ़ इच्छाशक्ति, संकल्पशक्ति और सतत पुरुषार्थ के द्वारा ही सिद्धियों के शिखरों का स्पर्श संभव है। सफलता के लिए लगातार कड़ी मेहनत करनी होती है। उसे बनाए रखने

के लिए उससे भी अधिक कड़ी मेहनत की अपेक्षा होती है।

कहते हैं दुनिया में जितनी भी असाधारण विभूतियां अवतरित हुई। उनमें से कोई भी मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा नहीं हुईं। उन्होंने छोटी उम्र में बड़े सपने देखे, उन्हें पूरा करने के लिए हाड़तोड़ मेहनत की और जब आसमान उनके चरण चूमने लगा, उन्होंने अपने पैर पूरी विनम्रता के साथ जमीन पर ही टिकाए रखे। ऐसे व्यक्तित्व ही अपने युग की महान उपलब्धियां होती हैं। इन्हीं व्यक्तित्वों से आने वाली पीढ़ियां अपने सपनों को सच करने के लिए ऑक्सीजन प्राप्त करती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ की विकास यात्रा में उनकी प्रबल पुण्यवत्ता और गुरुदेव श्री तुलसी का अमृतोपम आशीर्वाद का सहयोग तो था ही स्वयं उन्होंने अपने अध्यवसाय, परिश्रम और वीर्य के प्रस्फोट के द्वारा प्रगति के बहुआयामी वातायन खोले। अपनी सहज संवेदनशीलता, रचनात्मकता और अटूट श्रमशीलता से ही उन्होंने साधारण से असाधारणता की कक्षा में प्रवेश पाया। 90 वर्ष की उम्र में भी वे 27 वर्ष के युवा से भी बढ़कर श्रम किया। इस उम्र में देशव्यापी अहिंसा यात्रा के पुरोधा बनकर धर्मक्रांति का जो शंखनाद आचार्यप्रवर ने किया, वह उनके असीम वीर्यबल का प्रमाण पत्र है।

अनवद्य बल

इसका अर्थ है पुण्य बल या अध्यात्म बल। यह प्राप्त होता है समत्व योग से, कषायों के उपशमन से या वीतराग चेतना के जागरण से। आचार्यश्री के पवित्र आभामंडल के प्रभाव क्षेत्र में आने वाला हर व्यक्ति परम शान्ति और अनिर्वचनीय आनंद से सराबोर हो जाता था। जो एक बार उनका प्रवचन सुन लेता उसकी चेतना में रूपांतरण घटित हो जाता था। जिसकी भावधारा विशुद्ध होती है, उसका मन-मस्तिष्क सुंदर होता है। मस्तिष्क की सुंदरता देह की सुंदरता को शतगुणित कर देती है। आचार्य महाप्रज्ञ के सुदर्शन व्यक्तित्व से उनका अनवद्यबल अभिव्यक्त होता है।

लिंकन ने उम्र और आकृति के संबंध का विश्लेषण करते हुए लिखा—चालीस वर्ष के बाद प्रत्येक व्यक्ति अपने चेहरे के लिए स्वयं जवाबदार है। सामान्यत: एक उम्र के बाद आकृति आकर्षणहीन हो जाती है किन्तु साधकों, योगियों और ऋषियों की आकृतियां, मुख-मंडल दिनोदिन अधिक तेजस्वी, दीप्तीमान और आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। महात्मा गांधी के चित्रों का निरीक्षण करें, तीस वर्ष की उम्र में उनका जो व्यक्तित्व था, चालीस की फोटो में उनका जो व्यक्तित्व दिखाई देता है, वह पचास, साठ और सत्तर की उम्र में उत्तरोत्तर विकसित होता नजर आता है। सत्तर के गांधी अधिक सुंदर और प्रभावी देह संपदा के स्वामी प्रतीत होते हैं। अहिंसा के महान चिंतक, अध्यात्मयोगी आचार्य महाप्रज्ञ का तप: शरीर भी तीस, चालीस और पचास वर्ष की अवस्था में जितना आकर्षक और प्रभावी था, उससे कई गुणा अधिक सुंदर, स्वस्थ और आकर्षक जीवन के नौवें दशक में लगता था। उनकी उपासना में बैठने से अनुभव होता था, ऐसे अध्यात्मयोगी, संबुद्ध पुरुषों की उपस्थिति मात्र से आसपास का वातावरण पवित्र, शांत और आनंद के परमाणुओं से आपूरित हो जाता।

जो व्यक्ति संयम, संतुलन और उपशम का जीवन जीता है, जो सदा प्रसन्न और तनावमुक्त रहता है जो वर्तमान में जीता है और सकारात्मक सोचता है वह चिर युवा और चिर रमणीय होता है। तीर्थंकर कभी बूढ़े नहीं होते। इसका कारण है उनकी वीतरागता। आचार्य महाप्रज्ञ आत्मलीनता, अहिंसा और अनेकांत के मूर्तिमान प्रतीक थे। उन्होंने धर्मसंघ को अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा से ऊर्जस्वल बनाया।

संग्रहबल

आचार्य महाप्रज्ञ लोक संग्रह की मनोवृत्ति से सर्वथा अलिप्त रहे। फिर भी उनकी वीतरागी मुखमुद्रा, आत्मीयता भरे व्यवहार तथा मधुर मुस्कान बिखेरती वाणी अनायास ही लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती थी। उनके मौलिक विचारों, मार्मिक प्रवचनों एवं अमूल्य साहित्यिक कृतियों ने जहाँ देश-विदेश के मूर्धन्य विद्वानों, विचारकों एवं राजनेताओं को आकृष्ट किया, वहाँ जन-सामान्य को विशेषत: युवावर्ग को बेहद प्रभावित किया।

आचार्यश्री के आस-पास उमड़ती-मंडराती अपार भीड़ को देखकर उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता था इसी के आधार पर न्यू बॉम्बे की महानगरपालिका ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को लोकमान्य महर्षि के रूप में सम्मानित किया था।

उक्त सभी बलों से बलिष्ठ होते हुए भी उन्हें अपने बल का गर्व नहीं था। वे ज्ञानियों में अग्रणी रहे, फिर भी विनम्रता में उनकी कोई तुलना नहीं थी वे विराट् थे पर हर लघु इकाई में विराटता के दर्शन करते। छोटे-से-छोटे व्यक्ति या समूह को भी पूरा सम्मान देते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ ज्ञान के असीम सागर, विद्वता की पराकाष्ठा, विनम्रता के बेजोड़ उदाहरण थे। महाप्रज्ञ प्राचीन अर्वाचीन विधाओं के सर्वोच्च शिखर थे। जो भी व्यक्ति भारत की प्राच्य विधाओं की समृद्ध परंपरा से परिचित है, वह आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनुचिंतना और सर्जना से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हुए बहुआयामी चिंतक थे। वे मात्र उपदेश बांटने वाले धर्म-गुरु या बाबा नहीं, अपितु जीवन के हर अंधेरे कोने तक रोशनी पहुँचाने वाले ऋषि, दार्शनिक, व उच्च कोटि के लेखक थे। उन्होंने दो सौ से अधिक मौलिक ग्रंथ लिखे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने बीसवीं-इक्कीसवीं सदी की समस्त भारतीय विचारधाराओं का सफल नेतृत्व किया। प्रकृति के सभी शुभ तत्त्व जब अपने चरम उत्कर्ष पर होते हैं, तब कहीं महाप्रज्ञ जैसे अलौकिक महापुरुषों का जन्म होता है। महाप्रज्ञ जैसे दो-चार संत भी इस धरती पर आ जाएं तो निश्चित ही दुनिया उग्रवाद, आतंकवाद और आणविक महाविनाश से बच सकती है।

स्मृति गीत

आचार्य महाश्रमण

पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान
तव चरणों में सतत समर्पित श्रद्धामय सम्मान ॥
कितनों पर उपकार तुम्हारा,
भक्तों की आंखों का तारा,
सहृदयता की अविरल धारा,
दुःखित जगवत्सल विभुवर तुम करुणारत्ननिधान ॥
मृदु समुचित पथदर्शन करते,
आगन्तुक की पीड़ा हरते,
शोकाकुल में सम्बल भरते,
धरते हस्तकमल शिष्यों पर देते विद्या दान ॥
चिन्तन में चातुर्य खरा था,
वाणी में माधुर्य धरा था,
प्रवचन में गाम्भीर्य भरा था,
कैसेटों में रखा सुरक्षित सुन सकते मतिमान ॥
आर्हतवाङ्मय अनुसन्धायक,
सम्पादक अनुवादक वाचक,
तुलनात्मक टिप्पण व्याख्यायक,
जिन शासन की शान प्रभावक आगम-अनुसन्धान ॥
जैन योग के पुनरुद्धारक,
प्रेक्षाध्यान विधा सन्धारक
मैत्री नैतिक मूल्य प्रखारक,
शिक्षण संस्थानों में प्रचलित वर जीवन विज्ञान ॥
किया अहिंसा यात्रा द्वारा जन-जन का कल्याण ॥
कालू गुरुवर के व्याख्याता,
तुलसी प्रभु से गहरा नाता,
महाश्रमण के तुम हो त्राता,
शास्ता श्री भैक्षव शासन के गाएं गौरव गान ॥
नब्बे वर्षों का शुभ जीवन,
वत्सलता का शोभन उपवन,
'महाश्रमण' पावन संजीवन,
दीक्षा भू सरदारशहर में किया महाप्रस्थान ॥

लय : निहारा तुमको कितनी बार....

जय-जय ज्योति चरण

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

संघ हिमालय के शिखरों पर चढ़ो सभी हम साथ हैं,
धर्म सारथे! थामो वल्गा सबल तुम्हारे हाथ हैं।
जय-जय ज्योति चरण।
जय-जय महाश्रमण।

संघ हमारा प्राण संघ सबसे ऊँचा आश्वास है,
संघ हमारा त्राण संघ पर हम सबको विश्वास है,
रहे फूलते-फलते इसमें संघ सदा मधुमास है,
नए-नए तुम चांद उगाओ संघ विशद आकाश है,
श्रद्धा, सेवा और समर्पण इसका जग विख्यात है।।

दीवसमा आयरिया गण में सबको दीपित करते हैं,
देसकाल भावन्नू सबमें नूतन ऊर्जा भरते हैं,
उवणयनयनिउणो तेयंसी तमस जगत का हरते हैं,
[illegible]धम्मे दढ़धम्मे बनकर पल-पल सदा निखरते हैं,
निग्रह और अनुग्रह में अति निपुण हमारे नाथ हैं।।

सहनशीलता अनुशासन के गण में घोष बुलन्द हैं
रचते जाएं सामंजस्य समन्वय के नव छन्द हैं,
संयम समता की जीवन में बढ़ती रहे सुगन्ध है,
संघ हमारा नीड़ शुभंकर विहग सभी निर्द्वन्द्व हैं,
सदा सकारात्मक भावों की विपुल यहां बरसात है।।

तेरापंथ संघ में अभिनव युग की यह शुरूआत है,
कुशल शासना महाश्रमण की खिले नए जलजात हैं,
लिखो नया अध्याय आर्यवर! हर पन्ना अवदात है,
तुलसी महाप्रज्ञ देखो दायें-बायें साक्षात हैं,
संघ पुरुष हो सदा चिरायु उजला आज प्रभात है।।
जय-जय ज्योति चरण।।
जय-जय महाश्रमण।।

आचार्य महाश्रमण के ज्ञान, अध्यापन, शील स्वभाव एवं सादगीपूर्ण व्यवहार, एवं सबसे अधिक उनकी संघ में ठोस आस्था का अंकन किया गया। युवाचार्य महाप्रज्ञ एवं गुरुदेव तुलसी की नजरों में वे दिन-प्रतिदिन उठते चले गये। आचार्य तुलसी उनको अघोषित उत्तराधिकारी की तरह तैयार कर ही गये थे, तो आचार्य महाप्रज्ञ ने भी बहुत जल्द ही अपना युवाचार्य घोषित कर दिया। महाश्रमणजी उसके बाद उनके दाहिने हाथ बन गये, एवं हर प्रवृति व कार्य में सहभागी बन गए।

निस्पृह व्यक्तित्व
आचार्य महाश्रमण

विजयराज सुराणा

नन्हा-मुन्ना, बालक मोहन, मुनि मुदित, युवाचार्य महाश्रमण जीवन की अनेक सीढ़ियों का आरोहण करते-करते बन गया है तेरापंथ धर्मसंघ का 11वां आचार्य महाश्रमण। हर व्यक्ति प्रतिदिन अपने घर-कार्यालय की रोजाना कई मंजिल की सीढ़ियां चढ़ता-उतरता रहता है। महाश्रमणजी ऐसी सीढ़ियां अपने दैनदिनी कार्यों से उतरे-चढ़े हैं, परन्तु उसके अलावा, विद्याध्ययन, ज्ञान अर्जन, प्रज्ञा जागरण आगम अध्ययन व मंथन आदि की ऐसी विलक्षण सीढ़ियों को मापा व लांघा है, जिससे वे आज संघ के इस सर्वोच्च स्थान पर आसीन है, जैसे तेनजिंग उबड़-खाबड़ व खतरनाक राहों को लांघते हुए पहुँचे एवरेस्ट के सर्वोच्च शिखर पर।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री पद पर आसीन होना, सेना का कमाण्डर बनना या हाईकोर्ट/सुप्रीमकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनना, ऐसे अनेकों सर्वोच्च पद हैं, जिन पर आसीन होना या उन तक पहुँचने की अपनी-अपनी अलग-अलग अर्हताएं होती हैं। वे अर्हताएं हासिल होने पर ही उस मुकाम तक पहुँचा जा सकता है एवं राष्ट्र में उनके प्रति एक विशेष आदर व मनोभाव होता है, परन्तु एक ख्यातनाम वृहत धर्मसंघ का आचार्य पद पर पर आसीन होना अपने आप में विशेष बात है। जो उसके इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाती है।

बचपन में खेल-कूद में मस्त मोहन कभी मुनि/साधु बनने से भी इन्कार करता था, परन्तु जब आंतरिक भाव जागृत हुए एवं मुनि बन ही गये तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। जब अध्ययन व शिक्षण में लगा तो अन्य सब प्रवृत्तियां गौण हो गई। सन् 1981 में जब आचार्य श्री तुलसी दिल्ली पधारे तो पालम हवाई अड्डे के सामने से गुजरते हुए अनेक बाल व युवा मुनियों ने हवाई अड्डा देखने की जिज्ञासा प्रकट की। आचार्यप्रवर ने अनुमति प्रदान कर दी, मैं रास्ते की सेवा में साथ था। 8-10 साधु मेरे साथ गये, परन्तु मुदित मुनि ने जाने से इन्कार कर दिया।

अणुव्रत भवन में चातुर्मास कर रहे थे, तब उन्हीं में से कुछ मुनियों ने प्रगति मैदान में अप्पू घर देखने की इच्छा प्रकट की। अवसर पाकर एक बार आचार्यप्रवर से मैंने जब मुनियों की इच्छा बताई तो वे एक बार तो ठिठके, आँखें ऊँची की एवं चुप रहे। पर दूसरे रोज मुझे उन्हें ले जाने की आज्ञा प्रदान कर दी। मैंने बाल से युवा तक के 10-12 मुनियों को आज्ञा की बात बताई, प्रायः सभी मुनि जाने को तैयार हो गये, लेकिन एक मुनि जो अपने अध्ययन में खलल समझकर नहीं गये, वे थे उस समय के मुनि मुदित वर्तमान के आचार्य महाश्रमण। यद्यपि कुछ साथी मुनियों ने

जाने के लिए काफी जोर भी दिया था एवं वे जाने को तैयार होते-होते फिर रुक गये। एक मुनि ने तो इस पर व्यंग्य भी कस दिया।

किसी उच्च लक्ष्य तक पहुँचने के लिये, कोई राजमार्ग व सटीक रास्ता निर्धारण करना पड़ता है जिस पर चलकर ही उस लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है। अतः हवाई अड्डे व प्रगति मैदान की पगडंडियों में नहीं भटकते। अणुव्रत भवन व महरौली में जब कभी भी उन्हें देखता था, तो प्रायः अपने ही अध्ययन व साधना में ही लीन देखता था, कभी कोई भी व्यक्ति बात करने की चेष्टा भी करता था, तो बहुत ही साधारण व संक्षिप्त सा उत्तर होता। उनके इन गुणों ने ही उन्हें लक्ष्य तक पहुँचाया और बन गये मुनि मुदित से महाश्रमण। मुनि अवस्था में मैंने उन्हें प्रायः मंच व कार्यक्रमों से दूर अपनी ही क्रिया व साधना में तल्लीन देखा। अपने गुरु तुलसी की सेवा एवं उनके हर इंगित का पालन करना ही उनका प्रमुख कार्य था। अतः वे अपने गुरु की नजर में ऊँचे उठने लगे। आचार्य तुलसी ने अपने जीवन काल में उन्हें काफी तैयार कर दिया था लेकिन मुनि मुदित ने उनसे ग्रहण करने व संग्रहण में कभी कोई कोताही नहीं की। इस प्रकार वे आचार्य तुलसी की आँखों के तारे बन गये।

तत्कालीन मुनि श्री रूपचंदजी ने तब तेरापंथ धर्मसंघ को छोड़ने का निर्णय लिया तब मुदित मुनि उनके सिंघाड़े में थे, एवं प्रायः यह देखा गया है कि सिंघाड़े के मुखिया के संघ छोड़ने पर उनके सहवर्ती साधु उनके ही साथ रहते हैं। परन्तु मुनि रूपचंदजी के दबाव के बावजूद भी उन्होंने उनके साथ जाने से साफ इंकार कर अपनी संघनिष्ठा का परिचय दिया और तत्कालीन युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी के पास अणुव्रत भवन में आ गये। इस घटना क्रम से महाप्रज्ञजी भी बहुत प्रभावित हुए एवं उनके ज्ञान, अध्यापन, शील स्वभाव एवं सादगीपूर्ण व्यवहार, एवं सबसे अधिक उनकी संघ में ठोस आस्था का अंकन किया गया। युवाचार्य महाप्रज्ञ एवं गुरुदेव तुलसी की नजरों में वे दिन-प्रतिदिन उठते-चले गये। आचार्य तुलसी उनको अघोषित उत्तराधिकारी की तरह तैयार कर गये थे, तो आचार्य महाप्रज्ञ ने भी बहुत जल्द ही अपना युवाचार्य घोषित कर दिया। महाश्रमणजी उसके बाद उनके दाहिने हाथ बन गये, एवं हर प्रवृति व कार्य में सहभागी बन गए। शनैः-शनैः उन्होंने सारा कार्य आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन काल में संभाल लिया था, निर्णय प्रायः स्वयं ही करके अपने गुरु के समक्ष रखकर उनकी मोहर लगवा लेते थे। अपने गुरु के प्रति अत्याधिक श्रद्धाशील रहे, युवाचार्य महाश्रमण ने अपने गुणों के आधार पर एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में स्थापित कर लिया एवं आचार्य महाप्रज्ञ भी पूर्णतया संतुष्ट रहे एवं उनकी विशेषताओं को आंकते हुए उन्हें महातपस्वी का संबोधन भी दिया।

जैन धर्म का तेरापंथ धर्मसंघ काफी ऊर्जावान, तेजस्वी व यशस्वी सम्प्रदाय है, एवं इस स्थिति तक लाने वाले थे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ। वर्तमान आचार्य महाश्रमण ने उन दोनों ही यशस्वी आचार्यों का सान्निध्य पाया है, शिक्षण-प्रशिक्षण पाया है एवं एक आचार्य में होने वाले सभी गुणों को समायोजित किया है। आचार्य तुलसी अत्यन्त ही सजग महापुरुष थे। गहन वार्तालाप करते हुए भी 2-3 व्यक्तियों को एक साथ सुन लेते थे तो उसे सुनते व उनका जवाब भी दे देते थे। उसी क्षण मंगल पाठ भी अन्य दर्शनार्थियों को सुना देते थे। दर्शन करने वालों की तरफ पैर बढ़ा देते थे तो हाथ जोड़ने वालों की तरफ आशीर्वाद का हाथ उठ जाता था। उनके सभी अंगों में गजब की सजगता थी एवं शारीरिक अंग सक्रिय रहते थे। आचार्य महाश्रमणजी उन्हीं गुरु की कृति हैं, एवं उतने ही सजग रहते हुए अपने नेतृत्व को निभाते हुए, अपने को प्रतिष्ठित करते रहेंगे, यही आशा है।

21वीं शताब्दी की दूसरी दशाब्दी के शुरू होने से पहले ही तेरापंथ की भी दूसरी दहाई शुरू हो गई है अतः हमें आशा है कि अनेक गुणों एवं विशेषताओं को संजोये हुए, आचार्य श्री महाश्रमण 21वीं शताब्दी के यशस्वी आचार्य बनेंगे। तेरापंथ के आचार्यों की बढ़ती संख्या के साथ ही यश भी बढ़ता रहा है, उसी तरह 11 का जोड़ 2 होता है, तो हमारे यह आचार्य पूर्ववर्ती 2 आचार्यों के यश को भी द्विगुणित करेंगे, यही विश्वास है।

महामंत्री : अणुव्रत महासमिति

एक अणुव्रती अपने धर्म का पालन करता हुआ अन्य धर्म पर कटाक्ष नहीं करेगा।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

विश्वास एवं प्रसन्नता है कि नव्याचार्य के नेतृत्व में एक 'जैन-संघ' जनसंघ बन जाएगा, विश्व की धरा प्रसन्न होगी, सर्वत्र पवित्रता, प्रामाणिकता और उदारता की त्रिवेणी प्रवाहित होगी, क्षमा-करुणा-दया की कमलिनी खिल कर गुलजार हो जायेगी, शील-समाधि और प्रज्ञा की समन्वित ज्योति जगमगा जायेगी, दर्शन-ज्ञान-चरित्र वीर्य-तपादि रूप रत्नों से परिपूरित सौन्दर्य का महासागर लहराएगा, विद्या की बंशी बजेगी, उदारता ओर तटस्थता के गीत गाये जाएंगे, गो, गण (लोग) और गंगा सुरक्षित रहेगी।

आचार्य महाश्रमण

प्रो. हरिशंकर पाण्डेय

तप की विभूति, शुचिता के वैभव, संस्कृति के विलास, रूप-रत्नों के प्रकर्ष, श्रेयस् के समुल्लास, भद्र और शील के उजास को धारण कर जब ब्रह्मचर्य, सत्य और अहिंसा की त्रिवेणी-धारा जीवमंगल, विश्वकल्याण और जीवनशुभ की अप्रतिम तरंगों के साथ उल्लसित और विलसित होने लगती है, तब 'महाश्रमण' का कमनीय अभिधान का उद्भावन होता है, वहाँ दैहिक रूप-कमल आत्मिक शील के सरोवर में खिलकर गुलजार हो जाता है। जीवन की कली मधुरिम वासन्तिक बयारों के संस्पर्श को पाकर खिलखिला उठती है, क्योंकि जीवन की, संसार की, डूबती कश्ती को एक समर्थ भाग्यवान् खेवनहार मिल जाता है। महाश्रमण के सृजन की घटना, निर्माण की प्रविधि कभी-कभी, कहीं-कहीं सहस्राब्दियों किंवा शताब्दियों में घटित होती है। समर्थ-गुरुओं, कुशल कारीगरों, जीवित जीवन से युक्त शिल्पियों के वर्षों के अथक प्रयास, अविरल यत्न और अविरमित साधना के कारण ऐसे महामनीषी का निर्माण संभव होता है, जो भव्यों के लिए, श्रेयस्साधकों के लिए, जीवन-महोत्सव को समुद्घाटित करता है। नित्यनव्यरमणीयता के साथ अनाविल कमनीयता का सृजन होता है।

वहाँ कविता भी होती है, कण्ठ भी होता है, गीत भी होता है, स्वरों की नित्य मधुरिमा भी झंकृत होती है। आत्मिक साधना के साथ परोपकार की अनाहत परम्परा का प्रवाह अविरल होता है। काम राम की रमणीयता में रूपांतरित होकर ऋत और सत्य के नित्यानुसंधान में तल्लीन हो जाता है। सांसारिक कटुता, जीवन की निरसता सबके सब निजक्रूर स्वभाव को छोड़कर मंगल की मधुरिम लास्य में परिवर्तित हो जाती है। 'मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः' रूप वैदिक मंत्र उस महाश्रमण के धाम में सार्थक एवं समुल्लसित होने लगता है। जहाँ परार्थ ही स्वार्थ बन जाता है, पर ही स्व हो जाता है। वहाँ आत्मा की साधना करते-करते परमात्मा भी सध जाता है। इसी देह में आदिरूप का संधान ही तो महाश्रमणत्व है। रूप से अरूप की ओर प्रस्थान करने की कला, सीमा में रहकर असीम से अभिसार का शिल्प जिसे प्राप्त हो जाता है, वही महाश्रमण होता है।

आचार्य महाश्रमण, कला सम्पन्न महाश्रमण, मुनिमहाश्रमण, मुदित महाश्रमण, जीवन धन्य महाश्रमण, आलोक सम्पन्न महाश्रमण, तीर्ण एवं तारक महाश्रमण, विशिष्ट महाश्रमण, युगनायक महारमण अनेक रूप एवं गुणों से विभूषित महाश्रमणत्व का सृजन होता है।

नामकरण की सार्थकता

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य के रूप में 'आचार्य श्री महाश्रमण' सुशोभित हैं। प्रस्तुत प्रसंग में पूज्यवर के नामकरण की सार्थकता का विवेचन अवधेय है। मूल नाम 'महाश्रमण' दो शब्दों महा और श्रमण के मेल से बना है। आचार्य उपाधि है और श्री अभिनन्दनीय सत्ता का अभिव्यंजक है। लेकिन यहाँ चारों मिलकर एक अभिधान बन गए, एक नाम बन गए आचार्य श्री महा और श्रमण। अनेकांतवाद की मूलधारा का समुद्घाटन हुआ, चार भी, एक भी दोनों दृष्टियां सही हैं। महा और श्रमण मिलकर महाश्रमण बना है। महान् श्रेष्ठश्चासौ श्रमणश्चेति महाश्रमणः श्रेष्ठ श्रमण, ज्ञाननिष्ठ श्रमण, तपब्रह्मचर्यशील सम्पन्न श्रमण महाश्रमण है।

आचार्य महाश्रमण यद्यपि दीक्षा-पर्याय में अल्पवय वाले हैं, लेकिन अपने गुणों के द्वारा संघसमर्पित साधना के द्वारा, गुरु-निष्ठ आचरण के द्वारा तपशीलानुशासन विनय-मर्यादा के द्वारा अन्यों से आगे निकल गए, श्रेष्ठ बन गये, महान् पद पर प्रतिष्ठित हो गए।

श्रमण शब्द के तीन रूप मिलते हैं श्रमण, समन एवं शमन। दिवादिगणीय श्रमुतपसि खेदेच धातु से यु प्रत्यय करने पर श्रमण शब्द निष्पन्न होता है। यह धातु श्रमु तपसि आयासे च इस रूप में भी मिलता है। श्राम्यतीति श्रमणः अर्थात् जो तपस्या करता है, श्रम करता है तथा ऊर्ध्वगमन (आत्मरोहण) के लिए आयास करता है, उसे श्रमण कहते हैं। श्राम्यन्तीति श्रमणाः तपस्यन्तीत्यर्थः अर्थात् जो तपस्या करते हैं वे श्रमण हैं। श्राम्यति तपस्यया खिद्यते इति कृत्वा श्रमणो वाच्यः। अर्थात् जो तपस्या से खिन्न होते हैं, अपने रागादिकों को खिन्न करते हैं वे श्रमण हैं। श्राम्यतीति तपस्यतीति श्रमणः।

आत्मा का सहज गुण है अनन्त प्रकाश, शुद्ध चैतन्य आदि। उस अवस्था की प्राप्ति के लिए जो तपस्या करता है, आयास करता है। व्रत धारण करता है,

शरीर एवं रागादिकों को खिन्न एवं क्षीण करता है, वह श्रमण है। आचार्य महाश्रमण इस कसौटी के खरे सोना हैं।

जो स्वयं सभी विद्याओं एवं आचार से सम्पन्न होकर मनुष्यों को आचार तथा सर्वविद्या सम्पन्न बनाता है, वह आचार्य है। आचार्य महाश्रमण ने संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा के विविध शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है तथा आचार में प्रतिष्ठित रहे हैं। आचारः परमो धर्मः, चारित्तं खलुं धम्मो (आचार परम धर्म है। चारित्र ही धर्म है। आदि सूक्तियां आपके जीवन को पाकर सार्थक हो रही हैं। आचार्य महाश्रमण का सम्पूर्ण जीवन शुचिता, पवित्रता का जीवन है। आप बाहर-भीतर अमल-अग्नि के समान पवित्र है। आचार्यश्री का जीवन संयममय जीवन है। इन्द्रिय, वाणी सब संयमित हैं। जितहस्त का गुण आपमें पूर्णतया सुरक्षित है। आचार्य महाश्रमण हमेशा अध्ययन सामग्री के साथ रहते हैं। आचार्यरी की सभी इन्द्रियां स्वस्थ हैं। शारीरिक लावण्य अवर्णनीय है।

शिष्य की प्रकृति, स्वभाव, रूचि, राष्ट्र के व्यवहार, राजा-मंत्री आदि के लक्षण, राष्ट्र के हानि-लाभ आदि को जानने वाला आचार्य प्रकृतिज्ञ कहलाता है। आचार्य महाश्रमण इस कला में निपुण आचार्य हैं। शिष्यों की रुचि के अनुसार ही उन्हें आप कार्य में नियोजित करते हैं। अनेक राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में भी आपका बहुत योगदान है। आप हमेशा राष्ट्र की भलाई के लिए चिंतन करते रहते हैं।

इस प्रकार आचार्य श्री महाश्रमण तेरापंथ के 11वें आचार्य महाश्रमण ने पूर्णोदात्त चरित एवं गुणशील से संसार को, लोक को, संघ को चिरकाल तक अनुरंजित करते रहेंगे, ऐसी मेरी आस्तिकी आस्था है।

नव्य-नियुक्त आचार्य श्री महाश्रमण का अभिधान पूर्णतया मांगलिक एवं श्रीवर्धक है। प्रथम मगण (आद्य मगण का प्रयोग विभूतिप्रदायक, प्रसन्नताकारक तथा शांति ओर समृद्धि का कारक है। 'आचार्य' शब्द में तीनों गुरु वर्ण होने से मगण होता है। मगणयुक्त शब्द का श्रवण ही श्रेष्ठ मंगल माना जाता है। आप मंगल के विग्रह हैं। आपका नाम श्रवण ही मांगलिक है, सभी पापों का विनाशक है।

इस प्रकार 'आचार्य श्री महाश्रमण' अभिधान अपनी गुणीय उदारता, वैभविक सम्पन्नता, शेमुषी-समृद्धि आदि को अभिव्यंजित करता है।

नव्य आचार्य के पट्टोत्सव के अवसर पर यह मेरा सात्विक भेंट प्रस्तुत है। विश्वास एवं प्रसन्नता है कि नव्याचार्य के नेतृत्व में एक 'जैन-संघ' जनसंघ बन जाएगा, विश्व की धरा प्रसन्न होगी, सर्वत्र पवित्रता, प्रामाणिकता और उदारता की त्रिवेणी प्रवाहित होगी, क्षमा-करुणा-दया की कमलिनी खिल कर गुलजार हो जायेगी, शील-समाधि और प्रज्ञा की समन्वित ज्योति जगमगा जायेगी, दर्शन-ज्ञान-चरित्र वीर्य-तपादि रूप रत्नों से परिपूरित सौन्दर्य का महासागर लहराएगा, विद्या की बंशी बजेगी, उदारता ओर तटस्थता के गीत गाये जाएंगे, गो, गण (लोग) और गंगा सुरक्षित रहेगी। विश्वास के साथ प्रसन्नता का चिरसम्बन्ध हो जाएगा। करुणा विभूति के घर जाकर चिरनिवास करेगी, समृद्धि और दया मिलकर एक हो जाएंगे, काम की उच्छृंखल सरिता शील की नदी बनकर प्रवाहित होगी, तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण नित्य सम्वर्धन को प्राप्त करेंगे क्योंकि तंत्रशास्त्रीय दृष्टि से एक-एक उदार अक्षरों की वृद्धि वंश-परंपरा को समुज्जवल करती है, चिरस्थायिनी बना देती है, मात्र संख्या की दृष्टि से 'महाश्रमण' में सात मात्राएं हैं, जो समुन्नत अवस्था के साथ नित्य-नव्य विकास को सूचित करती हैं। क्योंकि सात (सप्त) शब्द गणनीय संख्या के साथ सर्वव्यापकता, सर्वसामर्थ्यता आदि का अभिव्यंजक है। विश्व मैत्री का प्रतीक है। सप-समवाये धातु से क्त और तुट् प्रत्यय करने पर सप्त (सात) शब्द बनता है। सात पाताल, सप्तभुवन, सातमुनि, सात द्वीप, सात सूर्य के घोड़े, सप्तवार (सप्ताह) सात समुद्र, सात स्वर, सात राज्यांग, सात व्रीहि, सात वहिन, सात पर्वत आदि सर्वव्यापन सामर्थ्य के साथ गंभीर्य, संयम, शील निष्ठा, मर्यादा, सदाचार आदि के अभिव्यंजव हैं 'महाश्रमण' पद में ये सारे गुण विद्यमान हैं, विद्यमान रहेंगे, ऐसी मेरी आस्तिक आस्था है। इस तरह अपने महागुरुदेव के प्रयाण और नव्य गुरुदेव की पद प्रतिष्ठा के अवसर पर हृदय के भावों ने जो भी, जैसा भी शब्दों का रूप धारण किया, वे ही शाब्दिक सपर्या के साथ प्रस्तुत हैं। पूर्ण मंगल और अखण्ड विश्वास की प्रतिष्ठा की आस्तिकी आशा के साथ समर्पण इस आलेख का।

विश्वशान्ति का विश्व में,
फैलेगा सन्देश।
महाश्रमण के साथ है
सारा भारत देश।।

महाश्रमण का अब हुआ,
गौरव पदाभिषेक!
पूर्ण करे, महाप्रज्ञ के
स्वप्न रहे जो शेष!!

– इकराम राजस्थानी
1ख, 10, हाउसिंग बोर्ड,
शास्त्रीनगर, जयपुर – 302016

अभिवंदन

ऊर्जा एवं कर्मजा शक्ति के पुंज

मुनि हर्षलाल

''क्रियासिद्धि : सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे'' इस नीति वाक्य से यही प्रतिध्वनित होता है कि महापुरुषों की महानता उनके पुरुषार्थ में है न कि बाह्य साधनों में। आचार्य महाश्रमण में धीरता, गंभीरता, विनम्रता, श्रमशीलता, पापभीरुता आदि अनेक सद्गुणों से आने वाला हर व्यक्ति आपसे प्रभावित हो जाता है। आप जैसे सक्षम आचार्य को पाकर तेरापंथ धर्मसंघ गौरव की अनुभूति कर रहा है।

आचार्य महाश्रमण का जन्म सरदारशहर के दूगड़ परिवार में हुआ। आपकी बाल्यावस्था अन्य बच्चों की तरह खेलकूद व स्कूली पढ़ाई में बीती। धार्मिक संस्कार मां से आपको विरासत में मिले थे। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के सिंघाड़े के सम्पर्क में आने पर आपमें वैराग्य के अंकुर प्रगटित हुए और वैराग्य की परिपक्वता पर मुनिश्री के द्वारा ही गुरुदेव तुलसी के निर्देश से सरदारशहर में बारह वर्ष की लघु वय में आपका दीक्षा संस्कार संपन्न हुआ। वह वर्ष भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी का था। पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास दिल्ली महानगर में था, तथा मुनिश्री का चातुर्मास सरदारशहर में ही था। मुनि मुदित (आचार्य महाश्रमण) मुनिश्री के साथ ही चातुर्मास कर रहे थे। चातुर्मास के बाद आचार्य श्री तुलसी श्रीडूंगरगढ़ मर्यादा महोत्सव हेतु पधार रहे थे। गांव के बाहर हनुमानजी के स्थान पर आचार्यश्री विराज रहे थे तब मुनि मुदित के रूप में आचार्य महाश्रमण ने प्रथम बार गुरु-दर्शन किये तब गुरुदेव ने अत्यन्त वात्सल्य भाव से आपके सिर पर वरदहस्त रखा और उसी समय गुरुदेव तुलसी ने आपमें होनहार होने की विलक्षण कल्पना की।

गुरुदेव तुलसी ने आपका निर्माण उसी रूप में किया और महाश्रमण ने भी गुरु दृष्टि को मुख्य मानकर अपने जीवन का विकास किया। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के स्वप्नों को साकार करने में आप एक नई ज्योति किरण के रूप में चारों तीर्थों के दिल में बसे हुए हैं।

शासक और साधक

आचार्य महाश्रमण शासक तो हैं ही साथ ही आपमें साधक का भाव भी गहरा है। आपका व्यवहार बहुत कोमल और शालीन है। आपके उपपात में आने वाला व्यक्ति मानसिक शांति का अनुभव करता हुआ अपने आपको धन्य मानता है। आपकी वाणी मधुर व मन को आनंदित करने वाली है।

आपका प्रवचन अध्यात्म से ओत-प्रोत रहता है, उसमें जीवन के विकास की अपार संभावना खोजी जा सकती है। धर्मसंघ की सारणा-वारणा में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी आप अध्ययन, अध्यापन व कुछ नया लिखने, नया संपादित करने में अपना श्रम बराबर लगाते रहते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य महाश्रमण के विनय व्यवहार और कार्य-कलापों से कितने संतुष्ट और आनंदित थे इसका प्रमाण समय-समय पर गुरुदेव महाप्रज्ञ द्वारा प्रकट किये गये उद्गार थे आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था ''युवाचार्य के रूप में महाश्रमण का मनोनयन न सिर्फ तेरापंथ धर्मसंघ पर उपकार है, बल्कि स्वयं मेरे पर भी उपकार है। इन्हें पाकर सारा संघ गौरवान्वित है। इन्होंने कार्य का दायित्व इतना संभाल लिया जिससे मैं काफी हल्कापन महसूस करता हूं।'' आचार्य महाश्रमण के लिए मंगल कामना करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा ''ये निरोग रहते हुए धर्मसंघ के उन्नयन एवं विकास की ऊंचाइयों को छुये।'

आचार्य महाश्रमण के प्रति मेरी यह शुभकामना है कि आप चरण-चरण पर विजय करते हुए जन-जन को आध्यात्मिक शान्ति प्रदान करायें।

निस्पृह साधक : आचार्य महाश्रमण

मुनि राकेशकुमार

सत्ता और अधिकार की इच्छा हर व्यक्ति में होती है, पर उसका नशा शराब के नशे से भी अधिक भयावह है। जिस प्रकार नशीली वस्तुओं के सेवन से विवेक चेतना लुप्त हो जाती है, उसी प्रकार सत्ता का नशा भी मनुष्य को विवेकशून्य और अनुशासनहीन बना देता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए जिन स्वर्ण सूत्रों और आदर्शों पर बल दिया गया है, उनमें अधिकार और कर्त्तव्य का समन्वय प्रमुख है। सत्ता की प्राप्ति गरिष्ठ भोजन के समान है। उसे पचाने के लिए कर्त्तव्यनिष्ठा और त्यागपरायणता के पाचक चूर्ण का प्रयोग जरूरी है।

भगवान महावीर ने मानसिक और सामाजिक धरातल पर समता की प्रतिष्ठा के लिए जिन आठ प्रकार के अभिमान की रेखाओं को मिटाने पर बल दिया है, उनमें सत्ता के अभिमान से दूर रहने की प्रमुखता से प्रेरणा दी गयी है। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की वाणी को आत्मसात् किया है। इसलिए गौरवशाली धर्मसंघ के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर भी उन्हें अहं छू नहीं पाया। आपकी निस्पृहता के तीन छोटे प्रसंग मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ

किसी ने आपसे पूछा 'आप धर्मसंघ के शिखर पर आसीन हुए हैं, अब आपको कैसा लग रहा है?' तब आचार्य महाश्रमण ने कितना सुन्दर उत्तर दिया

'कोई खास फर्क नहीं पड़ा। यह तो हमें संघ की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। अनासक्त भाव से अपने दायित्व का निर्वाह करता रहूँ यह मुझे अभीष्ट है।'

आचार्य महाश्रमण को जब गुरुदेव तुलसी ने 'महश्रमण' अलंकरण दिया तो उसके बाद एक दिन आपने गुरुदेव से निवेदन किया 'अगर आप मुनिश्री खेतसीजी (सतजुगी) की तरह मेरा यह पद वापिस लेना चाहें तो मैं प्रस्तुत हूँ।'

एक बार आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ आप यात्रा करते हुए राजस्थान के लक्ष्मणगढ़ गांव में पहुँचे। एक दिन कोई गांव के अपने क्षेत्र में चातुर्मास के निवेदन के लिए आये हुए थे। उन्होंने आपसे निवेदन किया कि 'पूज्यवर! आप हमारे क्षेत्र में साधु या साध्वियों के चातुर्मास देने की कृपा करें। आपके हाथ में सबकुछ है।' तब आपने फरमाया हमारे हाथ में तो कुछ नहीं है। हमारे हाथ में तो केवल हाथ की रेखायें हैं। अगर यह भाव-धारा हर सत्ताधीश में प्रभावित हो जायें तो विश्व का कायाकल्प हो सकता है। जहाँ आज अधिकतर लोग सत्ता और अधिकार पाने की होड़ में लगे हुए हैं वहाँ आचार्य श्री महाश्रमण का जीवन पदलिप्सा से दूर खड़ा नजर आता है। क्योंकि उन्होंने साधना परायण जीवन जिया है और जी रहे हैं। तभी तो आज वे हमें कलियुग में सतयुग के अवतार के रूप में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऐसे निस्पृह साधक से सबको आसक्ति की व्याधि से मुक्त रहने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी और प्रेक्षाप्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ ने सम्पूर्ण विश्व को अपने मार्गदर्शन से लाभान्वित किया, वैसे ही उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण सबको आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते रहेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

बढ़े चलो तुम ज्योति चरण!

साध्वी यशोधरा

सतरंगी यह भोर निराली, धरती मंगल गाए।
सूरज करे आरती प्रभु की, गगन अमी बरसाए।।
जय-जय-जय हे महाश्रमण, बढ़े चलो तुम ज्योतिचरण!

जय जय नंदा जय जय भद्दा, गूंजे धरणी अम्बर।
महिमामण्डित महाश्रमण की सूरत कितनी सुन्दर।
नयनयुगल में शुभ भविष्य का रूप निरख हरसाएं।।

दस पाटों की सकल सम्पदा के तुम बन गए स्वामी।
कर संक्रान्त स्वयं की ऊर्जा, अदृश अन्तर्यामी।
तुलसी महाप्रज्ञ की अनुपम, कृति को आज बधाएं।।

महाप्राण महाप्रज्ञ हृदय में, अद्भुत स्थान बनाया।
महातपस्वी महाश्रमण कह, गुरु ने तुम्हें बधाया।
उतरे खरे कसौटी पर तुम, रच दी दिव्य ऋचाएं।।

युग-युग तक तुम तपो धरा पर, मंगल दीप जलाएं।
घर-घर गूंजे अणु-प्रेक्षा स्वर, विजय ध्वजा लहराएं।
पोर-पोर पुलकित भावों का, स्वस्तिक शुभ्र रचाएं।।

(लय : माई नी माई....)

सरस साहित्य के सृजनकार

मुनि दीपकुमार

आज हर व्यक्ति समस्याओं से ग्रस्त है। किसी के सामने परिवार की समस्या, किसी के सामने स्वास्थ्य की समस्या और किसी के सामने व्यापार की समस्या। इन समस्याओं के समाधान के लिए सबको कुशल मार्गदर्शक की अपेक्षा रहती है। नहीं तो न जाने समस्या में झुलस रहा मानव कौन-सा गलत कदम उठा ले। इसके लिए समुचित मार्गदर्शक की भूमिका अच्छी पुस्तकें निभा सकती हैं। अनेकों विचारकों ने अच्छे साहित्य का निर्माण कर समस्याओं से उबरने का मार्ग प्रशस्त किया है। ऐसे विचारकों में वर्तमान में आचार्य महाप्रज्ञ के सुयोग्य उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण महती भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण ने शिक्षा-सुधा नामक संस्कृत पुस्तक में एक श्लोक लिखा है

'सुपुस्तकानि मित्राणि, भवन्ति खलु भूस्पृशाम।

समस्याग्रस्तचित्तेभ्यो, ददते मार्गदर्शनम्।।'

अच्छी पुस्तकें मनुष्यों की मित्र होती हैं। समस्याग्रस्त चित्त वाले व्यक्तियों का वे मार्गदर्शन करती हैं। आचार्य महाश्रमण का साहित्य सरल और सरस भाषा में गूंफित है। वे कठिन से कठिन विषय को सरल भाषा में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। इसीलिए आचार्य महाप्रज्ञ ने उनकी एक पुस्तक में आशीवर्चन देते हुए कहा है 'कोई भी मतिमान मनुष्य शिक्षा सुधा को पढ़कर यह नहीं कह सकता कि संस्कृत भाषा कठिन है।' शिक्षा-सुधा के श्लोकों की सरलता का निरीक्षण कर यह कल्पना प्रसूत होती है महाश्रमण के भीतर विद्यमान सरलता क्या इस ग्रंथ में मूर्तिमान हो गयी है? आचार्य महाश्रमणजी की हर पुस्तक में सरलता और सरसता का दर्शन होता है।

आज स्थान-स्थान पर आर्ट ऑफ लिविंग की कक्षाएं लगायी जा रही है। शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आज के युवक-युवतियां हजारों-लाखों रुपये शुल्क के रूप में दे रहे हैं फिर भी वे अच्छी तरह से जीना नहीं सीख पा रहे हैं। क्योंकि जहाँ पर पैसा प्रमुख होता है वहाँ केवल उनको भाषण तो सुनने को मिल जाते हैं, लेकिन जब तक उनके दिल-दिमाग तक बात नहीं पहुँचेगी तब तक कोरा वाग्-विलास का विषय बनकर रह जाता है। इस परिस्थिति में जीने की कला का सच्चे अर्थ में हमें आचार्य महाश्रमण प्रशिक्षण देते नजर आते हैं। उन्होंने अपने जीवन की लेखनी से 'आर्ट ऑफ लिविंग' की प्रेरक परिभाषा प्रस्तुत की है। अपने अनुभवों का सार एक छोटी-सी पुस्तक 'आओ हम जीना सीखें' से किया है। इसमें उन्होंने कैसे चलें?, कैसे बैठें?, कैसे सोयें?, कैसे बोलें?, ओर कैसे सहें? इत्यादि का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रस्तुत किया है।

आचार्य महाश्रमण मौलिक चिंतन के धनी हैं। वे कभी व्यक्तित्व विकास पर लिखते हैं तो कभी शांत सहवास के सूत्रों की चर्चा करते हैं, तो कभी जीने की कला का प्रशिक्षण देते हैं, कभी तनाव की समस्या का समाधान देते नजर आते हैं।

वर्तमान जगत् में क्रोध की बड़ी जटिल समस्या है। इस संदर्भ में आचार्य महाश्रमणजी 'दुःख मुक्ति का मार्ग' नामक पुस्तक में लिखते हैं 'कोई आदमी अपराध करता है, अहित करता है तो गुस्सा आ जाता है। गुस्सा अपराधी पर आता है, तो अपने गुस्से पर गुस्सा क्यों नहीं आता? जब अपना गुस्सा अपने लिए अप्रिय बन जाये और छोड़ने के लिए प्रयास शुरू हो जाये तो निश्चित ही व्यक्ति साधना के पथ पर आगे बढ़ सकता है।'

आचार्य महाश्रमण ने ऐसी कई पुस्तकें लिखी हैं। उनमें प्रमुख है 'धम्मो मंगल मुक्किट्ठम्', 'आओ हम जीना सीखें', 'दुःख मुक्ति का मार्ग', 'शेमुषी', 'क्या कहता है जैन वांग्मय?', 'शिक्षा सुधा', 'रश्मियां आर्हत् वांग्मय की', 'संवाद भगवान से', 'महात्मा महाप्रज्ञ', 'दस स्पॉक महावीरा' आदि। आचार्य महाश्रमण हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी, गुजराती, अंग्रेजी भाषा के अधिकृत विद्वान हैं।

आचार्य महाश्रमण मौलिक चिंतन के धनी हैं। वे कभी व्यक्तित्व विकास पर लिखते हैं तो कभी शांत सहवास के सूत्रों की चर्चा करते हैं, तो कभी जीने की कला का प्रशिक्षण देते हैं, तो कभी तनाव की समस्या का समाधान देते नजर आते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक पर यही मंगलकामना है कि पूरे विश्व को आपका आध्यात्मिक मार्गदर्शन युग-युग तक प्राप्त होता रहेगा।

पाठकों के स्वर

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-31 मार्च 2010 भ्रष्टाचार-शिष्टाचार अंक मिला। भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने वाले कर्णधार भी वही रट लगा रहे हैं जो अन्य कह रहे हैं। इसकी वल्लरी बढ़ती ही जा रही है। अब तो भ्रष्टाचार से किसी को कोई पीड़ा भी नहीं रही। शिष्टाचार के रूप में ही इसे स्वीकृति मिली हुई है। विशेषांक में सभी प्रकार की सामग्री का सुंदर संयोजन किया गया है, अतः यह एक संग्रहणीय विशेषांक बन गया है। बधाई।

डॉ. महेन्द्र भानावत, *उदयपुर*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक का भ्रष्टाचार-शिष्टाचार 1-31 मार्च 2010 का अंक मिला, बहुत प्रसन्नता हुई। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के लेख ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणादायी हैं। अंक में दी गयी पाठ्य सामग्री का चयन उमदा है। डॉ. महेन्द्र कर्णावट के विचार भी झकझोरने वाले हैं। सुंदर संपादन के लिए संपादकीय विभाग को साधुवाद एवं बधाई।

शंकरलाल पारीक, *लाडनूं*

◆ ''अणुव्रत'' पाक्षिक पत्रिका बराबर मिल रही है। पत्रिका में प्रकाशित आध्यात्मिक रचनाएं, ज्ञानवर्धक व रोचक लेख एवं कविताएं बहुत पसंद आई। इतने अच्छे, उच्च कोटि, भक्ति के लेख पढ़कर आनंदित हुआ। बधाई हो आपको एवं आपके संपादकीय विभाग को।

मदनमोहन परिहार, *जोधपुर*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-30 अप्रैल 2010 का अंक प्राप्त हुआ। ''नशामुक्ति, भ्रष्टाचार विरोधी एवं पर्यावरण जागरूकता'' पर राष्ट्रीय रैली हेतु हार्दिक अभिनंदन। विश्व शांति की पहल हेतु सादर धन्यवाद। सत्य-अहिंसा की यह यात्रा अनन्त काल तक चलती रहेगी, इसी आशा के साथ।

डॉ. शुभंकर बनर्जी, *दिल्ली*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-30 अप्रैल 2010 पढ़ा। इसमें प्रकाशित सभी आलेख ज्ञानपूर्ण एवं नैतिकता की सशक्त आवाज बुलंद करते हैं। यह पत्रिका पढ़ने से व्यक्ति के मन में परिवर्तन का अनुभव होता है।

''यात्रा-वृत्त'' स्तंभ में आपकी यात्रा के संस्मरण आते हैं, इससे लोगों का अणुव्रत की तरफ झुकाव भी होता है। जहाँ-जहाँ आप एवं वर्तमान अध्यक्ष निर्मल रांकाजी जा रहे हैं वहाँ की रिपोर्ट पढ़कर अच्छा लगा। पूर्वोत्तर यात्रा ने मुझे खासकर आकर्षित किया क्योंकि उस क्षेत्र (तिनसुखिया) में मैं 28 वर्ष रहा हूँ। लेकिन एक बात मुझे अच्छी नहीं लगी। जगह-जगह आपने खाने-पीने के विवरण को सौंदर्य रस से भरपूर लिखा है। स्वादिष्ट व्यंजन के नाम एवं उसके स्वाद को आनन्दपूर्वक वर्णित किया है। मेरी समझ में, जहाँ हम अणुव्रत की बात करते हैं, वहाँ स्वादिष्ट व्यंजन की बात गौण है। लोगों की जागरूकता एवं हार्दिक सहयोग मुख्य विषय हैं एवं आनन्द का अनुभव कराते हैं।

आप बहुत बड़े व्यक्तित्व के धनी हैं। अतः मैं यह सोच नहीं पा रहा हूँ कि मैंने ये बातें लिखकर सही किया या गलत। फिर भी मैं हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ।

उत्तमचंद पुगलिया, *आर.एस. पुरम-कोयम्बटूर*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-15 मई 2010 का अंक मिला। कवर पृष्ठ एवं संपादकीय दोनों ही जल संरक्षण संचेतना के लिए अत्यन्त चेतनापरक हैं। कवर पृष्ठ पर जल एवं वनस्पति के सहजीवन एवं पारिस्थितिक सम्बन्ध को उजागर करता चित्र अपने आप में मुखर है और स्पष्ट करता है कि जल होगा तो पेड़ होंगे और पेड़ होंगे तो जल होगा।

राजस्थान में गहराते जल संकट को आपने संपादकीय में स्पष्ट किया है एवं जल बचाने की प्रेरणा देते हुए जल बचाने के उपाय भी सुझाये हैं। निश्चित ही ये हमारे छोटे-छोटे कदम जल संकट को उबारने की दिशा में सार्थक एवं प्रभावी होंगे। आपके संबोधि-संपूरित संदेश एवं चेतावनी के लिए साधुवाद।

रूपनारायण काबरा, *जयपुर*

◆ आपके संपादकत्व से सुशोभित ''अणुव्रत'' पाक्षिक 1-15 मई 2010 का अंक सूरत की लेखिका कान्ति अय्यर के माध्यम से प्राप्त हुआ। इस अंक में संकलित अधिकांश सामग्री को मनोयोग से पढ़ा। मन-प्राणों को बड़ी तृप्ति व संतुष्टि हुई।

आपका संपादकीय 'पानी बचाएं' आज की ज्वलंत समस्या पर आधारित है। पानी रूपी जीवन को बचाने की दिशा में आपके सुझाव अमूल्य एवं अपनाने योग्य हैं। जीवन की शिक्षा (आचार्य तुलसी), जिज्ञासा (आचार्य महाप्रज्ञ) में व्यक्त विचार जीवन को सुखी व संतुलित बनाने में सक्षम हैं। स्वामी वाहिद काज़मी एक क्रांतिकारी लेखक हैं। उनकी लेखनी गतानुगतिकता का अनुसरण न करके और लीक से हटकर कुछ नई समाजोपयोगी बात कहती है। प्रस्तुत आलेख 'भीगी बिल्ली क्यों?' आलेख में आपने नारी को पुरुष के समकक्ष एवं स्वावलंबी रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया है। 'सूना पिंजरा' (जसविंदर शर्मा) में नई-पुरानी पीढ़ियों के बीच निरंतर बढ़ता हुआ पीढ़ी-अंतराल और घर-परिवार में बड़े-बूढ़ों की उपेक्षा आज चिंता का विषय है। शर्माजी ने इस समस्या पर आवश्यक रोशनी डाली है। पूर्वोत्तर भारत की यात्रा-3 (डॉ. महेन्द्र कर्णावट) पढ़कर भी सुखद अनुभूति हुई। श्री सत्यनारायण भटनागर की व्यंग्य कविता 'आओ भ्रष्टाचार की फसल उगाएं' वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था पर जमकर कशाघात करती हैं। निष्कर्षतः 'अणुव्रत' अहिंसक, नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक होने के बावजूद एक बहुआयामी स्तरीय पत्रिका है। आपकी विलक्षण संपादन-कला प्रणम्य है।

प्रो. भगवानदास जैन, *मणीनगर(पूर्व) अहमदाबाद*

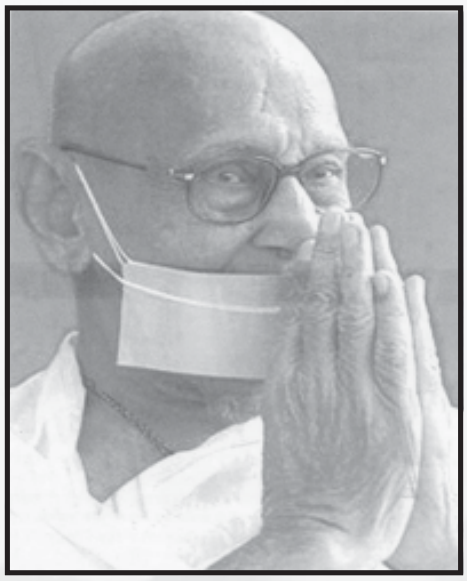

अणुव्रत का संसार अनोखा, वही मनुज पाएगा,
जिसमें नैतिकता का, कोई सूर्य निखर आएगा।
शान्ति गीत आगे बढ़कर, इस जग में वो गाएगा,
अपने मन की बात सदा औरों को समझाएगा।
अणुव्रत से मानव तो भीतर तलक स्वच्छ होता है,
जो जीवन का अर्थ समझले, महाप्रज्ञ होता है।।

इकराम राजस्थानी

भाव-प्रणत नमन

●

गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट

राजसमंद (राजस्थान) - 313326

सुंदर वर्तमान उज्जवल भविष्य का निर्माण करता है

सरदारशहर 10 जून। आचार्य महाश्रमण ने कहा–पाप करने वाला व्यक्ति इस जन्म में संताप प्राप्त करता है और अगले जन्म में भी संताप में रहता है। जो व्यक्ति धर्म की साधना करने वाला होता है वह यहां भी आनन्द से रहता है और मरने के बाद भी आनन्द प्राप्त करता है।

आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय चौरड़िया प्रशाल स्थित प्रवचन पण्डाल में जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह से एक राहगीर साथ में भोजन पानी कुछ नहीं रखता है और उसे रास्ते में कुछ प्राप्त नहीं होता वह भूख–प्यास से पीड़ित हो जाता है इसी तरह जो व्यक्ति धर्म, पुण्य को साथ में नहीं रखता है तो वह दुःखी रहता है। दूसरी ओर जो राहगीर अपने साथ भोजन–पानी का बंदोबस्त साथ में रखता है उसे रास्ते में कठिनाई नहीं होती वह आराम से रास्ते को पार कर सकता है। धर्म, पुण्य को साथ लेकर चलता है वह व्यक्ति इस भव में आनन्द के साथ रहता है और अगले लोक में भी आनन्द पाता है। भविष्य को अच्छा बनाने के लिए वर्तमान को अच्छा बनाना चाहिए। वर्तमान को देखकर भविष्य पर चिंतन करना चाहिए। जो व्यक्ति आगे की बात सोचता है वह दूरदृष्टा होता है और वह निकट को भी सही कर लेता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आत्मा की दृष्टि से देखा जाए तो आत्मा परमात्मा में जाती है, अगर कोई व्यक्ति आत्मा परमात्मा में विश्वास नहीं करता है और वह अच्छा कार्य करता है तो उसमें कोई नुकसान की बात नहीं होती है क्योंकि अगर परलोक है तो उसके अच्छे कर्म आगे काम आयेंगे अगर परलोक नहीं भी है तो उसमें कोई नुकसान की बात नहीं हो सकती। इसलिए मनुष्य को अच्छे कर्म की ओर ध्यान देना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो रात्रियां बीत रही है वह वापिस नहीं आती, धर्म करने वाले व्यक्ति की रात्रियां अच्छी जाती है और अधर्म का काम करने वाले का समय खराब फल देने वाला हो जाता है। धर्म और अधर्म दोनों मनुष्य के सामने है, जब मूर्च्छा का आवरण होता है तो मनुष्य सही निर्णय नहीं कर पाता इसलिए ज्ञान के सम्मान कोई पवित्र वस्तु नहीं होती , अज्ञान क्रोध से भी बड़ा अभिशाप है क्योंकि ज्ञान के अभाव में व्यक्ति को विवेक नहीं होता अज्ञानी आदमी सही निर्णय नहीं कर सकता।

मनुष्य के पास शरीर और आत्मा दोनों है आत्मा आगे जाने वाली है और शरीर यहीं रहने वाला है इसलिए मोह को कम करने का अभ्यास करना चाहिए।

सरदारशहर 8 जून। स्थानीय किशनलाल नाहटा के निवास के परिपार्श्व में स्थित चौरड़िया प्रशाल में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि व्यक्ति पाप कर लेता है किंतु जो वर्तमान को ही सबकुछ मान लेता है और आगे की परवाह नहीं करता है वह पापकारी प्रवृत्ति में लगा रहता है। जो आदमी पाप से नहीं डरता है वह गलत काम करता है। जो आदमी गलत काम करता है उसे पछताना भी पड़ता है। मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है कि वह अपने जीवन में भलाई और सच्चाई का कार्य करे, जिससे उसका वर्तमान जीवन और आगे की गति भी अच्छी हो सकती है।

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की मासिक पुण्य तिथि का आयोजन हुआ, इस आयोजन में आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित गीत 'ऊँ महाप्रज्ञ गुरुदेव' गीत का सस्वर संगान हुआ तथा अनेक साधु–साध्वियों ने गीत एवं विचारों के द्वारा अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि वैशाख कृष्णा एकादशी को आचार्य महाप्रज्ञ का देवलोक हुआ और आज ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी है, एक महीना हो गया। उन्होंने हर महीने की एकादशी को एक वर्ष तक पुण्य तिथि मनाने की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने कहा आचार्य महाप्रज्ञ में प्राणीमात्र के प्रति दया और करुणा का भाव था। मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल, मुनि मोहजीतकुमार, साध्वी संगीतप्रभा आदि ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

सरदारशहर 6 जून। जिस व्यक्ति में राग–द्वैष प्रबल होता है वह अधम कोटि का व्यक्ति होता है और जिस व्यक्ति में राग–द्वैष पूर्णतया समाप्त हो जाता है वह व्यक्ति महान बन जाता है, मनुष्य केवल आकृति से छोटा–बड़ा नहीं होता, जिसकी प्रकृति अच्छी है वह बड़ा है, राग–द्वैष की वृत्ति को कमजोर करे तो मनुष्य का विकास होता चला जाता है। उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने किशनलाल नाहटा के निवास पर सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि राग–द्वैष की वृत्तियां अपराध कराती है जिस व्यक्ति का राग–द्वैष से चित्त भावित होता है तो गलत काम भी आदमी कर लेता है। आगे कहा कि व्यक्ति वीतरागता से अपने चित्त को भावित करने का अभ्यास करे और जिस व्यक्ति की चेतना वीतरागता से भावित हो जाती है तो उसे कोई डिगा नहीं सकता और वह गलत काम नहीं कर सकता।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कि ज्ञान आदमी की चेतना को प्रकाशित करता है। ज्ञान देने वाला गुरु होता है जो स्वयं ज्ञानी होते हैं और दूसरों को भी ज्ञान के पथ पर चलाने का प्रयास करते हैं और जिसने राग–द्वैष को कम किया है इसलिए उन्होंने गुरुता को प्राप्त किया है। मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है, आदमी के पास बुद्धि होती है वह अपने समय का उपयोग साधना में अच्छे कार्यों में करने का प्रयास करे तो उसके जीवन की भी सार्थकता सिद्ध होती है। डॉ. कुसुम लूणिया ने अपने विचार व्यक्त किये, प्रमोद दूगड़ ने अपनी भावनाएं गीत के माध्यम से व्यक्त की। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

सरदारशहर 4 जून। जो तन से, वचन से और मन से किसी दूसरे व्यक्ति को तकलीफ नहीं देते वे सही अर्थ में साधु होते हैं। साधु का वेश हो और संयम न हो तो वेश के साथ अन्याय हो जाता है। जिस साधु ने अपने वेश के साथ क्लेश को नहीं बदला, राग–द्वेष को नहीं बदला तो वह केवल वेश में ही साधु हो सकता है। उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने सरदारशहर के किशनलाल नाहटा के निवास पर उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि साधु में साधना होनी चाहिए। साधु को कंचन कामिनी का त्यागी होना चाहिए। जो साधु धन और स्त्री का त्यागी होता है वह परमात्मा का दूसरा रूप होता है। साधु को धन आदि से बचना चाहिए साधु को शील की साधना करनी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने संस्कृत साहित्य का उल्लेख में विनम्रता को परिभाषित करते हुए कहा कि जो संयम पर्याय में बड़ा है, जो विद्या में बड़ा और जो उम्र में बड़ा है उसके प्रति विनय का भाव होना चाहिए।

स्थानीय राजेन्द्र विद्यालय के प्रधानाचार्य पृथ्वीचंद ने अपने विचार व्यक्त किये व आचार्य महाश्रमण को विद्यालय में पधारने की अर्ज की। डालचन्द चिडालिया ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक पर देशभर में अभिवंदना एवं वर्धापना समारोह के विविध आयोजन

श्रामण्य के शिखर पुरुष हैं आचार्य महाश्रमण

● कोलकाता

साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में कोलकाता महानगर की ओर से आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक के उपलक्ष्य में वर्धापना समारोह 31 मई 2010 को अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। साउथ कोलकाता सभा के तत्वावधान में सभा भवन में आयोजित इस गरिमापूर्ण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में छपते-छपते ताजा खबर टी.वी. चेनल के प्रमुख विश्वंभर नेजर उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि सरदारमल कांकरिया, जीतो कोलकाता शाखा के प्रमुख सोहनराज सिंघवी थे। प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित थे राष्ट्रीय महानगर पत्र के संपादक प्रकाश चिंडालिया। प्रारंभ उत्तर हावड़ा महिला मंडल के वर्धापना गीत से हुआ।

साध्वी कनकश्री ने संघ के 11वें अधिशास्ता की अभ्यर्थना करते हुए कहा आचार्य महाश्रमण विश्व-विख्यात संत आचार्य तुलसी और अध्यात्म योगी आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपम कृति हैं। वे श्रामण्य के शिखर पुरुष हैं, समता के सुमेरू हैं। वे महातपस्वी हैं। उनका संयम अनुत्तर है। ऋजुता, मृदुता, विनम्रता और सहिष्णुता के मूर्तिमान प्रतीक हैं। साध्वीश्री ने आचार्य महाश्रमण के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की मंगलकामना की।

साध्वी मधुलता ने आचार्य महाश्रमण को तुलसी-महाप्रज्ञ युग की महान उपलब्धि बताते हुए कहा महाश्रमण की चारित्रिक आभा अत्यंत निर्मल है। वे पौरुष, पराक्रम, श्रुतज्ञान एवं अंतःप्रज्ञा संपन्न समर्थ जैनाचार्य हैं। उनसे न केवल तेरापंथ संघ को अपितु संपूर्ण जैन समाज को तथा अध्यात्म जगत को बड़ी आशाएं हैं। साध्वीवृंद ने अत्यंत भावपूर्ण वर्धापना गीत की प्रभावी प्रस्तुति दी।

कांकरिया जैन ने गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के व्यापक अवदानों की चर्चा करते हुए कहा उन्होंने पूरे समाज को जोड़ने एवं साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने का भगीरथ प्रयत्न किया। उनके पद्चिह्नों पर चलते हुए आचार्य महाश्रमण पूरी मानवता को उपकृत करेंगे। विश्वंभर नेदर, सोहनराज सिंघवी, प्रकाश चिंडालिया चैनरूप चिंडालिया, भीखमचंद पुगलिया, सुरेन्द्र दूगड़, बनेचंद मालू, तारा सुराणा, जतन बेंगानी, दिलीप मरोठी सहित कोलकाता हावड़ा आदि ने अपने श्रद्धासिक्त स्वर समर्पित किए। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन तरूण सेठिया ने किया।

● नई दिल्ली

अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह मनाया गया। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

मुनि राकेशकुमार ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा आचार्य महाश्रमण की आचारनिष्ठा और संयमनिष्ठा प्रेरणादायक है। आप प्रारंभ से ही अप्रमत्त योगी हैं। आपमें नेतृत्व की अद्भुत क्षमता है।

मुख्य अतिथि जयप्रकाश अग्रवाल ने कहा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने समाज को नया प्रकाश दिखाया है। आचार्य महाश्रमण उनके कार्यों को आगे बढ़ायेंगे। मुनि सुधाकर ने कहा आचार्य महाश्रमण विनम्रता, सरलता व सहजता के मूर्तयप हैं। मुनि दीपकुमार ने कहा आचार्य महाश्रमण ध्रुवयोगी हैं।

कार्यक्रम में मांगीलाल सेठिया, के.एल. जैन, के.के. जैन, टी.एम. लालाणी, विजयराज सुराणा, तेजकरण सुराणा, धनराज बोथरा, सुशील जैन, आयकर विभाग के अध्यक्ष के.सी. जैन, सुमन नाहटा, राजेश बरड़िया, निर्मल भंसाली, प्रकाश भंसाली, बाबूलाल गोलछा, डॉ. अनिल दत्त मिश्रा आदि ने वर्धापना के स्वरों में अपनी प्रस्तुतियां दी। स्वागत के.के. जैन व आभार ज्ञापन नरपत मालू ने किया। संयोजन मुनि सुधाकर ने किया।

● अग्रनगर-लुधियाना

साध्वी जतनकुमारी 'कनिष्ठा' के सान्निध्य में 30 मई को सभा भवन में आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह का आयोजन। साध्वीश्री ने कहा सत्यनिष्ठा, स्वाध्यायनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, गणनिष्ठा, आचारनिष्ठा, आगमनिष्ठा और अध्यात्मनिष्ठा इन सप्तनिष्ठाओं का समवाय हैं आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व। इनके कर्तृत्व में महाप्रज्ञ का कर्तृत्व और नेतृत्व में आचार्य तुलसी का नेतृत्य परिलक्षित होता है। इनकी विनम्रता, सरलता, मृदुता और मंदमधुर मुस्कान हर मन को मोह लेती है। साध्वी केचनबाला ने आर्षवाणी आचार्य अभिवंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अग्रनगर महिला समाज की ओर से सविता बंसल ने विचार रखे।

साध्वी ध्रुवरेखा ने अपनी जन्मभूमि सरदारशहर के प्रथम आचार्य की अभिवंदना करते हुए महाश्रमण जीवन वृत्त की अभिव्यक्ति दी। कल्पना बरड़िया, डॉ. प्रवीण गुप्ता, तुलसी कल्याण केन्द्र के ट्रस्टी संतोष बंसल, मंजू सिंघी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। संयज बरड़िया ने गीत के द्वारा अपनी भावना प्रस्तुत की। अंत में साध्वी जतनकुमारी ने कहा आचार्य महाश्रमण चिरकाल तक धर्मशासना करते हुए हम सबका मार्गदर्शन करते रहें। साध्वी नयश्री ने काव्यमय शैली में कार्यक्रम का संचालन किया।

● मंडी गोविन्दगढ़

मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि उदितकुमार के सान्निध्य में 11वें आचार्य के रूप में आचार्य महाश्रमण का पदाभिषेक समारोह 30 मई 2010 को भव्य रूप में आयोजित हुआ। सभा भवन में आयोजित समारोह में स्थानीय लोगों के अलावा चंडीगढ़, पंचकूला, लुधियाना, जगराओं, पटियाला, खन्ना, अमलोह, समाना, भवानीगढ़, नाभा, संगरूर, अहमदगढ़, धूरी, राजपुरा इत्यादि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित हुए। वक्ताओं ने अपनी असीम आस्था प्रकट करते हुए आचार्य महाश्रमण के यशस्वी एवं ऐतिहासिक शासनकाल की मंगल भावना प्रकट की।

मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने कहा पद एवं सत्ता व्यामोह के इस युग में नेतृत्व परिवर्तन आस्था एवं निष्ठा से सहजतया हो जाना कोई कम आश्चर्य नहीं है। आचार्य महाश्रमण जागरूक चेतना के धनी एवं कठोर श्रम करने के आदी हैं। इसी कारण आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें 'महातपस्वी' कहा। आज हम सभी इस बात के लिए संकल्पित बनें कि उनकी दृष्टि की सजगता से अनुपालना करें। उनके द्वारा

दो कलाकारों की कृति का नाम है महाश्रमण

निर्देशित कार्यक्रमों में अपनी-अपनी शक्ति का नियोजन करें और तदनुरूप सक्रिय बनें।

इस अवसर पर मुनि उदितकुमार, मुनि विजयकुमार, मुनि प्रशनकुमार ने गीत व कविता के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। स्वागत भाषण सुरिन्दर मित्तल ने किया। आभार प्रकट रमेश मित्तल ने किया। संचालन प्रवीण जैन ने किया।

● तोशाम

साध्वी यशोमति ने आचार्य महाश्रमण की अभिवंदना करते हुए कहा आपका नाम मोहन, मुदित, महाश्रमण और आचार्य महाश्रमण बना जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बारह राशियों में सबसे बलवान राशि सिंह है। आप सिंह की तरह गूंजेंगे। आपको दो-दो युगप्रधान आचार्यों ने देखा, सूक्ष्मदृष्टि से परखा, संस्कारित किया, प्रशिक्षित किया और देखते-देखते आचार्य पद तक पहुंचा दिया। दो कुशल कलाकारों की कृति का आज हम वर्द्धापन करते हैं। आपकी निर्णायक क्षमता, मितभाषिता, दूरदर्शिता, गुरु के प्रति अनन्य समर्पण भाव अब संघ व विश्व को नया आलोक प्रदान करने वाला हो। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी रचनाश्री ने कहा आपके जीवन में अष्ट गणि सम्पदा समाहित है। आपका संयम अनुत्तर है। आप दूरदर्शी व समयज्ञ गंभीर, तत्वेता धर्माचार्य हैं। आपकी दृष्टि हमारी सुख की सृष्टि बने।

मुख्य अतिथि शिवरत्न गुप्ता एडवोकेट भिवानी ने कहा मैंने आचार्य महाश्रमण को निकटता से देखा है। उनमें सभी को संभालने की अनूठी कला है। आपका शासनकाल एवं आपकी यात्राएं विश्व को नया आलोक प्रदान करेगी, यही मंगलभावना है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन एडवोकेट भिवानी ने कहा आचार्य महाश्रमण को दो-दो आचार्यों के अनुभव प्राप्त हैं। आपका बाह्य व आभ्यांतर व्यक्तित्व सुंदरतम् है। आप सहस्त्र विशेषताओं के प्रकाशपुंज हैं। आप चिरायु हों, स्वस्थ रहें।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से हुआ। कन्या मंडल, महिला मंडल, विनय जैन, नरेन्द्र जैन, पवन जैन, मुस्कान जैन, कमलेश जैन ने अपनी भावनाएं रखी।

● बैंगलोर

मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण 11वें अधिशास्ता बनने पर 30 मई 2010 को अभिवंदना समारोह राजाजीनगर स्थित वीनस स्कूल में सम्पन्न हुआ। मुनि जिनेशकुमार ने कहा भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है। गुरु त्राता, भाग्यविधाता, जीवन दाता व संस्कृति की सुरक्षा करने वाले हैं। गुरु धरा से स्वर्ग और अमरत्व प्रदान करने हेतु वीतरागता की ओर बढ़ता है। आचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में रहकर इस मुकाम तक पहुंचे हैं। वे ज्ञान के हिमालय, चिंतन के चक्रवर्ती, विनय के सुमेरु व साधना से सम्पन्न हैं। उनकी अनुशासन की कला व प्रवचन शैली अद्भुत है। आचार्य तुलसी के लक्षण उनमें दिखाई देते हैं व महाप्रज्ञ की प्रज्ञा झलकती है। प्रकृति से सहज, सरल, मृदु, कोमल एवं महातपस्वी हैं। आचार्य महाश्रमण ने 12 वर्ष की उम्र में दीक्षा, 24वें वर्ष में साझपति, 36वें वर्ष में युवाचार्य और 48वें वर्ष की संपन्नता पर आचार्य पद पर पट्टासीन हुए। इस प्रकार 12 वर्ष के अंतराल में कोई न कोई पद उनके कंधों पर आया। यह भी सुंदर योग है कि जन्म, दीक्षा, आचार्य तीनों अपने शहर सरदारशहर में हुए। यह भी अनोखी बात है कि मुनि सुमेरमल लाडनूं के हाथों दीक्षा और मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने आचार्य महाश्रमण को पछोवड़ी ओढ़ाई।

विजयनगर विधायक एम. कृष्णप्पा ने कहा सभी धर्मों में अहिंसा की प्रधानता है। इस अवसर पर टी. बालकृष्ण, हीरालाल मालू, वीणा जैन, शांति सकलेचा, बंशीलाल पीतलिया, प्रेमचंद कोठारी, बहादुर सेठिया, जुगराज सोलंकी, विनोद कोठारी, निर्मल गादिया, बजरंग जैन, कान्ता लोढ़ा, अशोक पीतलिया, राकेश दुधोड़िया, उगमराज लोढ़ा, हेमलता, सोनल पीपाड़ा ने अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए शतायु होने की मंगल कामना की। स्वागत भाषण कन्हैयालाल चिप्पड़ ने, आभार व्यक्त माणकचंद संचेती व संचालन मुनि परमानंद ने किया। कार्यक्रम की सफलता में कमल हीरावत, दीपचंद नाहर, गौतम भंडारी, प्रेमराज संचेती, चन्द्रशेखर, सुरेश नाहर, दिनेश छाजेड़ का सराहनीय श्रम रहा।

● मानसा

मुनि कमलकुमार ने आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा आचार्य महाश्रमण सक्षम, शक्तिशाली एवं प्रतिभावान आचार्य हैं। उन्हें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का अपार स्नेह, वात्सल्य के साथ-साथ कार्य करने का कुशल मार्गदर्शन मिला है। आपकी गंभीरता-धीरता-विद्वता-विनयशीलता-संघनिष्ठा-श्रमनिष्ठा-कर्त्तव्यपरायणता-जागरूकता व प्रवचनकला विलक्षण है। साथ ही आप अन्य अनेक विशेषताओं के धनी हैं। इसलिए हम आपको एक प्रतिभावान अद्वितीय और अजात शत्रु भी कह सकते हैं। आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक पर हम अपने पूज्यवरों के लिए मंगल कामना करते हैं कि हमें युगों-युगों तक आपका कुशल मार्गदर्शन मिलता रहे, आप स्वस्थ एवं शतायु हों एवं आपकी यश महिमा चहुंओर फैले।

● कोठारिया

अध्यात्म जगत के उज्जवल नक्षत्र आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक पर मुनि जतनकुमार लाडनूं ने कहा आचार्य महाश्रमण समता, ऋजुता व मृदुता के धनी हैं। आपको दो-दो आचार्यों का वृदहस्थ एवं संरक्षण प्राप्त हुआ। आचार्य महाश्रमण वीतराग साधना के महापथिक, श्रमण संस्कृति और भारतीय संत परंपरा के उज्जवल नक्षत्र हैं। आप समता, विनम्रता, सहजता, सरलता, सहनशीलता, श्रमशीलता के दिव्य आलोक पुंज हैं। संत शिरोमणि महाश्रमण शुद्ध आचार, सम्यक् विचार, सरल व्यवहार के संरक्षक एवं संवर्द्धक रहें। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने कहा आचार्य महाश्रमण विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। आचार्य महाश्रमण में आचार्य तुलसी की अप्रमत्ता व पुरुषार्थ निष्ठा तथा आचार्य महाप्रज्ञ का समर्पण और अध्यात्मनिष्ठा एक साथ दिखाई देती है। मुख्य अतिथि तुलसी साधना शिखर राजसमंद के कार्याध्यक्ष भवरलाल वागरेचा थे। अध्यक्षता कोठारिया के ठाकुर गोविंद सिंह ने की। विशिष्ट अतिथि भूरालाल कच्छारा थे। आभार ज्ञापन दिनेश वागरेचा ने एवं स्वागत भूरालाल कच्छारा ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ को शत-शत नमन

आरा-बिहार, 16 मई। प्रसिद्ध दार्शनिक, अणुव्रत अनुशास्ता एवं अहिंसा यात्रा प्रवर्तक आचार्य महाप्रज्ञ के असामयिक निधन से हुई क्षति अपूर्णनीय है। उनके द्वारा संचालित लोकहितकारी कार्यक्रम अहिंसा प्रशिक्षण को सघनता प्रदान करना उनके प्रति सच्ची भक्ति होगी। ये विचार आचार्य धर्मेन्द्र ने 'स्मृति सभा' में प्रकट की। इस अवसर पर अणुव्रत समिति बिहार के सचिव विजयशंकर सिंह, आचार्यकुल के सचिव प्रो. के.के. गुप्ता, अध्यात्म विज्ञान सेवाश्रम संघ के अध्यक्ष अरविंद कुमार तिवारी 'सोरभ', सचिव शिव मोहन तिवारी, बैद्यनाथ सिंह, श्रीराम तिवारी, जगन्नाथ सिंह, स्व. सेनानी रमाशंकर ओझा, लोकशिक्षक राजनाथ तिवारी, संत बृज बिहारी शुक्ला, पं. श्रीकांत तिवारी, अणुव्रती जनार्दन मिश्र, डॉ. प्रो. ए. के. तिवारी, डॉ. योगेन्द्र मिश्र, प्रो. शिव बहादुर सिंह, सर्वोदयी विश्वम्भरनाथ, अहिंसा प्रशिक्षक रमेश उपाध्याय, ज्योतिन्द्र कुमार पास्क, सुरभि आदि ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए विश्व का महान् दार्शनिक एवं लोक-कल्याणकारी संत बतलाया। स्मृति सभा की अध्यक्षता पूर्वी भारत अणुव्रत शिक्षक संसद के संयोजक डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य एवं संचालन पं. जनार्दन मिश्र एवं संयोजन प्रफुल्ल कुमार ने किया।

विश्व शांति का सच्चा प्रणेता

लाडनूं, 19 मई। आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर दरगाह उमराव शहीद गाजी कमेटी लाडनूं के सभी सदस्यों की आयोजित बैठक में खिराजे अकीदत पेश किया गया। कमेटी के सदर जनाब सैयद अली अकबर रिजवी की सदारत में बैठक का आगाज हुआ। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आचार्य महाप्रज्ञ को विश्व शान्ति का सच्चा प्रणेता बताया। धर्मसंघ के अलावा हिंसा के कारणों की खोज व उसका निवारण किया। उनके द्वारा किया गया शोध विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। उनकी इसी सोच के कारण पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने प्रभावित होकर उनके सान्निध्य में अपने विचारों को पुस्तक के रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया, जो बेहद महत्वपूर्ण है। यह कृति पूरे विश्व के लिये मिसाल और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत चारित्रात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके बताये रास्ते पर चलने की कामना की। सभा में हाजी जमालुद्दीन शेख, मोहम्मद हुसैन मुगल, हाजी ईस्माइल, दिलावर शाह बाबा, मुराब बाबा, अब्दुल सलाम सिलावट के अलावा बहुत सारे लोग मौजूद थे।

● अंजुमन पब्लिक स्कूल लाडनूं के प्रांगण में 19 मई 2010 को राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन पर एक शोक सभा आयोजित हुई। अध्यक्षता अंजुमन के सदर हाजी अनवर अली सौरगर ने की। ''अणुव्रत सेवी'' सैयद अली अकबर ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द एवं मानवीय एकता के लिये उनके द्वारा किये गये प्रयासों का उल्लेख किया। मास्टर जलालुद्दीन ने उन्हें मानव मात्र के कल्याण का मार्गदर्शक बताया। हाजी पन्ने मोहम्मद ने अहिंसा के कारणों की खोज करने वाला वैज्ञानिक बताया। अंत में दो मिनट का मौन रखा गया। सभी ने आचार्यश्री के महाप्रयाण को अपूरणीय क्षति बताया। कार्यक्रम का संयोजन मास्टर जलालुद्दीन ने किया।

स्मृति सभा में उमड़ा जन-सैलाब

भिवानी, 14 मई। विश्वशांति के अग्रदूत, अहिंसा अवार्ड से सम्मानित, धर्मचक्रवर्ती संत आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर प्रेक्षाविहार भिवानी में आयोजित प्रदेशस्तरीय स्मृति सभा में अनेक धर्मगुरुओं, राजनेताओं के साथ-साथ श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। प्रेक्षाविहार में दिवंगत महान संत ने चार वर्ष पूर्व अपना सफल चातुर्मास सम्पन्न किया और छोटी काशी को अपने आध्यात्मिक ज्ञान से सराबोर किया। स्मृति सभा का संयोजन अणुव्रत समिति के मंत्री रमेश बंसल ने किया।

धर्मगुरुओं में संत निरंकारी मंडल के प्रमुख बलदेव राज नागपाल ने आचार्यश्री को शांति और सहअस्तित्व की मिशाल बताया। गुरुद्वारा सिंह सभा के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी प्रेमसिंह ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ जैसी महान आत्मा कभी- कभार जन्म लेती हैं और अपने पुण्य कर्मों द्वारा मानवता का कल्याण करती है। प्रणामी सम्प्रदाय के मुकुल शास्त्री ने श्रद्धासुमन अर्पित करने वालों में घीसाराम जैन, सुरेन्द्र जैन एडवोकेट, लक्ष्मीसागर जैन, हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जैन, पूर्व विधायक शशिरंजन परमार, नगर परिषद अध्यक्षा सेवादेवी ढिल्लो, कालीचरण केसान, शिवरतन गुप्ता, राज्यकवि उदयभानु हंस, डॉ. रमाकांत शर्मा, अशोक जैन, राकेश कटारिया, मुरलीधर लखोटिया, डॉ. जे.बी. गुप्ता, प्रदीप बंसल, देवराज तोशामिया, बृजलाल सर्राफ, ओमप्रकाश बहलवाला, सत्यनारायण मित्तल, वेदपाल तंवर, बार एसोसिएशन के प्रधान पवन गर्ग एडवोकेट, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के प्रधान हंसराज गुलाटी, पत्रकार धर्मेन्द्र कंवारी, अतुल कुमार, अशोक भारद्वाज, डॉ. मदन मानव, विनोद चावला, विजय पंचगावा, रामदेव तायल, महेन्द्र सिंगला, गौरव जैन, विकास जैन, संदीप खरकिया, श्यामसुंदर गौतम, दिलबाग सिंह, जगत नारायण, सज्जन अग्रवाल एडवोकेट, विद्यासागर गिरधर, धर्मेश शाह, सुरेन्द्र सांगवान, नीलम जैन, भानूप्रकाश शर्मा, सुरेश अरोड़ा, के.के. वर्मा, डॉ. सुभाष अग्रवाल, पवन मित्तल, अशोक कथूरिया तथा डॉ. मदनलाल गोयल शामिल थे।

कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चोटाला, महामंडलेश्वर करुणागिरि, राधास्वामी पंथ के संत कंवरसेन महाराज, भारत विकास परिषद, लायंस क्लब, नटराज कलामंच, वनवासी कल्याण आश्रम, आर्य समाज, जनकल्याण सेवा समिति, अग्रवाल सभा, अजय सिंह चोटाला इत्यादि की प्रमुख उपस्थित थी। स्मृतिसभा में दो मिनट मौन रखकर महान आत्मा को याद किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री की झलकियों को समेटे हुए एक फोलडर का भी विमोचन किया गया।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

वाराणसी, 9 मई। आचार्य महाप्रज्ञ की बहुआयामी सेवाओं से देशवासी भलीभांति परिचित हैं। 9 मई 2010 को सरदारशहर प्रवास के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। समाचार मिलते ही विद्या की राजधानी वाराणसी में श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। जयजगत सेवा संस्थान के अध्यक्ष आचार्य शरदकुमार साधक एवं संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रमण संकायाध्यक्ष डॉ. फूलचंद प्रेमी ने उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की उत्कृष्टता का सम्मान करने पर बल दिया। तदनुसार सभा में पारित प्रस्ताव साप्ताहिक चर्चा-अर्चा का विषय बना। सर्वोदय तीर्थ, सर्वोदय समाज, आचार्यकुल, जय जगत सेवा संस्थान, मानवाधिकार संरक्षण एवं मादक द्रव्य ब्यूरो, सुरभि शोध संस्थान, भारत विकास संगम, ब्रह्मवर्चस् अंतर्राष्ट्रीय योग संस्थान के प्रतिनिधियों सहित अनेक रचनात्मक संस्थाओं ने भी युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ की चर्चा-अर्चा के निमित्त आयोजित गोष्ठियों में समाज के आबाल वृद्धों की सभा में स्वीकृत प्रस्ताव का अनुमोदन कर सज्जनों के संगठक तथा सज्जनता के संवर्धक आचार्य की उत्कृष्ट सेवाओं का सम्मान करके युगाकांक्षा पूरी करने के स्वर को बुलन्दी दी, तब जयजगत संस्थान ने सारे समाचारों की परिचायक विज्ञप्ति तैयार कर विविध पतों पर भेजी। श्रद्धांजलि स्वरूप साहित्यकारों, शिक्षाधिकारियों, राजनेताओं, रचनात्मक कार्यकर्ताओं द्वारा व्यक्त विचारों, प्रमुख समाचार पत्र-पत्रिकाओं की भावना को सामने लाने वाली सामग्री एकत्र करने की योजना पर बल दिया गया।

सपना सा बन गये आचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का 9 मई 2010 को हुए महाप्रयाण का समाचार सुना, हृदय पर वज्रपात-सा हुआ। मन को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि क्या यह सब कुछ सच है? लेकिन कुछ ही मिनटों में टेलीफोन की घंटियां बजने लगी, सबकुछ सुनसान सा हो गया। जो आराध्य लाखों-करोड़ों लोगों की आस्था के केन्द्र थे, तेरापंथ धर्मसंघ के सिरमोर व दसम् अधिशास्ता थे, देखते-देखते मौन हो गये। सचमुच महापुरुष ऐसे ही इच्छामृत्यु का वरण करते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ जैसे संत विरले ही होते हैं एवं कभी-कभी ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं। मानव जाति उनके अवदानों व करुणा दृष्टि को सदैव याद करती रहेगी। उनके वियोग का सभी धर्मगुरुओं जैन-जैनेत्तर लोगों को गम है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि आचार्यश्री अचानक इस प्रकार हम सबको छोड़कर चले जायेंगे, लेकिन ऐसा हो गया है तथा आचार्य महाप्रज्ञ का इस प्रकार चले जाना सपना-सा बन गया है।

हम सब उनके उपदेशों को अपने जीवन में उतारें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

सुरेन्द्र जैन 'एडवोकेट' (भिवानी)

कोयम्बटूर में शोक सभा

कोयम्टूर, 16 मई। अणुव्रत समिति कोयम्बटूर के तत्वावधान में सभा भवन में विश्व की महान आत्मा आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन पर एक शोक सभा आयोजित की गयी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर वेदागिरि गणेशन ने एकत्रित लोगों के समक्ष मानवीय मूल्यों पर आचार्य महाप्रज्ञ के महत्वपूर्ण योगदान और विशेषतः उनके अहिंसा के संदेश के संदर्भ में विचार रखे। अविनाशी लिंगम यूनिवर्सिटी, कोयम्बटूर के पूर्व चांसलर प्रोफेसर कुलंडाइवेल ने शांति और साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के क्षेत्र में किए गये कार्यों के लिए आचार्यश्री के महान कार्यों की याद दिलाई।

गांधी ग्राम रूरल यूनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर प्रो. मार्कंडन ने भारतीय और विश्व समुदाय में मानवीयता की स्थापना के लिए आचार्यश्री के कार्यों का जिक्र किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के सलाहकार सम्पत कुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ के उपदेशों पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। समिति की संयुक्त सचिव मधुवन्ती ने आचार्यश्री द्वारा प्रणीत जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान इत्यादि पर अपने विचार रखे। समिति के मंत्री नरेन्द्र रांका ने बताया कि आचार्यश्री ने अपने देवलोक गमन से एक घंटा पूर्व अणुव्रत का संदेश आम लोगों तक पहुंचाने की इच्छा जाहिर की। उनकी इस चिंतना से पता चलता है कि वे मानवीयता के प्रति कितना प्रेम और सरोकार रखते थे। इसी अवसर पर पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार के हरिचरण चतुर्वेदी ने कहा कि आचार्यश्री ने अपना संपूर्ण जीवन लोगों के कल्याण और भलाई के लिए लगा दिया।

पब्लिक प्रोवडेंट फंड कोयम्बटूर के जयशंकर बाबू एवं अणुव्रत से जुड़ी ज्योत्सना ने भी आचार्यश्री के मानवीय मूल्यों और नैतिक विकास पर किए गए अवदानों पर अपने विचार रखे।

बहुमूल्य हीरों का खजाना

जयपुर, 8 जून। आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम मासिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम 'ॐ महाप्रज्ञ गुरवे नमः' मंत्र जाप तथा आचाय्र महाप्रज्ञ की स्मृति में आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित गीत 'पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान' के संगान से प्रारंभ हुआ। मुनि धर्मचंद 'पीयूष' ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन विद्वता, साधना, करुणा, साहित्य और कार्यों से भारत का जन-जन सुपरिचित है। आचार्य महाप्रज्ञ जवेरी की दुकान थे, बहुमूल्य हीरों का खजाना थे, उनमें से एक भी हीरा ले लोगे तो निहाल हो जाओगे। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में ''संयम वह हीरा है, जो बहुत सारी समस्याओं से निजात दिला देगा। बहुत सारे झगड़े, झंझट, कलह-कदाग्रह असंयम के कारण ही होते हैं। संयम की चेतना जागृत हो जाने पर सब स्वतः समाप्त हो जाते हैं। आज के स्मृति कार्यक्रम से मन का संयम, वाणी का संयम और इन्द्रियों का संयम करने का संकल्प लेंगे तो गुरु को श्रद्धा सुमन समर्पण के साथ हमारा जीवन शांत, शालीन और परम पवित्र बन जाएगा।

मुनि मुनिव्रत ने ''शांति का संदेश ले सुरधाम को गए'' भावपूर्ण गीत का संगान किया। अशोक मुनि ने प्रेरणादायक विचार रखे। संभव मुनि और रश्मि मुनि ने अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य महानुभावों ने भी आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावांजलि देते हुए दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

विद्या नगरी वाराणसी की स्मृति सभा का ध्यानाकर्षक प्रस्ताव

सर्वोदय तीर्थ, सर्वोदय समाज, आचार्यकुल, जयजगत सेवा संस्थान, मानवाधिकार संरक्षण एवं मादक द्रव्य अन्वेषण ब्यूरो, सुरभि शोध सेवा संस्थान, भारत विकास संगम, ब्रह्मवर्चस अन्तर्राष्ट्रीय योग संस्थान के प्रतिनिधियों सहित तेरापंथ के आबाल वृद्धों ने सज्जनों के संगठन तथा सज्जनता संवर्धन के लिए समर्पित युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ की साप्ताहिक चर्चा-अर्चा के निमित्त दैनिक पत्रों में प्रकाशित अंश

दैनिक जागरण

वाराणसी, 11 मई 2010

आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धांजलि

वाराणसी : जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज की ओर से सोमवार को शिवपुरवा (योग नगर) स्थित समाज भवन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ को श्रद्धांजलि दी गई। शरद कुमार साधक, फूलचंद बैरागी, भीखमचंद्र चोरड़िया, राजेन्द्र कुमार शेखानी, वीरेंद्र कुमार मालू आदि ने विचार व्यक्त किए। श्री महाप्रज्ञ का रविवार को राजस्थान के सरदार नगर में निधन हो गया था।

अमर उजाला

वाराणसी, मंगलवार, 11 मई, 2010

तेरा पंथ समाज के आचार्य को नमन

वाराणसी। श्री जैन श्वेतांबर तेरा पंथ समाज के 10वें आचार्य श्री महायज्ञ के निधन पर समाज के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और नगर के गणमान्य लोगों ने शोक जताया और श्रद्धांजलि अर्पित की।

योग नगर, शिवपुरवा स्थित तेरा पंथ सभा भवन में सोमवार को एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि शरद कुमार साधक, विशिष्ट अतिथि फूल चंद बैरागी रहे। अध्यक्षता शेषपाल गर्ग ने की। इस दौरान राज कुमार सेखानी, भीखम चंद चौररिया आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान

वाराणसी, शुक्रवार, 14 मई, 2010,

'आचार्य श्री महाप्रज्ञ को मिले भारतरत्न'

वाराणसी। तेरापंथ के प्रमुख प्रतिनिधि आचार्यश्री महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद करते हुए श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज ने गुरुवार को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। शिवपुरवा क्षेत्र के योग नगर स्थित समाज भवन में हुए इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जय जगत सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद कुमार साधक व संस्कृति विवि में श्रमण संकाय विभागाध्यक्ष डॉ. फूलचंद प्रेमी थे। वक्ताओं ने सरकार से महाप्रज्ञ को भारतरत्न देने की मांग करते हुए कहा कि इस बारे में राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री को पत्र भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि आचार्य के महाप्रयाण से भारत की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके अभियान का ही असर था कि महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने राष्ट्रपति रहते हुए महाप्रज्ञ के साथ मिलकर संयुक्त पुस्तक 'द फॅमिली एंड द नेशन' लिखी। कार्यक्रम में भीखमचंद चौरड़िया, शेषपाल गर्ग, शांतिलाल जैन, वीरेंद्र कुमार मालू, संपत देवी सुराना, सुरेंद्र वैद्य, डॉ. सुमन जैन, पुखराज जैन, रेखा सेठिया, राजेंद्र सोनी, विनय सेठिया आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

आज

वाराणसी, शनिवार [illegible] मई, 2010

जैन समाज ने की आचार्य श्री महाप्रज्ञ को भारतरत्न देने की मांग

शांतिदूत, महात्मा धर्मचक्रवर्ती आचार्य महाप्रज्ञ, जि[illegible] ने जीवन पर्यन्त अहिंसा यात्रा, सर्वांगीण स्वस्थ, सामाजिक कुरीति निवारण, योग,साम्प्रदायिक सद्भाव, आध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय के साथ भारतीय संस्कृति की श्रीवृद्धि करने का भगीरथ प्रयास किया। उनके महाप्रयाण से भारत की अपूरणीय क्षति हुई है। उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जाय। यह प्रस्ताव बुधवार को शिवपुरवा स्थित तेरापंथ सभा भवन में आयोजित जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज की सभा में सर्व सम्मति से पारित किया गया। यह प्रस्ताव भारत के महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री को भेजने का निर्णय भी लिया गया। सभा की अध्यक्षता करते हुए जय जगत सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद कुमार साधक ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जैन साहित्य भण्डार को समृद्ध करने में भी महती भूमिका निभायी है। उनका दर्शन मानव कल्याण के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है, ऐसे महामानव को भारत रत्न से सम्मानित कर उनके चिंतन दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत है।

वाराणसी मंगलवार, 11 मई 2010 वाराणसी

हिन्दुस्तान 7

जैन समाज के प्रमुख श्रीमहाप्रज्ञ को दी गयी श्रद्धांजलि

वाराणसी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के तत्वावधान में सोमवार रात शिवपुरवा स्थित बैंक कालोनी में तेरापंथ समाज भवन में दिवंगत जैन समाज के सिरमौर आचार्य श्री महाप्रज्ञ की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

सभा में वक्ताओं ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के बताए हुए मार्ग पर चलने पर बल दिया। आचार्य के साथ लंबे समय तक रहने वाले शरद कुमार साधक ने अहिंसा पर विचार व्यक्त किए। कहा कि आचार्य ने पूरे भारत में पैदल अहिंसा यात्रा पूरी की थी। फूलचंद प्रेमी ने उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का नौ मई को राजस्थान के सरदार शहर में निधन हो गया था।

www.terapanthinfo.com

विद्या नगरी वाराणसी से उठे स्वर

सर्वोदय तीर्थ, सर्वोदय समाज, आचार्यकुल, जयजगत सेवा संस्थान, मानवाधिकार संरक्षण एवं मादक द्रव्य अन्वेषण ब्यूरो, सुरभि शोध सेवा संस्थान, भारत विकास संगम, ब्रह्मवर्चस अन्तर्राष्ट्रीय योग संस्थान के प्रतिनिधियों यह आवाज उठायी कि मानवीय एकता के संवर्धन में समर्पित युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ को भारत रत्न सम्मान मिलना चाहिए।

यूनाइटेड भारत

आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन मानव कल्याण का था

न्यायार्थी

आचार्य श्री महाप्रज्ञ को भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग

सेवा में,

श्रीमान सम्पादक जी

.....

वाराणसी।

दिनांक : 13.05.2010

सन्मार्ग

वाराणसी, १२ मई २०१०

आचार्य श्री महाप्रज्ञ को दी गयी 'श्रद्धांजलि'

स्वतंत्र चेतना

शुक्रवार, 14 मई 2010

आचार्य महाप्रज्ञ को भारत रत्न से सम्मानित किया जाये

गांडीव

जैन समाज ने की आचार्य श्री महाप्रज्ञ को भारतरत्न देने की मांग

अमर उजाला कॉम्पैक्ट

वाराणसी, शुक्रवार, 14 मई, 2010

आचार्य महाप्रज्ञ को भारत रत्न देने की मांग

वाराणसी। जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के आचार्य महाप्रज्ञ के निधन पर सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान आचार्य को भारतरत्न देने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। यह प्रस्ताव भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजने का निर्णय लिया गया। सभा की अध्यक्षता जय जगत सेवा संस्थान के शरद कुमार साधक ने की।

तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सम्पत देवी सुराना, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र वैद्य, समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री दिनेश भंसाली, डॉ. सुमन जैन, श्री राजेन्द्र सेखानी, श्री विनय सेठिया, महिला मण्डल की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती पुखराज जैन, मंत्री श्रीमती रेखा सेठिया सहित अनेक लोगों ने भारत सरकार से आचार्य महाप्रज्ञ को ''भारत रत्न'' से विभूषित करने का अनुरोध किया। सभा में बड़ी संख्या में विशिष्टजन उपस्थित थे।

www.terapanthinfo.com

महिलाओं को आजीविका प्रशिक्षण

शेरपुर, 18 मई। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर द्वारा आयोजित 38वां ग्राम सेल मेला एवं प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए शेरपुर थाना के प्रमुख दर्शन सिंह ने कहा महिलाओं को आजीविका प्रशिक्षण अत्यंत जरूरी है, ताकि इनमें आत्मविश्वास का विकास हो सके। लोगों को गांव स्तर पर महिलाओं द्वारा निर्मित सामग्री को खरीदकर प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

अध्यापक संघ पंजाब के महासचिव हरबंश सिंह शेरपुर ने महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा हाथ का हुनर सीखकर लघु उद्योग प्रारंभ कर महिलाएं स्वयं आत्म-निर्भर हो सकती हैं। प्रदर्शनी मेले में खेड़ी खुर्द, भगवान पुरा, कालाबुला, खेड़ीकलां, गोविन्दपुरा एवं शेरपुर ग्रुप के लोग हिस्सा लेकर हजारों रुपये का खिलौना लेडी बैग, सजावटी सामान, अचार, मुरब्बा, मोमबत्ती, पापड़ आदि बेचा गया।

गोविन्दपुरा ग्राम पंचायत की ओर से संजय भाई (मण्डी), नालंदा-बिहार, दीपिका रानी सुखविन्द्र कौर एवं विभा कुमारी का सम्मान किया गया। आभार व्यक्त अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के प्रभारी ने किया।

स्वस्थ राष्ट्र में अणुव्रत की भूमिका

नई दिल्ली, 1 जून। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश गणपत सिंघवी के निवास स्थान पर आचार्य महाश्रमण के शिष्य मुनि सुधाकर के सान्निध्य में ''स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका'' विषय पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें न्यायाधीश गणपत सिंघवी, जिला एवं सत्रीय न्यायाधीश गौतम चोरड़िया, अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, प्रकाश भंसाली, मंजू सिंघवी सहित कई अधिकारियों ने भाग लिया। मुनि सुधाकर ने कहा अनुशासन-हीनता समृद्धि से उपजा संकट आज साफ दिखाई दे रहा है। अध्यात्म और सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़कर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को खो देता है। स्वस्थ राष्ट्र के लिए भौतिक व आध्यात्मिक दोनों शक्तियों का समन्वय जरूरी है। मुनिश्री ने अणुव्रत आंदोलन की विस्तार से चर्चा की।

न्यायाधीश गणपत सिंघवी ने कहा अणुव्रत स्वस्थ व्यक्ति के निर्माण का संदेश देता है। जिससे स्वतः स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो जाता है। अणुव्रत दर्शन में स्वस्थ राष्ट्र निर्माण के लिए सुंदर चित्रण हुआ है। दिल्ली में मुनि राकेश कुमार के सान्निध्य में चल रही गतिविधियां मानव जाति के लिए कल्याणकारी होगा।

न्यायाधीश गौतम चोरड़िया ने कहा अणुव्रत आंदोलन एक ऐसा उपक्रम है जो स्वस्थ एवं उन्नत समाज का आधार बन सकता है। बाबूलाल गोलछा एवं प्रकाश भंसाली ने सिंघवी को अणुव्रत का साहित्य भेंट किया।

● केन्द्रीय जन संसाधन व संसदीय कार्य मंत्री पवन बंसल के निवास पर मुनि सुधाकर के सान्निध्य में ''समस्या भ्रष्टाचार - समाधान अणुव्रत'' विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें केन्द्रीय मंत्री पवन बंसल, आयकर विभाग के अधिकारी जगदीप गोयल, भारतीय पुलिस अधिकारी मनीष अग्रवाल, प्रेक्षा प्रशिक्षक रमेश कांडपाल, मीडिया प्रभारी शीतल बरड़िया, दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली ने भाग लिया।

विशाल प्रेक्षाध्यान शिविर

नेरूल (नई मुंबई)। अणुव्रत समिति मुंबई के तत्वावधान में आचार्य तुलसी उद्यान में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर समण सिद्धप्रज्ञ के सान्निध्य में विशेष सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। प्रेक्षाध्यान पद्धति से जन-जन को लाभान्वित करने के उद्देश्य से यह शिविर लगाया गया।

अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष अर्जुन बाफना के नेतृत्व में एवं मंत्री विनोद कोठारी की परिकल्पना से शुरू हुए शिविर में 36000 से अधिक पर्चे, 800 से अधिक पोस्टर, 25 से अधिक 8 बाई 12 फीट के होर्डिंग, टी.वी. चैनल, समाचार पत्रों के माध्यम से शहरवासियों को जागरूक किया गया।

शिविर के प्रथम दिन 35000 वर्ग फीट क्षेत्रफल में सुसज्जित कार्यक्रम स्थल मं प्रातः 5 बजे से ही लोगों के समूह आकर अपनी जगह आरक्षित करने लगे थे। शिविर का उद्घाटन स्थानीय नगरसेवक सुरेश शेट्टी द्वारा महामंत्र उच्चारण से हुआ। समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण देकर लोगों को लाभान्वित किया। प्रारंभ में समिति के मंत्री विनोद कोठारी ने संभागियों को प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी। प्रथम दिन 117 लोगों ने लाभ लिया।

प्रशिक्षक अर्जुन सिंघवी के संयोजकीय में गतिशील शिविर के दूसरे दिन 1157 लोगों की उपस्थिति के बीच समण सिद्धप्रज्ञ ने आसन-प्राणायाम, अनुप्रेक्षा, मुद्रा विज्ञान आदि का प्रशिक्षण दिया।

शिविर के अंतिम दिन सबसे अधिक यानी 1350 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। शिविर में सम्मिलित प्रत्येक शिविरार्थियों ने इसे अधिक दिनों तक बढ़ाने की मांग की, जिसे पदाधिकारियों ने भविष्य में इसे वापस आयोजित करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम अणुव्रत गीत व प्रेक्षाध्यान गीत के संगान के साथ हुआ और अणुव्रत आंदोलन के बारे में भी लोगों को जानकारी दी गयी।

शिविर काल में सहायक प्रशिक्षक के रूप में मिश्रीमल चौधरी, पारस दूगड़ व शांतिलाल कोठारी ने अपनी सेवाएं दी। प्रेक्षा प्रशिक्षक एन.सी. जैन व मालती बेन ने अपने सहयोगियों के साथ स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। कार्यक्रम की सफलता में चिमन सिंघवी, बाबूलाल बाफना, महेश बाफना, पारसमल लोढ़ा, प्रवीण चंडालिया, प्रेमलता सिसोदिया, सुरेश ओस्तवाल, सुधांशु जैन, मुकेश बाबेल, अरविंद चोरड़िया, चतरलाल मेहता, रमेश धोका, रोशनलाल मेहता एवं स्थानीय संस्थाओं का सराहनीय श्रम रहा।

कार्यक्रम में केबिनेट मंत्री गणेश नाईक, उप महापौर शशिकांत बिराजदार, नेत्रा शिर्के व अनेक विधायक, भंवरलाल कर्णावट, डालचंद कोठारी, ख्यालीलाल तातेड़, राजकुमार चपलोत, प्रकाश देवी तातेड़, कुमुद कच्छारा, महावीर कोठारी नगर सेवकों की प्रमुख उपस्थिति रही। उक्त त्रिदिवसीय शिविर का संचालन विनोद कोठारी ने किया।

जीवन विज्ञान एवं योगासन शिविर

लाडनूं, 27 मई। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा के मार्गदर्शन एवं निदेशक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में एम.ए. जीवन विज्ञान द्वितीय वर्ष के दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों द्वारा लाडनूं के विभिन्न स्थानों पर लगाए गए दस दिवसीय जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योगासन के शिविर 17 मई से 26 मई 2010 तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। ये शिविर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय एवं प्रसार निदेशालय, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुए।

शिविरों के समन्वयक डॉ. अशोक भास्कर ने जानकारी देते हुए बताया कि रजनीश आश्रम, सुखाश्रम, कनकश्याम विद्यामंदिर स्कूल, करंटवाले बालाजी मंदिर, 8वीं पट्टी डॉ. जयसिंह पगारिया, तुलसी अध्यात्म नीडम्, ऋषभद्वार पहली पट्टी, सेवकों का चौक, सत्संग भवन भोजक कॉलोनी, संस्कार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल गोदरा भवन में आयोजित किए गए।

शिविरों का जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, डॉ. जे.पी. एन. मिश्रा, डॉ. प्रतिभा मिश्रा ने निरीक्षण किया तथा डॉ. अशोक भास्कर एवं श्रीमती निर्मला भास्कर ने शिविरों की नियमित देखरेख की। शिविर के अंतिम दिन डॉ. संजीव गुप्ता ने शिविर अवलोकन किया। प्रत्येक शिविर में औसत उपस्थिति 18 से 56 रही तथा विश्वविद्यालय पर प्रत्येक केन्द्र की औसत उपस्थिति (समेकित) 34 की रही। कुल 340 व्यक्ति लाभान्वित हुए। शिविरों में ''कैसे रहें स्वस्थ' को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण हेतु एम.ए. जीवन विज्ञान उत्तरार्द्ध के तीन-तीन विद्यार्थियों को दसों केन्द्र पर नियोजित किया गया था।

जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर

लुधियाना, 3 जून। जीवन विज्ञान जीने की कला है। वर्तमान शिक्षा जगत् की चालू शिक्षा प्रणालियों की कमियों को पूरा करने वाली आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत नवीन शिक्षा पद्धति का नाम है जीवन विज्ञान। इसके अंतर्गत स्वस्थ व्यक्ति का निर्माण होता है। स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। व्यक्तित्व विकास के लिए शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक शिक्षा की जरूरत है। ये विचार साध्वी अमितप्रभा ने साध्वी जतनकुमारी 'कनिष्ठा' के सान्निध्य में अग्रनगर (लुधियाना) में आयोजित जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। साध्वी ध्रुवरेखा ने बौद्धिक विकास के सरल उपायों को बताते हुए प्रशिक्षण दिया। साध्वी नयश्री ने 'कैसे बनें महान' विषय को प्रतिपादित करते हुए बच्चों को महान बनने की प्रेरणा दी। साध्वी कंचनबाला ने 'निर्माण करें उज्जवल भविष्य का' विषय को विवेचित करते हुए उज्जवल भविष्य के गुर बताये।

शिविर में जीवन जीने की कला को समझाते हुए बच्चों को सर्वांगीण विकास का प्रशिक्षण दिया। बच्चों के शारीरिक बल, बौद्धिक बल के साथ-साथ भावनात्मक बल भी बढ़े इसका प्रशिक्षण दिया गया। शिविर की सफलता में महेन्द्रपाल गुप्ता एवं मंजू सिंघी का सराहनीय श्रम रहा। साध्वीश्री की प्रेरणा से बच्चों ने हर रविवार प्रशिक्षण प्राप्त करने का संकल्प लिया।

मोटापा एवं मधुमेह जांच शिविर

उदयपुर, 30 मई। अणुव्रत समिति उदयपुर, महावीर जयंती समारोह समिति अशोक नगर एवं विज्ञान समिति उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क मधुमेह, मोटापा, थाईराइड एवं हारमोन्स संबंधी जांच शिविर का आयोजन हुआ। इसमें वरिष्ठजनों ने जांच के प्रति विशेष उत्साह दिखाया और 163 व्यक्तियों ने शिविर का लाभ लिया।

समिति के प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि शिविर में मोटापे संबंधी 52 व्यक्तियों की जांच की गयी तथा 117 व्यक्तियों ने मधुमेह की जांच करायी। जांच उपरांत परामर्श के लिए महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर के एण्डोक्राइनोजी एवं डायबिटीज विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. डी. सी. शर्मा एवं सहयोगी डॉ. अर्पिता नागोरी ने अपनी सेवाएं दी।

राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय सिंधी बाजार के प्रभारी डॉ. शोभालाल ओदिच्य ने अपने सहायक डॉ. संजय महोश्वरी के साथ जांच की एवं परामर्श दिया। मोटापा जांच हिमालय ड्रग्स कम्पनी के अमित त्रिपाठी के साथ डॉ. ए. सुदर्शन, डॉ. शान्तनु देव, डॉ. अनिल साहू, डॉ. संजय सोनी ने 52 व्यक्तियों की जांच कर उन्हें रिपोर्ट सौंपी।

शिविर में मुख्य अतिथि राज्य विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, वि.अ. कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. वी.बी. सिंह थे। शिविर की अध्यक्षता अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने की।

अणुव्रत समिति द्वारा सेवा कार्य

जयपुर, 26 मई। अणुव्रत समिति जयपुर के सौजन्य से दो विकलांग व्यक्तियों को 'जयपुर कृत्रिम अंग/पैर' लगवाए गए। समिति द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की शृंखला में ये ''कृत्रिम पैर'' महावीर विकलांग सहायता समिति अणुव्रत समिति जयपुर की अध्यक्ष आशा नीलू टांक, मंत्री पुष्पा बांठिया तथा प्रचार-प्रसार मंत्री कल्पना जैन ने जाकर सहायतार्थ भेंट किए।

इसी के साथ केन्द्रीय अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में चलाए जा रहे पोस्टर अभियान के अंतर्गत भी जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा प्राकृत भारती पुस्तकालय, एस.टी. इन्फोसिस प्राइवेट लिमिटेड, महावीर विकलांग समिति इत्यादि स्थानों पर बिजली बचाओ, पानी बचाओ, पृथ्वी बचाओ तथा पर्यावरण बचाओ के स्टीकर लगवाए जा रहे हैं।

www.terapanthinfo.com

श्रद्धा के शहर को नमन

अणुव्रत की जन्मभूमि, तेरापंथ की राजधानी आचार्य महाप्रज्ञ का संयम स्थल विरल व्यक्तित्व के धनी बालक मोहन (आचार्य महाश्रमण) की जन्मभूमि, राष्ट्र संत अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का समाधि स्थल, अनेक विशेषताओं को लिए इस श्रद्धा के शहर सरदारशहर को सादर नमन।

मैं साक्षी हूं अहिंसा के अग्रदूत, अणुव्रत अनुशास्ता, राष्ट्र संत, तेरापंथ के दसवें पट्टधर महामहिम आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण की अन्तिम यात्रा, जहां लाखों आंखों ने, लाखों हाथों ने जय-जयकार के घोषों के साथ अपने गुरुर्व्य को अन्तिम विदा दी, श्रद्धांजलि अर्पित की।

मैं साक्षी हूं तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें पट्टधर आचार्य महाश्रमण के पट्टोत्सव गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण के भव्य पांडाल में सुसज्जित मंच पर तेरापंथ की परम्परा के अनुरूप अपने धरोहर से मिली चादर आचार्य महाश्रमण के कंधों पर सोभायमान हो रही थी, हजारों हाथों ने अपने धर्मगुरु का अभिवादन कर धन्यता प्रदर्शित की। 23 मई 2010 की मंगल प्रभात में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाप्रज्ञ के उत्तराधिकार की चादर से सुशोभित हुए। यह चादर बहुत मूल्यवान है। इसमें हमारे आचार्यों का श्रम, संयम, तपस्या एवं साधना लगी है। श्रावक-श्राविकाओं का समर्पण व श्रद्धा से ओतप्रोत है। यह चादर जिस ताने-बाने से बुनी है जिसमें अनुशासन, मर्यादा, एकता, त्याग, तपस्या, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के स्वर मुंजित गुंजित होते हैं।

तेरापंथ का आचार्य एक सम्प्रदाय का आचार्य तो होता ही है, अपितु वह एक राष्ट्र संत भी है। क्योंकि अणुव्रत अनुशासता आचार्य तुलसी व अहिंसा अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने देश को मौलिक चिंतन दिया है। देश की हर समस्या के लिए समाधान व चिंतन-मनन किया है। हजारों किलोमीटर की यात्रा कर अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से देश को अहिंसक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना हेतु जागृत किया।

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ के भाग्य विधाता हैं अणुव्रत अनुशास्ता हैं। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रणेता हैं। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ का वरद् हस्त एवं साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त है। पूर्व आचार्यों की गण सम्पदा है। शास्त्रों का गहन अध्ययन आपने किया है। तेरापंथ का प्रबुद्ध एवं समर्पित, श्रद्धावान समाज आपकी सेवा में है।

पट्टोत्सव की पावन वेला में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण को अणुव्रत संगठन की ओर से शत-शत अभिवंदना। आप यशस्वी बनें। आपके नेतृत्व में अणुव्रत आंदोलन गति-प्रगति करे। अणुव्रती कार्यकर्ताओं को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे। अणुव्रत जन-जन के लिए कल्याणकारी बने।

तेरापंथ की आचार्य परम्परा को मैं नमन करता हूं, आचार्य महाश्रमण के शुभ भविष्य की मंगलकामना करता हूं।

● निर्मल एम. रांका

www.terapanthinfo.com